शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

गुरु वंदन...

आपके कुशल नेतृत्व में खरतरगच्छ संघ प्रगति करता रहे...

आपकी कृपादृष्टि गच्छ एवं श्रीसंघ पर सदा बनी रहे...

वंदनकर्त्ता

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ

सांचौर

मेरी अभिन्न अनुभूतियाँ

प्रमोद चरणरज साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्री

29 मई 2015 का सूर्योदय मेरे जीवन का ऐतिहासिक सूर्योदय था। बचपन में जिनकी अंगुली थामकर मैंने घर के आंगन में चलना सीखा था, 10 साल की उम्र में जिनका संबल पाकर मैंने संयम के आंगन में कदम रखा था एवं आज तक जिनके स्नेह की ऊष्मा ने मेरे हृदय को सदैव भीगा-भीगा रखा है, आज वे मेरे अग्रज खरतरगच्छ संघ के सर्वोच्च पद पर अभिषिक्त हो रहे हैं। इससे बड़ी आनंददायक घटना मेरे जीवन में हो भी नहीं सकती।

आज मेरा मन अतीत के गलियारों में खोना चाहता है। जब से मैंने होश संभाला है, तब से आज तक जीये जीवन के उन लम्हों में मैं डूबना चाहती हूँ, जहाँ मैंने अपने अग्रज का हृदय की गहराईयों से स्नेह एवं वात्सल्य पाया है। मैं जन्म से आज तक उनकी छाया बनी हूँ तो वे मेरे लिए आज तक ढाल बनकर रहे हैं।

यद्यपि हमारा बचपन प्रत्येक अपेक्षा से अत्यंत सीमित रहा है पर साथ ही यह भी सत्य है कि उसकी अनुभूति अत्यंत मीठी एवं गहरी रही है।

तीन प्राणियों का छोटा सा परिवार... मैं, भाई एवं माँ! पर इन तीनों में अपनत्व की ऐसी मीठी सुगंध बहती थी कि पूरी दुनिया का आनंद उस देहरी में समा गया था। भौतिक साधनों की भरमार न थी पर परस्पर संवेदनाएं इतनी गहरी थी कि दुनिया के किसी अन्य सुख का अभाव कभी नहीं सताता था।

बच्चों को धार्मिक वातावरण देने में माँ ने पूरा परिश्रम किया था। यही कारण है कि हम दोनों भाई-बहिन रात्रिभोजन, जमीकंद एवं अभक्ष्य पदार्थों से जन्म से ही दूर रहे।

पितृछाया से वंचित भाई-बहिन को माँ ने अपने कोमलता मिश्रित कठोर अनुशासन से इतना अच्छी तरह तराश लिया कि वे स्वयं विश्वस्त हो गयी कि अब दोनों बच्चे प्रत्येक वातावरण के योग्य हैं। मां के द्वारा योजनाबद्ध तरीके से किये गये उपायों के तहत भैया मीठालाल एवं मैं नाकोड़ा में उपधानरत मां की शाता पूछने अपने गाँव मोकलसर से गये तो वहीं प.पू. आचार्य भगवंत श्रीमज्जिनकान्तिसागरसूरि के संयममय आभामंडल से परिचित हुए।

प. पू आचार्य श्री की साधनामयी गहरी दृष्टि भैया के बाह्य औदारिक शरीर को भेदकर सूक्ष्म शरीर में

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन
पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में
परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्यरत्न
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...

आपके कुशल नेतृत्व में
खरतरगच्छ संघ प्रगति करता रहे...

दादा गुरुदेव की कृपा एवं पूज्यश्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की निश्रा में श्री शान्तिनाथ परमात्मा आदि जिनबिंबो दादा गुरुदेव एवं देव-देवियों की भव्य प्रतिष्ठा वि. सं. 2067 पौष सुदि 15 बुधवार दि. 19.01.2011 को हुई। प्रतिष्ठा दिवस पर ही भव्य चमत्कार हुआ। मन्दिर में प्रांगण में अमृत की बरसात होने लगी। तत्पश्चात् पूज्यश्री ने श्री अमीझरा शान्तिनाथ मन्दिर नाम रखा एवं आज भी प्रतिवर्ष वर्षगांठ के अवसर पर जैसे ही ध्वजारोहण होता है, वैसे ही मन्दिर में अमीझरणा होने लगता है। श्री जसोल संघ पर परमात्मा का एवं आप जैसे गुरु भगवन्तों का आशीर्वाद बना रहे ।

वंदनकर्त्ता

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, श्री जसोल
श्री अमीझरा शान्तिनाथ मन्दिर, श्री जसोल

श्री भंवरलाल बोकड़िया
अध्यक्ष

श्री अशोक कुमार गोलेच्छा
कोषाध्यक्ष

लहराती तेजस्वी, पवित्र एवं साधक आत्मा को देखकर चौंक उठी। सर्वथा अपरिचित उस कृशकाय मासूम 13 वर्षीय बालक को सहलाने..... पाने ..... उसे अपनी गोद में बिठाकर दुलराने को उनके हाथ जैसे उत्सुक हो उठे।

उन्हौंने औपचारिक दो तीन प्रश्न पूछकर उत्सुकता से पूछा-मुन्ना! तूं दीक्षा लेगा?पितृस्नेह से वंचित वह बालक स्थूलकाय पर प्रभावी व्यक्तित्व के स्वामी उन गुरूदेव को सम्मोहित होकर एकटक देख रहा था। उसे तो आज जैसे दुनिया की सारी दौलत मिल गयी थी। उन ऑखों में बहते अमृत झरणे में मीठालाल की प्यासी और व्याकुल आत्मा जैसे डूब रही थी। फिर भी मीठालाल का संवेदनशील मन उन भावुक क्षणों में भी अपनी मां और बहिन की जिम्मेदारी भूला न था। उसने गुरूदेव से कहा-अगर मां और बहिन साथ लेंगे तो जरूर लूंगा।

गुरूदेव ने उस मासूम की आत्मा को परखा पर उन्हें उसकी प्रतिभा भी परखनी थी। अत: उन्होंने प्रथम दिन उसे बृहत् शांति का पाठ याद करने के लिये दिया। मीठालाल के रोम-रोम ने जैसे तय कर लिया था कि ये गुरूदेव ही मेरी जिन्दगी है। मेरी सारी समस्याओं का समाधान भी यहीं है।

मीठा ने एक ही दिन में पूरी बृहत् शांति जैसा बडा स्तोत्र गुरूदेव को सुना दिया। गुरूदेव तो जैसे बाग-बाग हो गये। वे मीठा को शिष्य के रूप में पाने के लिये उत्सुक हो उठे। उन्होंने मीठा को कहकर मां को बुलवाया। मीठा को तो जैसे मन की मुराद मिल गयी। उसने जाप में लीन अपनी मां को गुरूदेव श्री का संदेश दिया। पलभर के लिये तो मां हडबडायी पर गुरूदेव के आदेश की अवहेलना तो संभव नहीं थी। वह बेटे के साथ चल पड़ी।

मीठालाल का तो रोम-रोम झुम रहा था। उसकी जन्मजात गंभीरता आज चंचलता में बदल गयी थी। मां के पहुँचने से पूर्व ही वह उछलता कूदता गुरूदेव के चरणों में जाकर अपना माथा टेक चुका था।

गुरूदेव ने मीठालाल की मां से दो चार औपचारिक बातें की और मूल मुद्दे पर आते हुए कहा-आपका यह बेटा जिनशासन का अनमोल हीरा हो सकता है। अगर आप स्वीकृति दें तो।

मां ने कहा-मेरी हार्दिक भावना है कि यह शाश्वत सुखों को पाने का ही प्रयत्न करें। आपका अनुग्रह होगा तो अवश्य हमारी भावना पूरी होगी।

धीरे-धीरे मीठालाल पूरी तरह पूज्य गुरूदेव के रंग में रंग गया। उसकी एक ही रट थी- हम सभी जल्दी दीक्षा लें। यद्यपि मीठालाल को अपनी भावना की पूर्ति में कहीं कोई बाधा नजर नहीं आ रही थी क्योंकि उसके विचारों का संसार अभी बहुत छोटा था पर माँ तो परिपक्व थी। वे अपनी छोटी सी उम्र में अनुभवों की आंच में पर्याप्त तपी थी । पिताजी की छोटी उम्र में अकल्पित अचानक हुई मृत्यु से उन पर स्वाभाविक रूप से दुखों का पहाड टूट पडा था। पर उनके जन्मजात वैराग्य ने उन्हें सम्हाला। आत्मविश्वास का दामन थामकर स्वयं तो जीवन संघर्ष के लिए तत्पर हुई ही, पर अपनी ओर बेबस निगाहों से ताकते चार वर्षीय बेटे एवं आठ मासी बेटी को भी उन्होंने अपनी मजबूत बांहों से चिपकाकर आश्वस्त कर दिया कि तुम दोनों पूर्ण सुरक्षित हो।

माँ के लिये धूप-छांव, अपने-पराये की भेद रेखा समझने के साथ मर्यादा और अनुशासन को आत्मसात् करके यौवन में भी प्रौढ़त्व का व्यवहार करना उस समय उनकी जिंदगी की आवश्यकता थी।

मीठालाल के जल्दी से जल्दी संयम हेतु आग्रह करने पर गुरुदेव ने जब दुबारा बिलाडा में माँ को दीक्षा हेतु कहा तो उन्होंने अत्यंत ठोस एवं गंभीर आवाज में गुरूदेव से कहा-जब दोनों बच्चों ने संयम का रास्ता चुना है तो मैं उनकी सहगामिनी बनकर उनकी बाधाओं के सारे कंकर-कांटे चुनकर अलग कर दूंगी। आप इस सन्दर्भ में निश्चित रहें।

गुरूदेव दुबली पर लंबी, अशिक्षित पर आत्मविश्वास से लबालब हाथ भर घूंघट निकाले माँ की तेजस्वी आवाज को सुनकर दंग रह गये। गुरूदेव मां के

परम पूज्य उपाध्याय भगवंत

श्री मणिप्रभसागर जी म.सा.

के

'गच्छाधिपति' पदारोहण पर

हमारी हार्दिक मंगलकामना

एवं

राजनांदगाँव की धन्य धरा पर

प.पू. बहिन म. साध्वी

डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्री जी म.सा.

की सुशिष्या

पू. साध्वी डॉ. श्री नीलांजना श्री जी म.सा

पू. साध्वी श्री दीप्तिप्रज्ञा श्री जी म.सा

पू. साध्वी श्री विभांजना श्री जी म.सा.

के चातुर्मास-प्रवेश पर आप सकल श्री संघ सादर आमंत्रित है।

निवेदक

श्री जैन श्वेताम्बर, पार्श्वनाथ मंदिर ट्रस्ट,

राजनांदगॉव (छ. ग.)

संपर्क

पेढी : 07744-224696, मेनेजिंग ट्रस्टी : श्री नरेशजी डाकलिया - 98271-63867

ट्रस्टी : श्री अजय सिंघी - 94252-40300, ट्रस्टी : श्री राजेन्द्रजी कोटडिया - 98271-61800

ट्रस्टी : श्री सुनीलजी बरडिया - 93017-26000

तेजोद्दीप्त आवाज के सामने पलभर के लिये जैसे मौन हो गये।

उन्हें विश्वास हो गया कि माँ मना नहीं करेगी। अब उन्होंने अपना सारा ध्यान मीठालाल पर केन्द्रित कर लिया। उसकी प्रतिभा पर तो वे मुग्ध थे ही, उसकी सरलता और मासूमियत पर उससे भी ज्यादा फिदा थे।

माँ अपने शब्दों पर कायम रही। उसने बाधाओं की वैतरणी पार करते हुए उपधान के पाँच माह बाद ही बेटे को नौवीं की एवं बेटी को पाँचवीं की परीक्षा दिलवाकर पालीताणा पहुंचकर दोनों को गुरूदेव के चरणों में समर्पित कर दिया।

माँ की भावना चातुर्मास बाद दीक्षा की थी। पर गुरूदेव की आज्ञा को तहत्ति करके उन्होंने पालीताणा पहुँचने के मात्र 27 दिन बाद 2030 आषाढ वदि सप्तमी को संयम स्वीकार कर लिया।

मैंने एवं मां ने पूजनीया गुरूवर्या प्रवर्तिनी श्री प्रमोद श्री जी म.सा. का शिष्यत्व स्वीकार किया एवं भैया ने गुरुदेवश्री का!

पू. गुरूदेव श्री की प्रसन्नता उनके अनुशास्ता मन पर हावी नहीं हो पायी। उन्होंने अनुशासन की तीखी धार से अपने शिष्य को तराशना प्रारंभ किया। आवश्यकता होने पर गुरूदेव सजा देने में भी नहीं चूके। कड़क अनुशासन के साथ वात्सल्य का अद्‌भुत साम्य था अत: मीठालाल से मणिप्रभ बने नवदीक्षित मुनि न अनुशासन से कुंठित हुए और न वात्सल्य की मीठी धार से गले।

मुनि मणिप्रभ धीरे-धीरे साधना एवं शिक्षा की सीढियाँ चढने लगे। शिक्षा ने उन्हें फलों से लदे पेड की तरह नम्रीभूत किया तो संयमी साधना ने उन्हें सहज, सरल एवं संवेदनशील बना दिया। अपनी इस नम्रता एवं स्नेहिल व्यवहार से धीरे-धीरे वे श्रमण -श्रमणी मंडल में अत्यंत आत्मीय होते गये।

वे अपने गुरूदेव श्री की छांव में प्रगति की ओर अग्रसर हो रहे थे कि अचानक अकल्पित एक घटना घट गयी। पूज्य आचार्य श्री का 1985 का चातुर्मास गढ सिवाना में अत्यंत भव्यता के साथ संपन्न हुआ। गुरूदेव श्री चातुर्मास बाद विहार कर जीवाणा पधारते हुए रास्ते में मांडवला रूके और वहीं मात्र एक दिन की अल्प अस्वस्थता में मिगसर वदि सप्तमी को उनका स्वर्गवास हो गया।

आचार्य श्री ने समाधिमरण स्वीकार करने से पूर्व पूर्वाभास हो जाने के कारण प्रात: सूर्योदय से पूर्व ही अपने उत्तराधिकारी पृट्टधर शिष्य को निकट बुलाकर अपनी सारी शक्तियाँ एवं जिम्मेदारियाँ सब कुछ हस्तांतरित कर दी थी।

उस समय मणिप्रभजी ने उम्र के मात्र 25 बसंत देखे थे। अचानक हुए इस गुरू विरह ने उनको हतप्रभ कर दिया। रोते बिलखते लघुभ्राता... असहाय भक्तवर्ग ... कुछ समय तक तो वे यही तय नहीं कर पाये कि स्वयं को संभाले या अचानक आ पडी जिम्मेदारियों को। परंतु आखिर मां के दिये संस्कार ... आचार्य भगवंत द्वारा प्राप्त साधना का खजाना... इस समय यही काम आया।

मुनि मणिप्रभजी ने अपने अन्तर के दर्द को भीतर ही पी लिया। अंतिम संस्कार का स्थान पूछे जाने पर उन्होंने गंभीर पर अत्यंत सुलझा हुआ उत्तर दिया कि अंतिम संस्कार यहीं होगा, बोलियों की राशि से अग्नि संस्कार स्थल पर भव्य स्मारक निर्मित होगा और जीवाणा में होने वाला दीक्षा कार्यक्रम यथावत् रहेगा।

जब ये तीनों निर्णय प्रसारित हुए तो जनता मणिप्रभजी की गंभीरता, योग्यता एवं शास्त्रसम्मत जीवनशैली की कायल हुए बिना नहीं रही।

धीरे-धीरे समय सरकता रहा। जहाज मंदिर के नाम से विख्यात माण्डवला का स्मारक मणिप्रभजी की आस्था एवं संवेदना की सजीव अभिव्यक्ति है। इस स्मारक के निर्माण में प्रारंभ से प्रतिष्ठा तक बाधाओं की भरमार रही पर गुरूकृपा से विघ्नों के सारे बादल धीरे-धीरे बिखरते रहे। आज जहाज मंदिर में प्रतिवर्ष लाखों यात्री दर्शन कर उसकी शिल्पकला, सजावट ..... बनावट को देखकर धन्य हो जाते हैं। स्वर्णमयी शांतिनाथ परमात्मा की प्रतिमा जैसे मुँह बोलती नजर आती है।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन
पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में
परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्यरत्न
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
श्री
मणिप्रभसागरजी
म.सा.
को गणाधीश
पद से
विभूषित करने
पर
हार्दिक वंदन...
वंदनकर्त्ता
शा. कुशलकुमार मनीषकुमार जैन
जयपुर – मुंबई

जहाज मंदिर की प्रतिष्ठा के बाद पू. श्री मणिप्रभजी निरंतर सामाजिक, आध्यात्मिक एवं आत्मीयता के स्तर पर उन्नति की ओर अग्रसर होते रहे। वे उच्चस्तरीय सम्मान एवं पदों को पाकर भी अपने कर्तव्य के प्रति समर्पित रहते हुए आत्म मुग्धता से मुक्त रहे। हजार प्रतिकूलताओं में भी उनके होठों की मुस्कान कभी फीकी नहीं हुई।

वे सर्वथा परिग्रह मुक्त रहने का प्रयत्न करते हैं। बाहर से ही नहीं, भीतर से भी। मैंने उन्हें विचारों, विकल्पों एवं धारणाओं में उलझते हुए कभी नहीं देखा। वे न पदार्थ के प्रति और न व्यक्ति के प्रति किसी भी प्रकार की धारणा से बद्ध होते है और यही कारण है कि वे वर्तमान में ही जीते हैं। न अतीत के चित्रों में उलझते हैं और न भविष्य की कल्पनाओं में डूबते हैं। उनके आगे मात्र और मात्र वर्तमान का ही क्षण होता है।

आज तीन दशक हो गये आचार्य श्री के स्वर्गवास को फिर भी पू. मणिप्रभजी उनके प्रति उतने ही समर्पित हैं, जितने दीक्षा के समय थे। दीक्षा से लेकर आज तक की सारी स्मृतियाँ जब अपनी कल्पनाओं में लाती हूँ तो उनका एकनिष्ठ समर्पण देखकर जितनी अचंभित होती हूँ, उतनी ही आनंदित भी।

जब तक आचार्य श्री की उपस्थिति रही, वे सभी से, यहाँ तक कि मुझसे भी उदासीन थे। दीक्षा के मात्र छह माह बाद ही मेरा एवं माताजी म. का फलोदी की ओर विहार हो गया था। उसके बाद पू. आचार्य भगवंत अपने शिष्य के साथ साल भर बाद हमें दर्शन देने फलोदी पधारे। मेरी स्मृति में ऐसी कोई घटना नहीं है कि इस एक साल की अवधि में भाई म. का एक पंक्ति का पत्र भी हमें मिला हो। इसके बाद पुनः मुझे भाई म. के दर्शन चार साल बाद हुए। इन चार सालों की अवधि में मात्र एक पत्र जरूर उनके हाथ का प्राप्त हुआ था, वह भी तब, जब उन्हें मेरी अस्वस्थता की जानकारी हुई थी।

अपने गुरूदेव से पूर्ण संतुष्ट उनके चिंतन में भी कभी नहीं आया होगा कि उनकी मेरे प्रति कोई जिम्मेदारी है। मैंने आत्मनिर्णय से व्यवहारिक शिक्षा में कदम बढाया तब भी वे मेरे से सर्वथा और सर्वथा निस्पृह ही रहे।

पू. आचार्य श्री की निश्रा में अनेक भव्य आयोजन हुए। नाकोड़ा में उपधान तप, बाड़मेर से पालीताणा का ऐतिहासिक पदयात्रा संघ, जयपुर में आचार्य पदवी का भव्य आयोजन एवं इधर हमारे यहाँ माताजी म. का वर्षीतप का पारणा पर न उन्होंने मेरे आगमन की अपेक्षा रखी और न ही स्वयं की उपस्थिति दर्ज करवायी।

ऐसा नहीं कि वे मुझसे उदास थे बल्कि जब भी गुरूदेव श्री राजस्थान पधारते, अपने शिष्य को हमसे मिलने अवश्य भेजते। वे इस तरह दो बार बाड़मेर एवं एक बार फलोदी पधारे। गुरूदेव श्री तीन दिन का समय देकर भेजते थे। तीन दिन होते ही चौथा सूर्योदय वे किसी हाल में नहीं रूकते। ये तीनों दिन संपूर्ण स्नेह से ओतप्रोत होते और मेरे एकरस जीवन में जैसे बहार आ जाती।

आचार्य श्री का उन्हें एक युग का सान्निध्य मिला। उन्होंने इस एक युग की अवधि में सर्वतोभावेन स्वयं को अपने गुरूदेव श्री तक सीमित रखा। इस एकनिष्ठा के कारण ही वे अपने गुरूदेव के मुकुट की मणि बने।

मैं जन्म से ही उनके प्रति कुछ ज्यादा ही संवेदनशील रही। बचपन में हम दोनों को अगर किसी से टॉफी मिली है तो भैया उसी समय उसे उदरस्थ कर लेते और मैं उसे अपने पुस्तकों के बक्से में रख देती। भैया जब बक्से में पड़ी उस टॉफी को देखते तो वह भी उनके हलक के नीचे उतर जाती। ऐसा होने पर भी मेरे मन में उनके प्रति तनिक भी आक्रोश का भाव नहीं होता ऐसा नहीं कि वे मेरा ध्यान कम रखते। उन्होंने मुझसे छिपाकर या अकेले कभी कुछ नहीं खाया पर मेरी संग्रहवृत्ति उन्हें एक प्रतिशत भी पसंद नहीं थी। बचपन की यही आदत उन्हें आज भी वर्तमान में जीने की प्रेरणा देती हुई संपूर्ण स्वस्थ और समाधिस्थ रहने में मदद करती है।

मैं प्रारंभ से ही डरपोक मानसिकता की थी। वे बिलकुल विपरीत बिंदास थे। मैं चाहती-वे मां की अनुपस्थिति में घर पर रहकर मेरे साथ खेले पर वे कुछ देर तो मेरे साथ रहते पर बाद में उन्हें दोस्तों के साथ कबड्डी

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

गुरु वंदन...

वंदनकर्त्ता

शा. मानमल माणकचन्दजी बैंगानी

बिकानेर – मुंबई

खेलना, कंचे खेलना एवं गिल्ली डंडा खेलना अच्छा लगता था। इस कारण मैं उन पर नाराज होती, वे शांत रहकर चुपचाप सुनते पर खेलना नहीं छोड़ते।

बचपन की यही आदत आज उनके स्वभाव में शांत रहकर सुनो सबकी पर क्रियान्विति तो अपने चिंतन के आधार पर ही करने की है। उनका चिंतन किसी जिद्दी व्यक्ति का नहीं बल्कि शास्त्र सम्मत एवं मर्यादायुक्त होता है।

मेरे प्रति उनके मानस में बचपन से ही 12 वर्षीय अवधि को छोड़कर अभिभावक की भूमिका है। बचपन में मां के अतिरिक्त किसी ने मुझे एक शब्द भी कह दिया तो भैया के गुस्से का शिकार होना तय था। आम भाई बहिन की तरह हमारे बीच आज भी कभी बहस नहीं होती। वे आज भी यह ध्यान रखने की चेष्टा करते हैं कि उनके सामने मेरे सम्मान को कोई आंच नहीं आवे।

अभी जिस दिन उनकी गणाधीश पद पर ताजपोशी हुई, उसी दिन मुझे ढेरों बधाई समाचार मिले।

मुझे बधाई में आनंद आना स्वाभाविक था। पर मैंने स्वयं को पूछा कि क्या वाकई में मैं बधाई की हकदार हूं या मात्र एक बहिन के नाते ही मुझे इन्हें सहज स्वीकार करना चाहिए। मैंने स्वयं को टटोलना शुरु किया ही था कि भीतर से आवाज आयी मैं हकदार हूँ या नहीं। इसकी समीक्षा मैं स्वयं क्यों करू?यह समीक्षकों पर ही छोड़ देना चाहिए। परंतु भविष्य में मेरा यह संकल्प अवश्य होना चाहिए कि मैं अपनी ओर से संपूर्ण प्रयत्न करूँ कि अधिक से अधिक उनकी जिम्मेदारी को बाँटू।

मैं जन्म से गणाधीश पद तक की यात्रा में उनके साथ अभिन्न रही हूँ। मैंने स्वयं से पूछा-इस बावन वर्षीय यात्रा में और विशेष रूप से आचार्य भगवंत के स्वर्गवास के बाद मेरे केन्द्र में मैं रही या भाई म. रहे?जब मैं घण्टों की चिंतनवीथि से बाहर आयी तो मुझे प्रसन्नता ही हुई कि आचार्य भगवंत के स्वर्गवास के बाद मैंने लगभग अपनी समस्त व्यवस्थाओं को गौण कर मात्र भाई म. की ही व्यवस्था को मुख्यता दी। इसका प्रारंभ आचार्य भगवंत के स्वर्गवास से ही हो गया था।

हम मोकलसर चातुर्मास के बाद कार्तिक पूर्णिमा को विहार कर उसी दिन गुरूदेव श्री की सान्निध्यता में सिवाना पहुँच गये थे। तीन-चार दिन के बाद गुरूदेव श्री का जीवाणा की ओर तथा हमारा नाकोड़ा की ओर विहार हुआ। हम नाकोड़ाजी में मिगसर वदि सप्तमी को लगभग नौ बजे पहुँचे और अचानक वहाँ माईक से हो रही घोषणा सुनी। घोषणा आचार्य भगवंत के स्वर्गवास की थी।

सुनकर पलभर के लिये हम सभी हक्के-बक्के रह गये। उस समय संचार व्यवस्था आज जैसी तेज नहीं थी। उस समय कोई अनुभव भी नहीं था फिर भी मैंने तुरन्त ही माण्डवला पहुँचने का निर्णय लेकर दूसरे दिन ही विहार कर दिया।

उग्र विहार कर हम सिवाना पहुँचे तो पता चला कि भाई म. मांडवला से विहार कर जीवाणा पधार गये हैं। हमने भी सिवाना से जीवाणा की ओर प्रस्थान किया।

अनजान राहें ..... व्यवस्था की न्यूनता ..... फिर भी बिना रूके जिस दिन भाई म. ने जीवाणा प्रवेश किया, हम भी उसी दिन पहुँच गये। जीवाणा से दो-तीन दिन के बाद जब पुनः विहार किया तो बाद में जो पत्र मिला, उसमें पहली बार अनुभव किया कि यह मेरे भाई म. का पत्र है।

मुझे यह स्वीकार करने में कोई एतराज नहीं है कि भाई महाराज की और मेरी मानसिकता में अंतर है। वे स्थितप्रज्ञ है। उन्हें न किसी से अपेक्षा है और न वे किसी की अपेक्षाओं को समझने में अपना समय जाया करते हैं। और यही कारण है कि उनके अन्तर्मन में सदैव समाधि-प्रसन्नता का झरणा बहता है।

संघ एवं गच्छ के प्रति उनकी निष्ठा और समर्पण बहुत गहरा है। गच्छ के काम में उनकी तत्परता अनुकरणीय है। मालपुरा प्रतिष्ठा कार्यक्रम के लिये ज्योंहि जयपुर संघ की ओर से उन्हें निवेदन किया गया, उन्होंने अपने सारे कार्यक्रम निरस्त कर तुरंत जयपुर चातुर्मास की स्वीकृति दे दी।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

गुरुदेव वंदन

वंदनकर्त्ता
श्रीमती सम्पतकंवर नाहर, आजाद सौ. हेमलता, अनुष्का नाहर परिवार

asianpaints

KINGS PAINTS & HARDWARE
55, Panchwati Road No. 3, UDAIPUR (RAJ.)
Cell : 93525 03763

उदयपुर, सूरजपोल में स्थित दादावाड़ी के जीर्णोद्धार से लेकर उसकी पूरी विकास गाथा में महाराज श्री का पुरूषार्थ बोलता हुआ नजर आता है। आज उदयपुर, जो कभी खरतरगच्छ का गढ था पर बीते समय में जहाँ एक भी श्रावक खरतरगच्छ की क्रिया करने वाला नहीं था, वहाँ अब खरतरगच्छ संघ के चातुर्मास प्रारंभ हो गये हैं।

दुठारिया गॉव, जहाँ की जनता बाहर दक्षिण आदि में जाकर तपागच्छीय हो गयी थी, उस क्षेत्र में पधारकर आपने भव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न की एवं उन्हें पुनः अपनी मूल परम्परा से जोड़ा।

दिल्ली, मुंबई आदि मेट्रोसिटी में खरतरगच्छ की आम जनता को संगठित करते हुए जहाँ अपनी सामाजिक पकड़ को अभिव्यक्त किया, वहीं आम व्यक्ति को स्वगच्छ की क्रिया करने की व्यवस्था भी प्रदान की।

आप श्री अहमदाबाद से उदयपुर चातुर्मास हेतु पधार रहे थे। उस समय केशरीयाजी तीर्थ पर भी रूकना हुआ। वहाँ की अस्त- व्यस्त व्यवस्था ने आपके भक्त मन को आहत किया। उसी चातुर्मास में आपश्री ने गजमंदिर की कल्पना की और आपश्री की निश्रा में कुछ ही वर्षो में गजमंदिर की कल्पना ने साकार रूप लेकर आज जहाँ तीर्थ में यात्रियों की संख्या को बढावा दिया है, वहीं स्थापत्य कला के अनूठेपन ने आपकी शिल्प प्रतिभा को भी रेखांकित किया है।

आपकी प्रतिभा सीमित नहीं है। आगम हो या आचार परम्परा, ज्योतिष हो या स्थापत्य, कविता हो या गद्य लेखन, संशोधन हो या संपादन, आपकी प्रतिभा प्रत्येक क्षेत्र में प्रखर रूप से प्रकट है।

आगम आपका प्रिय विषय है। आपको जब भी समय की अनुकूलता होती है, आप अवश्य ही आगमों के स्वाध्याय में उस समय को नियोजित करते हैं। यही कारण है कि आपको कोई जिज्ञासु जिज्ञासा भाव से कैसा भी प्रश्न कर ले, आप शास्त्रसम्मत प्रत्युत्तर देने में सक्षम है। मात्र खरतरगच्छ में ही नहीं, आप द्वारा प्रस्तुत स्पष्टीकरण को भारत के सभी संप्रदायों में श्रद्धा एवं चाव के साथ समझने का प्रयत्न किया जाता है एवं उसे विश्वस्त माना जाता है।

पिछले कुछ वर्षों में आप श्री द्वारा प्रत्येक चातुर्मास में 45 दिवसीय 45 आगमों की प्रवचन माला आयोजित की जाती है। इस प्रवचन माला के अन्तर्गत आपश्री प्रत्येक दिन एक-एक आगम की विधिवत् पूजा कराकर उस आगम का सारांश अत्यंत सरल भाषा में जब प्रस्तुत करते हैं तो ऐसा लगता है कि साक्षात् हम गंगा के मीठे, शांत एवं कलकल बहते जलप्रवाह में नहाकर ताजगी का अनुभव कर रहे हैं। निःसंदेह इस प्रवचनमाला को सुनना भी स्थानीय जनता का सौभाग्य है तो जनता भी इस अनमोल सौभाग्य को अपने घर आंगन में पाकर इससे एक दिन के लिये भी चूकना नहीं चाहती बल्कि अपने घरेलु अथवा व्यवसाय जगत से जुडे कार्यों को आगे पीछे

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

गुरु वंदन...

वंदनकर्त्ता

श्री कुंथुनाथजी एवं श्री जिन कुशल सूरि दादाबाडी समिति

गोल (उम्मेदाबाद) - जि. जालौर

करके भी आगमों के प्रवचनों को बहुत ही जिज्ञासा भाव से सुनती है।

आपके रोम-रोम में संघनिष्ठा एवं गच्छनिष्ठा है। आपके जीवन में सुविधा-अनुकूलता पर गच्छीय कार्यक्रम सदैव प्राथमिकता पाते हैं। हजार प्रतिकूलता में भी अगर आपको कितना ही लम्बा विहार करना पडे, आप उसके लिये तत्पर ही रहते हैं। बीते वर्षों में तो चातुर्मास के अतिरिक्त शेष आठ माह सतत आपका समय विहार एवं कार्यक्रमों को ही समर्पित रहता है। सतत यह आपकी श्रमशीलता आपकी अप्रमत्त मानसिकता को रेखांकित करती है।

शास्त्रनिष्ठ श्रमणचर्या के अन्तर्गत अगर कहीं देखा देखी अथवा अन्य किसी कारण से पूर्वाचार्यों द्वारा प्ररूपित समाचारी से वर्तमान समाचारी में जहाँ भी भेद नजर आता है, आप उसकी सटीक व्याख्या एवं शास्त्रीय संदर्भ देते हुए उसे बदलने में पलभर का भी विलंब नहीं करते। यद्यपि बदलाव की स्वीकृति इतनी आसान नहीं होती। अनभिज्ञ व्यक्ति उसके लिये आलोचना भी करते हैं पर आप अपनी परंपरा से प्रतिबद्ध रहते हुए आवश्यक हो तो चर्चा करते हुए उसे संतुष्ट करते हैं अन्यथा उसे समय पर छोड देते हैं।

संतुलित चिंतन एवं पूर्वाग्रहरहित मानसिकता आपके जीवन विकास के महत्वपूर्ण आयाम है। आपश्री का चिंतन परिस्थितियों से संपूर्ण अप्रभावित रहता है। घटनाओं में इतनी क्षमता नहीं कि वे आपके शान्त मन को उद्वेलित कर उसमें अशांति की तंरगों को जन्म दे सके और यही कारण कि जन्म से आज तक आपके जीवन में घटनाओं का जन्म तो होता रहा पर आप इससे अलिप्त रहते हुए निरंतर अपनी मंजिल की ओर बढते रहे।

आपश्री की दीक्षा के दशकों बाद दीक्षित कई मुनि वर्षों पूर्व अन्य गच्छ में सूरिपद पर आसीन हो गये। अन्य गच्छीय श्रमणवृंद एवं वरिष्ठ श्रावक तक यह प्रश्न कई बार पूछते रहे- भाई महाराज आचार्य कब बनेंगे ?सकल संघ मान्य इतनी प्रतिभा-योग्यता होते हुए भी अभी तक आचार्य क्यों नहीं बने?शासन प्रभावना जो उनके द्वारा संपन्न हो रही है, वह किसी भी शासन प्रेमी से अज्ञात नहीं है।

आज भी मुझे याद है कि उपाध्याय पद के लिये भी संघ ने उन्हें कितनी मुश्किलों से तैयार किया था। पद मोह से मुक्त होने पर भी सकल संघ के अत्याग्रह एवं हम सभी के निवेदन पर चंपावाड़ी की प्रतिष्ठा पर 2001 में उपाध्याय पद स्वीकार किया था।

आचार्य पद के लिये दशकों से सभी प्रयत्नशील थे। आचार्य श्री जिन उदयसागर सूरि के स्वर्गवास के बाद महासंघ अध्यक्ष पितृहृदय वात्सल्य चेता श्री हरखचंदजी सा. नाहटा के रोम-रोम की यह कामना थी कि आपश्री आचार्य बने।

जब भाईजी को यह लगा कि आप एक प्रतिशत भी पद के लिये तैयार नहीं हैं तो आपकी नि:स्पृह मानसिकता को अन्तर से नमन करते हुए सोचा-जहाँ व्यक्ति पद पाने के लिये अपना सब कुछ दांव पर लगा देते हैं, वहाँ पदयोग्य समस्त अर्हता उपलब्ध होने पर भी कितनी गहरी नि:स्पृहता है। उनके इसी पवित्र आभामंडल ने भाईजी के संवेदनशील मन को और अधिक आकृष्ट किया।

आज आप गच्छ के संघशास्ता गच्छाधिपति के पद पर अभिषिक्त हुए हैं। मन में एक प्रश्न सहज ही उभरता है कि पद पाकर आप गौरवान्वित हुए हैं या आप जैसे प्रज्ञासंपन्न, शास्त्रज्ञ, गच्छीय समाचारी के परमज्ञाता, ओजस्वी एवं प्रबुद्ध व्यक्तित्व को पाकर पद गौरवान्वित हुआ है। नि:संदेह दोनों परस्पर गौरवान्वित हुए हैं।

संघ का प्रत्येक व्यक्ति आशान्वित हैं कि आपश्री के सक्षम एंव संवेदनशील नेतृत्व में हमारा धर्मसंघ आध्यात्मिक एवं व्यवहारिक ऊँचाईयों का अवश्य ही स्पर्श करेगा ।

आप श्री दीर्घायु एवं स्वास्थ्य संपदा से युक्त रहते हुए संघ को अपने गरिमामय अतीत को वर्तमान में साकार करने का स्वर्णिम अवसर प्रदान करें, यही मंगलकामना ।

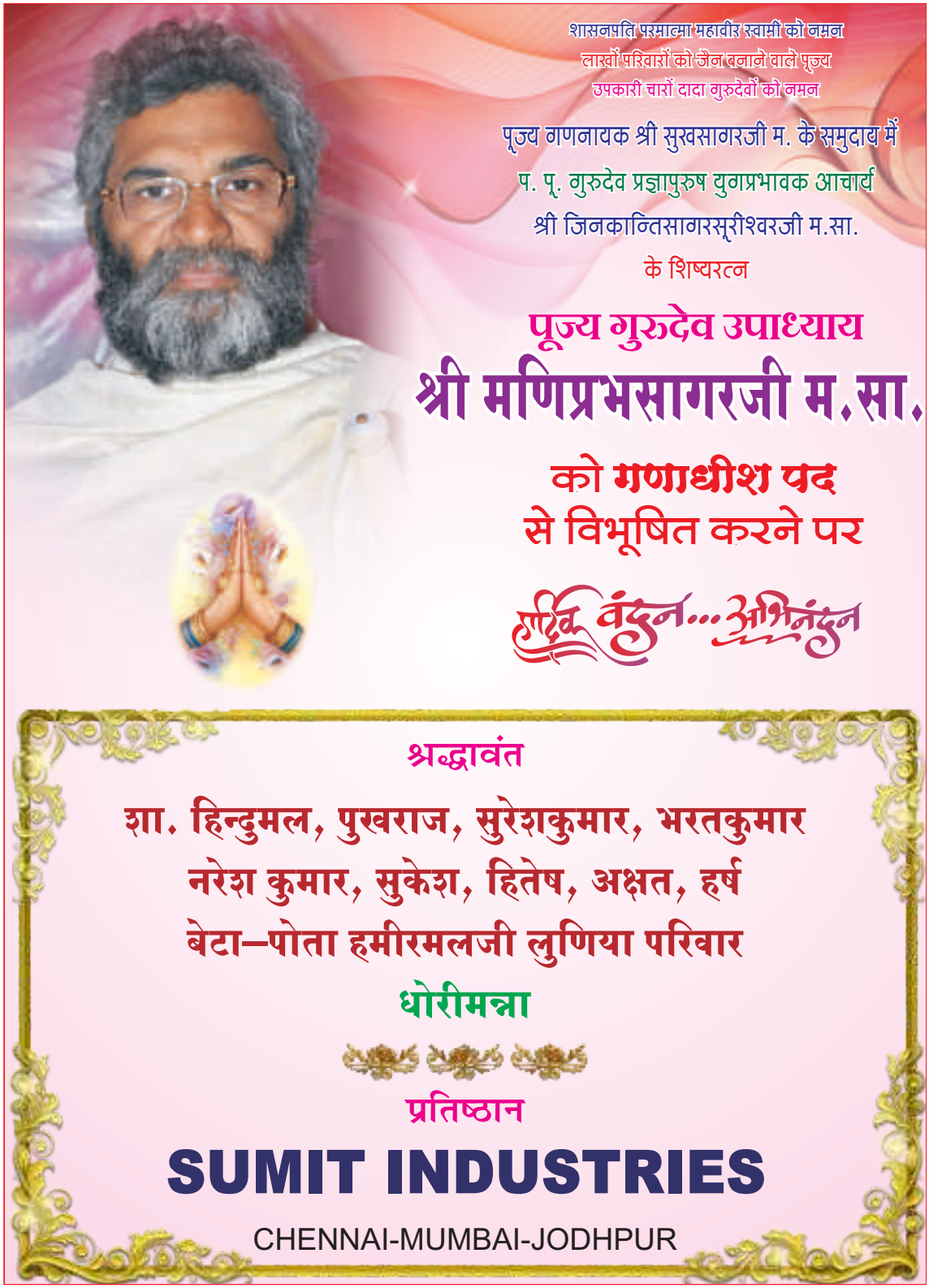

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य
उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में
प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को **गणाधीश पद** से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन... अभिनंदन

श्रद्धावंत

शा. हिन्दुमल, पुखराज, सुरेशकुमार, भरतकुमार
नरेश कुमार, सुकेश, हितेष, अक्षत, हर्ष
बेटा–पोता हमीरमलजी लुणिया परिवार

धोरीमन्ना

प्रतिष्ठान

SUMIT INDUSTRIES

CHENNAI-MUMBAI-JODHPUR

भावों का चंदन

हेमचरणरज
साध्वी कल्पलताश्री

श्रद्धा के सुमन समर्पित।
भावों का चंदन है अर्पित ।।

तीर्थंकर भगवान द्वारा स्थापित चतुर्विध संघ का नेतृत्व गणनायक के सुदृढ हाथों में होता है और वे जिनशासन की प्रभावना करते हैं। जिनशासन रूपी साम्राज्य के राजा जहाँ तीर्थंकर होते हैं, वही उनके मंत्रीत्व का भार वहन करने वाले गणनायक बहुआयामी व्यक्तित्व और कृतित्व के धनी होते हैं।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी आत्मार्थी पू. गणाधीश उपाध्याय प्रवर मरूधर मणि गुरूदेव श्री का जीवन एक ऐसा दर्पण है, जिसमें स्वत: ही उनके गुण झलकने लगते हैं। धर्म सिंहासन पर विराजित आपश्री के मुखारविंद से जिनवाणी का शंखनाद होता है।

अंत:जागरण, आत्मानुशासन, ज्ञानवर्धन, संस्कार निर्माण और सही मार्गदर्शन के लिए आप जैसे महान् व्यक्तित्व की अत्यंत आवश्यकता है। श्री संघ ने आपश्री को जो ये पद प्रदान किया है, वह अत्यन्त हर्ष का विषय है। ''बधाई की इस वेला में सीमित नहीं है हर्ष'' आपश्री का जीवन उत्तरोत्तर साधना, आराधना के क्षेत्र में प्रगति करता रहे। आपका श्रीसंघ पर, हम पर इसी तरह आशीर्वाद बरसता रहे, निराबाध गति से आप जिनशासन की सेवा करते रहे।

''दुनिया की हर खुशी से आपकी मुलाकात हो,
खूबसुरत दिन और तारों भरी रात हो।
शुभकामना है हमारी।
महकती रहे जीवन-क्यारी ।।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन
पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में
परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्यरत्न
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से
विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...

वंदनकर्त्ता
शा. गोरधनमलजी प्रतापमलजी
रांका शेठिया परिवार
धोरीमन्ना – मुंबई

मनोहर भाव प्रसून

महत्तरा मनोहर शिशु
साध्वी मधुस्मिताश्री

ग- गजब अजब है क्षमता जिनकी, पावनता मनोहारी।
णा- णाण ध्यान में मस्त बने हैं और उग्रविहारी।
धी- धीमंत बने, श्रीमंत बने, हैं आगमज्ञाता भारी,
श- शत-शत अभिनंदना-वंदना, श्रीचरणों में हमारी।
म- महकाई है शासन बगिया, ज्ञान गंध को लाई।
णि- नियम संयम में रत रहते, विद्युत् शक्ति पाई।
प्र- प्रकाश स्तंभवत् राह प्रशस्त कर, संगठन वीणा बजाई,
भ- भंवर जाल में उलझे मन में, वीर वाणी गुंजाई।
सा- सागर सम गंभीर कहे या पर्वत सी ऊँचाई।
ग- गरिमा गुण की कहे कहाँ तक ''**मनोहर**'' कांति पाई।
र- रहे सदा निष्कंप मेरूवत् ''**मधुस्मित**'' सह बधाई।
जी- जीयो हजारों साल ''**गणाधीश पद**'' महिमा है बढाई।
म- महामनस्वी, तरूण तपस्वी, पारस प्यारे हो तुम।
हा- हार्दिक वंदन मंडल मनोहर का, माँ रोहिणी दुलारे हो तुम।
रा- राष्ट्र, गच्छ, संघ हित चिंतन मे लगे ये शक्ति सारी,
जा- जागृति का ले शंखनाद समन्वित संघ बनाओ तुम।

सद्गुणों के पुंज : पूज्य गुरुदेव श्री

चम्पा जितेन्द्र ज्योति साध्वी विमलप्रभाश्री

ज्ञान के सागर जो शब्दातीत हैं, उन्हें शब्दों में कैसे बाँधूँ।
समता के सुधाकर जो कल्पनातीत है, उन्हें कल्पना में कैसे ढाँलूँ,
दर्शन के दिवाकर जो वचनातीत हैं, उनका उत्कीर्तन वचनों से कैसे करूँ।
सद्गुणों के पुञ्ज गणाधीश प्रवर गुरुदेव श्री के गुणों को कलम से कागज पर कैसे उतारूँ।।

अनंत-अनंत शुभ का उदय और पुण्य का पूर्व संचय पाया, जो ऐसा प्रभु वीर का मार्ग अपनाया। धन्य-धन्य वें माता-पिता, जिन्होंने ऐसे पुत्र रत्न को जन्म दिया और रत्नत्रय के उपवन में छोड़ दिया। धन्य हैं वे आचार्य श्री जिनकान्तिसागर सूरीश्वर जी म.सा., जिन्होंने अपनी पैनी जौहरी नजरों से इस मणिरत्न को परख लिया और संस्कारित कर आगे बढ़ाया। 13 वर्ष की अल्पायु में समस्त भौतिक सुखों को तिलांजलि देकर अपनी मातुश्री व लघु भगिनी के साथ वैराग्य के कंटकाकीर्ण दिव्य संयम पथ पर अग्रसर हुए तथा अपना जीवन आचार्य श्री के चरणों में समर्पित कर दिया।

''यथा नाम तथा गुण'' जैसा नाम 'मणिप्रभ', वैसे ही उनके काम। जहाँ भी जाते हैं, उनका धवल, उज्ज्वल, तेजोमय प्रकाश फैलाकर संपूर्ण वातावरण को प्रकाशित कर देते हैं, उनके पास बचपन तो आया था, मगर बचपना

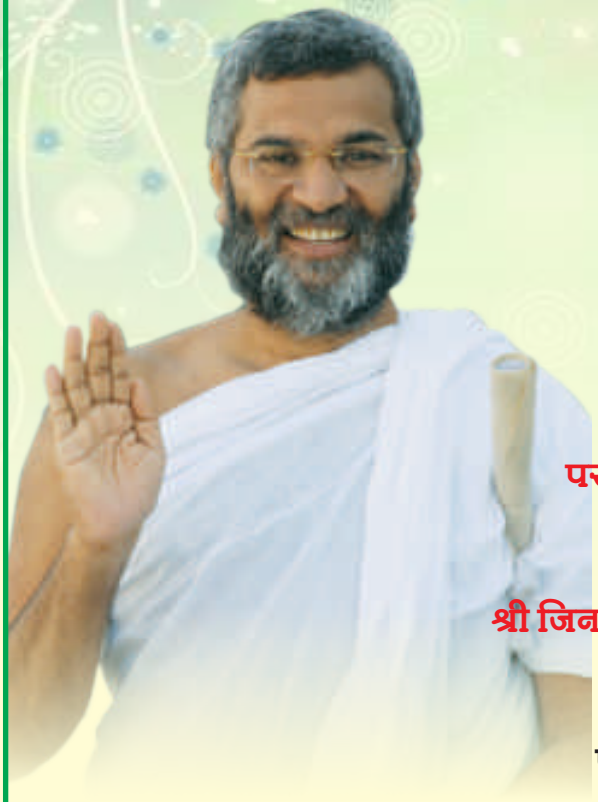

शासनपति परमात्मा
महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को
जैन बनाने वाले
पूज्य उपकारी चारों दादा
गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक
श्री सुखसागरजी म. के
समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष
युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्यरत्न
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...

वंदनकर्त्ता

खरतरगच्छ जैन श्रीसंघ, बालोतरा

नहीं था। तप-जप और ध्यान में मग्न रहना तो आपको अपने गुरु भगवंत से संस्कार रूप में मिला है। आप जिस कदर महान् है, आपका हृदय उतना ही विशाल और कोमल है, आप समाज के लिए एक आशा की किरण हैं, रोशनी की मिनार हैं, विश्वास और श्रद्धा का केन्द्र हैं, प्रेरणा स्रोत हैं, भावनाओं का प्रतीक हैं, एकता का निशान हैं, मार्ग दर्शक हैं, चतुर्विध संघ के अधिपति हैं। आप ही मंदिर और आप ही मूरत हैं।

आपश्री के मुख मंडल पर सर्वाधिक शासन है प्रसन्नता और सौम्यता का। जिस मुस्कान में शांति, समता, सहिष्णुता का पुट हो, उसी का नाम प्रसन्नता है। आपकी प्रसन्नता सदा बहार गुलाब की तरह है, जो आगन्तुक दर्शनार्थी को बरबस आकर्षित करती है-''एक मुस्कान पर हजारों कुर्बान को सार्थक करने वाला मनमोहक मुख मंडल को निहारने वाला भक्त आपको निहारते-निहारते अपने आपको निखार लेता है। आपकी सौम्य सूरत ही प्रेरणा की मूरत है। आपकी जीवन कहानी में सिर्फ गुलाबों की खुश्बू नहीं बल्कि अनगिनत कांटों की चुभन भी है। पर इसके बावजूद होठों पर गजब की मुस्कुराहट। यह अनुभव मैंने अभी-अभी विहार में साथ रहे तब किया। छोटी-छोटी बातों में उनका अपनत्व, आदर देने का भाव भूलाये नहीं भूलता। चाहे कितनी भी थकावट क्यों न हो?पर दोनों समय बराबर वाचना देते, इतने वर्षों में कभी आप श्री को किसी भी व्यक्तित्व की आलोचना-निंदा करते नहीं सुना गया है। कभी-कभी हम कहते हैं कि गुरुदेव श्री अमुक व्यक्ति आपके बारे में ऐसा बोल रहा था, तब भी आपका भाव मिलता कि निंदा न मैं किसी की करता हूँ, न देता हूँ, न लेता हूं, फिर भी जो करे, उसे करने दो।

लिखती ही जाऊँगी मैं, पर आपका व्यक्तित्व तो विराट् है। बस! मेरे हृदय सिंहासन पर आपका अचल आसन युग-युग तक बिछा रहे, आपके पावन जीवन की भक्ति गान करती रहे।

हे शासन गौरव! हे अनंत गुणों के सागर! हे कृपा सागर, हे सन्मार्ग दाता! आप शतायु हो। जीओ हजारों बरस, तन-मन से रहे सदा सरस ! हे दिव्य पथ पर गतिमान चरण, तुम्हें नमन, शत कोटि नमन!! आपकी छत्र छाया व वरदहस्त हमेशा हम पर बना रहे। यही मंगल मनीषा!!

'शुभकामना से झंकृत है, मन का सितार, श्रद्धा भक्ति से थिरक रहे हैं एक तार ।

श्री चरणों में अर्पित है गणाधीश पदाभिषेक पर मंगल हार, आपका हर क्षण ऐसा बीते, जैसे खुशियों भरा त्यौहार ।'

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...

कृपाकांक्षी

शा. बाबूलाल भूरचन्दजी लूणिया परिवार, धोरीमन्ना

शा. रायचन्द प्रेमराजजी दायमा परिवार, कोठाला

लूणिया & दायमा परिवार, अहमदाबाद

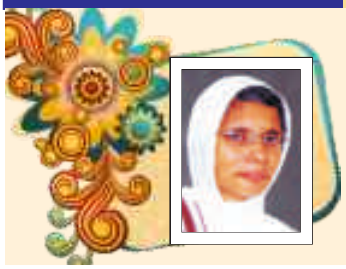

भावपुष्प अर्पित

सुलोचन चरणरज
प्रीतियशा श्री

ज्येष्ठ सुदि 11 दिनांक 29.5.2015 की पावन घडियाँ, पावन पल, उस दिन का सूरज, उस दिन की प्राकृतिक सुषमा निसंदेह अलौकिक थी। गच्छाधिपति पद को बधाने के लिये सकल संघ ही नहीं, बल्कि संपूर्ण सृष्टि हाथों में भाव पुष्प लिए खडी थी। वैसे तो आपका हर दिन अनुमोदनीय एवं अनुकरणीय है। फिर भी आज विशेष रूप से बधाई देने का अनुमोदना का दिन है।

आपका नाम स्मरण करने से धधकते पाप अंगारे प्रशांत हो जाते हैं। आपके ज्ञान की समीक्षा मुक्त अबोध के लिए असाध्य नहीं तो दुसाध्य अवश्य है।

आपकी जीवन-पंखुडी में त्याग और साधना की सुगंध है। आपके व्यक्तित्व-कृतित्व, दोनों ही विशिष्ट अर्हताओं से जुडे हैं। आपकी हर सांस साधना की सांस है। हर चरण साधना का चरण है। हर रूप समता का रूप है।

जैन-जैनेतर आपकी प्रभावशाली अमृतवाणी का पान कर जीवन में धन्यता पाते हैं। जहाँ पू. गुरूदेवश्री के चरण स्पर्श होते हैं, वे लौह समान अज्ञानीजन श्रावकत्व रूप सोना बन जाते हैं। वातावरण आपश्री के पदार्पण से मंगलमय बन जाता है।

आप मुझे ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें कि आपके विराट् गुण सागर में से कुछ बूंदे प्राप्त हो और उसे संभालकर रखुं। पू. गुरूदेवश्री निराली प्रसन्नता, निराला यश और निराकुल स्थिति का प्रतिपल अहसास करे, इसी अंतर कामना के साथ हार्दिक वन्दन।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन
पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में
प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्ति सागर सूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्यरत्न
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
को गणाधीश पद से विभूषित करने पर
हार्दिक वंदन... अभिनंदन
प्रेरणा
प. पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा.
आपकी कृपादृष्टि गच्छ एवं श्रीसंघ पर सदा बनी रहे...
वंदनकर्त्ता
श्री गौतमचन्द विरेन्द्र कुमार विवेक कुमार बोथरा, बालोतरा
दिनेश मिल्स इण्डिया
बालोतरा (मो. 9414384558)

अपने गुरुदेव

प्रमोद राजेन्द्र विजयेन्द्र चरण रज
साध्वी गुणरंजनाश्री

गुरू के बारे में लिखना बडा मुश्किल है। उनके गुणों का वर्णन न तो लेखनी से कर सकते हैं, न बात से।

गुरू हमारे अज्ञान अंधकार को दूर भगाकर विनम्र विवेकशील बनाने का पुरूषार्थ करते हैं। गुरू तो हमारी पतवार है, जो हमें भवसागर से पार लगाती है, ऐसे गुरू के बारे में क्या लिखा जाये, जो बचपन से ही ऊर्जावान् व्यक्तित्व लेकर आये। आज तो हमारे पूज्य गुरूदेव गणाधीश उपाध्याय प्रवर का क्या कहना। वो कहते कम, करते ज्यादा है, यह गुण जन्मजात है। धन्य माँ रोहिणी, धन्य बहिन विमला, जिन्हें ऐसा बेटा और भाई मिला किन्तु उनसे भी ज्यादा जिनशासन धन्य है, जिसे ऐसे गुरू मिले।

29 मई का दिन धन्य था। जहाँ चारों तरफ खुशियाँ थी कि हमारे युवा गणनायक का चादर समारोह था। बस। उस दिन पूज्य गुरूदेव से प्रार्थना कर रहे थे कि अब गच्छ में एकता, संगठन में मजबूती आये।

सद्गुरू शिष्य को अपने से नहीं जोड़ते अपितु ज्ञान और सदाचार के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

ऐसे सद्गुरू का सानिध्य मिलना ऐसा है जैसे एक कील का नौका के साथ जुड जाना। जिससे वह कील गहरे पानी में डूबने से बच जाती है। सद्गुरू का सत्कार-सम्मान करने से और उन्हें विधि पूर्वक वन्दना-नमस्कार करने से बुद्धि की जड़ता समाप्त होती है, विवेक जागृत होता है। ऐसे हमारे गुरूदेव हैं।

मेरे सद्गुरू वे हैं, जिन्होंने मेरे हृदय की गुफा में ज्ञान का उजाला किया है, जो मेरी आत्मा को उर्ध्वगामी बनाते है, जिन्होंने मेरे संकल्प को फौलादी बनाया है और जिनकी शरण से मेरी चिन्ता चिन्तन में बदल जाती है, ऐसे हैं हमारे गुरूदेव।

मैं यही प्रार्थना करती हूँ कि आप श्री की कृपा से गच्छ का विकास एवं वृद्धि हो। यह पूर्ण विश्वास है कि आपकी शक्ति और साधना से गच्छ में एक नई रोशनी का संदेश मिलेगा।

मेरी भावना है कि ऐसे सद्गुरू की पावन शरण मुझे तब तक मिलती रहे, जब तक मेरी आत्मा बन्धन से मुक्त न हो जाए।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

गुरु वंदन...

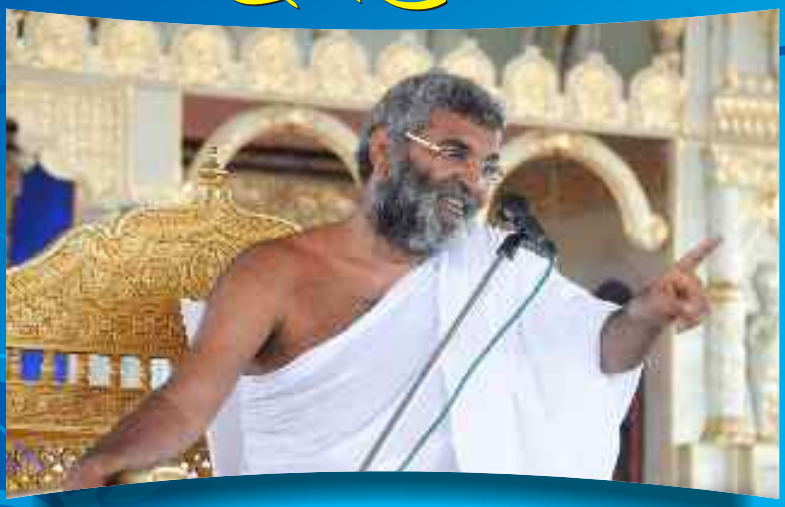

वंदनकर्त्ता

शा.प्रकाशमल छगनलालजी बोथरा कानूगो

सांचौर - मुंबई

बधाई के अमृत पलों में

साध्वी प्रियस्मिताश्री

जि– जिनशासन के आप हो साधक, खरतरगच्छ के महाप्रभावक

न– नतमस्तक है दुनिया सारी, सर्वस्व चरणों में है वारी....

शा– शासन नायक के पथगामी, संयम जीवन है पावनधामी

स– सम्यग्–चारित्र के ओ महादानी, गौरव गरिमा है पहचानी

न– नवकार मंत्र ने सींची क्यारी, पल्लवित बनी जीवन फूलवारी

शि– शिल्प संपदा के हो माली, जीवन में खिलती हरियाली

रो– रोहिणी देवी के हो प्यारे, पारसमलजी के राज दुलारे

म– महके फूलों का जीवन, अध्यात्म चिन्तन में करते गुंजन

णि– निर्मल अंत: करण है तेरा, हृदय मंदिर में तप त्याग बसेरा....

प– परम पुनीत है प्रभावशाली, भक्तगण नतमस्तक बलिहारी

पू– पूजनीय है त्यागमय जीवन खुशनुमा है संयम सावन....

ग– गजमंदिर की गरिमा भारी, कलात्मक कल्पना शक्ति न्यारी....

णा– नाम किया है जग में भारी, प्रतिष्ठा दीक्षा की कतार है जारी....

धी– धीरज का अर्घ्य धारण करते, मनोमस्तिष्क का परिमार्जन करते....

श– शशि सम शीतलरस बरसे, अंग से वैराग्य रस झलके....

प्र– प्रशंसनीय कार्यशैली न्यारी, अमृतवर्षीणी वाणी प्यारी...

व– वरदहस्त कान्तिगुरु का पाये, गुरु चरण रज पा धन्य बनाये...

र– रग–रग में परमात्म भक्ति का गुंजन, कण कण में है करुणा का कुंजन....

श्री– श्री के हैं त्यागी बने वैरागी, प्रभु पथगामी, मुक्ति के अनुरागी....

म– मधुमय जीवन जिनशासन वारी, बाग में खिली कलियाँ सारी....

णि– निर्माण मयूर, गज, घंट, हंस मंदिर का कर शासन शोभा में चार चाँद लगाये....

प्र– प्रणम्य पाद प्रसूनों में वंदन, धरती अम्बर देते बधाई....

भ– भक्तजनों की भीड़ है न्यारी, आज बन गये बड़ी फूलवारी....

सा– सागर सम गंभीर है जीवन, संयम साधना का खिला है उपवन....

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

गुरु वंदन...

वंदनकर्त्ता

शा. मांगीलाल राणामलजी लुणीया

चौहटन - मुंबई

ग– गणाधीश की पदवी पाई, हर्षित होकर झूमे नरनारी....

र– रमणीय है जहाज मंदिर अनोखा, कान्तिगुरु की आशीष वर्षा....

जी– जीवन मोती सा है दमके, आपकी यश कीर्ति जग में चमके....

म– मनन चिंतन ऐवरेस्ट सम है, साहित्य सर्जन में आप न कम है....

सा– साधना संयम जिनका प्राण, अनुशासन का देते पैगाम....

को– कोहिनूर हीरा जग में चमका, बहिना का आत्मांगन हरखा....

ब– बधाई हम गायेंगे मणिगुरुवर को आज बधायेंगे, शासन शान बढ़ायेंगे....

धा– धारण करते धैर्य आभूषण, दर्शन से मिट जाते दूषण....

ई– अमृत कृपा बरसाये, सुलोचन मंडल चादर महोत्सव मनाये, स्वागत के दीप जलाये।

अन्तर की अभीप्सा

साध्वी डॉ. प्रियलताश्री

आपश्री का जीवन सचमुच महकता चंदन है।
हृदय उज्ज्वल साधना का स्पंदन है। मरुधर की मणि मोकलसर के नंदन है।।
पूज्यश्री कान्तिसूरिजी के कोहिनूर कुंदन हैं।

जैन वाङ्मय में आर्य संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में ऋषि-महर्षि व संतों की साधना रूपी बसंत की महत्ता-गुणवत्ता मानी गई है। जैन धर्म में आचार-विचार की पराकाष्ठा सदियों से जीवंत रही है। आर्य सभ्यता का परिष्कार-सुसंस्कार संयमनिष्ठा, क्रियाशीलता, तप, त्याग, यम, नियम-संयम के आधार पर गतिशील है। श्रमणों की भागवती जैन-दीक्षा-पद्धति की गरिमा-महिमा मंडित आचार संहिता रही है। मुमुक्षुरत्न ऐसे महान् संतों की पावन सन्निधि में रहकर अपना सर्वस्व समर्पण करते हैं। उन्हीं के धर्मबल, तपोबल, त्यागबल, संयमबल के समक्ष-नतमस्तक होते हैं एवं गणाधीश पदारोहण पर हार्दिक अभिनंदन करते हैं। सकल श्रीसंघ को आपश्री पर नाज है...बहुमान है; क्योंकि आप शासन की आन-बान-शान हैं।

गणाधीश प्रवर श्री का जिनशासन के मधुवन में सर्वोपरि स्थान है। प्रमादावस्था का त्यागकर शासन के कार्यों में निरन्तर निमग्न रहते हैं। कहते हैं-

''जौहरी बनकर हीरा परखा,
कान्तिगुरु ने मणि को परखा,
मणि बनेगा गुरु सरिखा,
गणाधीश पदारोहण से जग हरखा''

सचमुच सागर से भी गंभीर आपका व्यक्तित्व हैं। अम्बर की ऊँचाई से ऊँचा आपश्री का कृतित्व है।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से
विभूषित करने पर

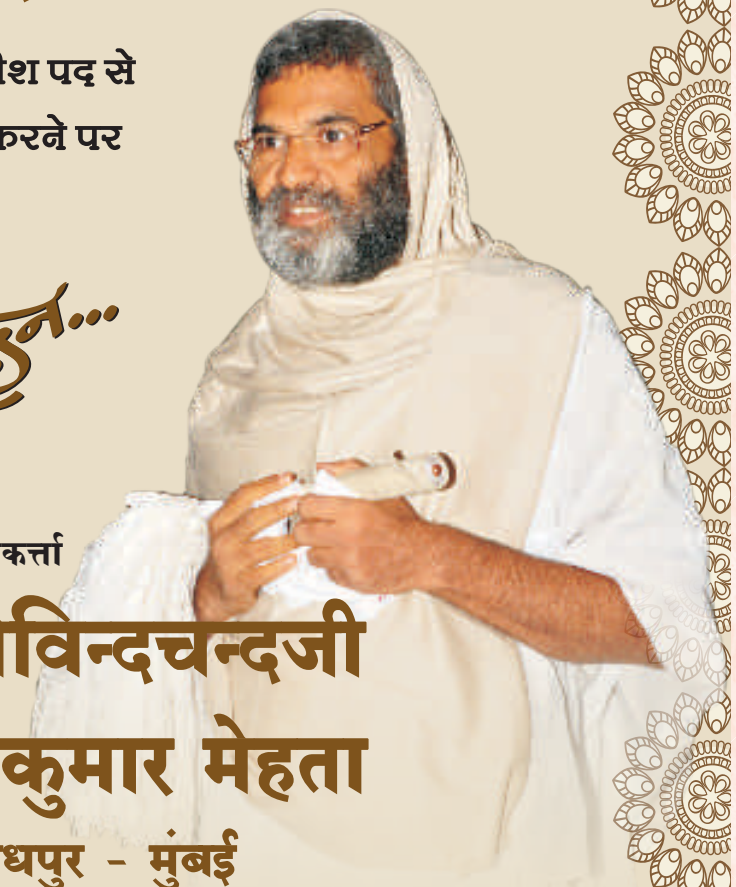

वंदनकर्त्ता

शा. गोविन्दचन्दजी
राकेश कुमार मेहता

जोधपुर - मुंबई

अध्यात्म प्रभावशाली आपश्री का वक्तृत्व हैं। हे मरुधरमणि! वाक्चिंतामणि! खरतरगच्छ शिरोमणि! कलात्मक आपश्री का कृतित्व हैं।

अभिनंदन की वे पावन घड़ियां कितनी प्यारी-प्यारी न्यारी-न्यारी सुहानी होती है। बधाई बांटने के लिए अन्तर की कलियाँ प्रमुदित बन खुशियों का थाल सजाती है। कहती है, कैसे हैं हमारे गणाधीश प्रवर श्री....।

हे जैन जगत के दिवाकर !

पूज्यश्री गणाधीशजी जैन जगत के समुज्ज्वल चमकते दमकते सितारे हैं। बहुआयामी व्यक्तित्व है। प्रतिभा सम्पन्न हैं। जन-जन के असीम आस्था के केन्द्र है। संघ-समाज-देश के लिए सटीक हितचिंतक है। ऐसे हैं हमारे जैन जगत के दिवाकर।

हे विलक्षण....विचक्षण नेतृत्व के धनी!

पूजनीय गणाधीशजी की प्रज्ञा में है प्रखरता, व्यवहार में माधुर्य, वैराग्यभावों में वैडूर्यता, वाणी में है विनम्रता स्वभाव में है समन्वयता, साहित्य सर्जन में विशिष्ट प्रतिभा, कल्पना शक्ति में कार्य कुशलता, प्रवचन में वाक्पटुता, चिन्तन में गहनता, सैद्धान्तिक रहस्यों में आगम मर्मज्ञता, शिल्पकला में है बेजोड़ कलात्मकता अनुशासन में निश्चलता, काव्य में है कमनीयता, ऐसे हैं, हमारे गणाधीश प्रवर श्री।

हे महिमा मंडित गुरुदेव श्री !

पूज्यश्री के गुणों का गुणगान करने में जीभ बौनी लगती है, ''सोही उज्जुयभुयस्स, धम्मो सुद्धस चिट्ठई'' आपश्री की ऋजुता, सरलता, सहजता, सरसता का क्या बयान करूं?निग्रंथमुनि समुज्ज्वल शुद्ध-धवल, मृदु व पवित्र निर्मल होते हैं, वैसे पूज्य श्री स्वयं प्रज्ज्वलित दीपक है, दूसरों को प्रज्ज्वलित करने वाले हैं। आपके गुणों का वर्णन किन शब्दों में करूं?सूरज को दीपक दिखाने जैसा

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले
पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक
श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

वंदनकर्त्ता

श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, बैंगलोर

तेजराज मालाणी अध्यक्ष	बाबुलाल भंसाली तनसुखलाल गुलेच्छा उपाध्यक्ष	राकेश डाकलिया सचिव
गजेन्द्र संखलेचा कोषाध्यक्ष		प्रवीण रांका स.सचिव

एवं समस्त कार्यकारिणी सदस्य

प्रतीत होता है। निष्कपट, निर्मम, निस्वार्थमय, अदम्य उत्साह से पूरित आप, आपश्री संघ, समाज, देश के गौरव है एवं नयी चेतना शक्ति का सूत्रपात करते है, कल्याण व मुक्ति के प्रणेता है। अन्तस् तमस् को तिरोहित कर बाह्य से अन्तर दशा में मोड़ते हैं। कहते है- गुरु वह ज्योति है, कृपादृष्टि है, ज्ञानदृष्टि है संयम का बोध-शोध-प्रतिबोध देकर दिव्य प्रकाश से प्रकाशित करते है। चिलमन को बाह्य से भीतर में स्थिरप्रज्ञ बनाते हैं। आपश्री अन्तरंग दृष्टि से अभिषिक्त, अभिसिञ्चित अनुप्राणित है। ऐसे है हमारे गणाधीशजी।

Tower - जिनशासन की व्यवस्थाओं को अनुशासित करने हेतु गणाधीश जैसे Tower चाहिए।

Mobile- आगमों का मर्म जानने हेतु पूज्यश्री जैसे जिज्ञासा रूपी Mobile चाहिए।

Receive Call - गणाधीशजी के प्रवचनों को हृदय में Receive करेंगे।

Dial Call- समस्त समस्याओं के समाधान हेतु पूज्यश्री को Call करेंगे।

Missed Call- समग्र पापों के प्रायश्चित हेतु पूज्यश्री को मिस Call करेंगे।

Hold - नेगिटिव थिंकिंग को Hold करेंगे।

Save - सरलता, सहजता, सहृदयता, समन्वयता, सद्भाव गुणों को Save करेंगे।

Delete - संघ-संघटन हेतु वैर वैमनस्य का Delet करेंगे।

S.M.S.- आपश्री के शुभ संदेशों को घर-घर में S.M.S.करेंगे।

Forward- पूज्यश्री के अनुरूप प्रेम, शांति, समन्वय, संघठन-अहिंसादि संदेशों को Foward करेंगे।

Setting- पूज्यश्री गच्छ समुदाय के हितार्थ चतुर्विध संघ से विचार विमर्श करके Setting करेंगे।

Wallpaper- पूज्यश्री जैसे जीवन रूपी वॉलपेपर में Positive Thoughts रखेंगे।

Net- सिद्धालय में प्रवेश करने हेतु सम्यग्दर्शन रूपी नेट ऑन करेंगे।

Mail- आचार-विचार व मर्यादा के पालन हेतु स्वाध्याय रूपी Mail करेंगे।

Download- व्रत, प्रत्याख्यान, तप, त्याग, उदारता, आत्मीयतादि गुणों को download करेंगे।

Recharge- जीवनरूपी मोबाईल को USE करने हेतु जिनवाणी रूपी Recharge करेंगे।

Whatsapp- मुक्ति पथ की ओर गमन करने के लिए ज्ञान, ध्यान, वैराग्यरूपी whatsapp ऑन करेंगे।

ATM - पूज्यश्री जैसे ATM से साहित्य रूपी प्रेरणा के A T M Card से संयम, स्वाध्याय के Password से ज्ञानार्जन करेंगे।

Broadcasting - भगवान महावीर के संदेशों को संसार में ब्रोडकास्टिंग करेंगे।

Remote- संपूर्ण संघ को अनुशासित करने हेतु यम, नियम,संयम युक्त बनाने हेतु पूज्यश्री जैसे रिमोट कंट्रोल चाहिये।

Memory Card - गच्छाधिपति पदारोहण अभिनंदन की शुभ घड़ियों के स्वर्णिम पृष्ठों को Memory में सेव रखेंगे।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को

गणाधीश पद से

विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...

वंदनकर्त्ता

शा. मावजी टोमाजी घोड़ा

हाडेचा - मुंबई

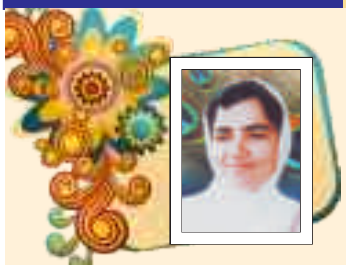

गणाधीश पद पर आसीन हुए गुरुदेव

साध्वी डॉ. प्रियवंदना श्री

हर शिल्पकार में पत्थर से प्रतिमा बनाने की ताकत है।
हर मालाकार में फूलों से माला बनाने की ताकत है।
हर कुम्भकार में मिट्टी से घट बनाने की ताकत है।
हर गुरु में योग्य शिष्य से महामुनि बनाने की ताकत है।

राजस्थान की वह पावन वसुन्धरा, मोकलसर की धन्यधरा....लुंकड परिवार का स्नेहभरा गृहांगन....अद्भुत अनूठा पुष्प खिला...भुआ ने मीठालाल नाम रखा....रोहिणी माता का राज दुलारा....पारसमलजी का नंदन प्यारा... बहिन विमला की आंखों का तारा...गुरुवर कान्तिसूरीश्वरजी का लाडला...आज गणाधीश पद को पाया...बना जिनशासन का चाँद सितारा...।

पुष्प अपने आप में सुवासित होता है, उसे कोई सुवास का बाना पहनाने की आवश्यकता नहीं होती....सूरज अपने आप में तेजस्वी होता है उसे प्रकाश का ताज पहनाने की आवश्यकता नहीं होती....दीपक अपने आप में ज्योतिर्मय होता है, उसमें रोशनी भरने की आवश्यकता नहीं होती.... ठीक वैसे ही योग्य मुनि श्री को पदवी की कोई चाहना नहीं होती, किन्तु संघ, समाज, श्रमण-श्रमणीवृंद एवं समुदाय को देखते हुए योग्यतानुसार सभी की अनन्त भावनाओं से अभिसिञ्चित सद्भावनाओं के साथ ये गणाधीश पदारोहण धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

हमारे गणाधीश प्रवर श्री की संयम साधना, सतत् जागरुकता , कार्यशैली, व्यवहार एवं आचरण पर हमें ही नहीं अपितु प्रत्येक जनसाधारण को नाज है....सश्रद्धा... सभक्ति से सहज ही जनमन के आस्था के केन्द्र है। 29 मई 2015 को मुमुक्षु शिल्पा नाहर की दीक्षा, प्रियशैलांजना श्रीजी, प्रियमुद्रांजना श्रीजी, प्रियमंत्राजन, श्रीजी की बड़ी दीक्षा, अंजनशलाका, प्रतिष्ठा एवं परमात्म भक्तिमय संगीत, भक्तगणों की भक्ति से ओत-प्रोत वह प्रभु दरबार, ऐसे सोने मे सुहागा सिन्धनूर संघ के मानो भाग्य खिल उठे....अन्तर कलियां मुस्कुरा उठी, स्वप्न में ये सब कल्पनाएँ नहीं होगी, सहज में एक साथ इतने Chance मिलेगें, कितना बड़भागी, पुण्यशाली वह संघ, जिन्हें उपाध्याय प्रवर से गणाधीश पदारोहण का पूरा लाभ मिला। श्रमण संघ के उपप्रवर्तक वर्षीतपाराधक प.पू. नरेशमुनिजी म.सा. उग्रविहार कर पदारोहण समारोह में सम्मिलित हुए। आप श्री मन से सहज, बुद्धि से प्रखर, भावना से भावुक, विचारों से दार्शनिक है।

आपने अपनी ओजस्वी एवं तेजस्वी छवि समाज में स्थापित की है। निरंतर हम प्रगति करते रहे, यह शुभकामना है।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन
पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...

वंदनकर्त्ता

संघवी शा. लाधमलजी मावाजी मरडिया परिवार

शा. बाबुलाल शांतिलाल भंवरलाल मरड़िया
चितलवाना – मुंबई

गुरु–गुणगान

सुलोचना शिशु साध्वी प्रियकल्पनाश्री

(तर्ज: अठरा बरस की कन्या)

गच्छाधिपति पद महोत्सव छाया,
बधाई देने का अवसर आया, स्वीकारो स्वीकारो बधाई भाव से,
मोकलसर में जन्मे गुरूवर प्यारे, रोहिणी माँ के राज दुलारे
लुंकड कुल के उजियारे, जिनशासन के सितारे,
खरतरगच्छ के दीपक गुरूवर, गुण गाये चांद सितारे भी मिलकर स्वीकारो स्वीकारो।।1।।

गच्छाधिपति है गच्छ के उजियारे,
पूरे होंगे सपने श्रीसंघ के सारे,
हर्षित है सब दिल आज रे, जन-जन के गुरूवर ताज रे ताज रे
मणि के सम प्रकाश फैलाते, कांतिगुरू का नाम दीपाते स्वीकारो स्वीकारो ।।2।।

गुणों के आकर गुरूवर हमारे, ज्ञान के सागर गुरूवर हमारे,
सागर सम गंभीर रे, वाणी में अमृत का नीर रे,
सुलोचन मंडल शीश झुकाये,
चरणों में श्रद्धा का थाल सजाये स्वीकारो स्वीकारो ।।3।।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

गुरु वंदन...

वंदनकर्त्ता

कुशल वाटिका बाड़मेर

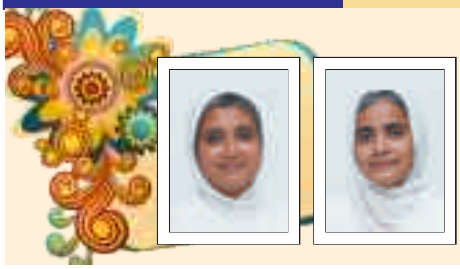

ऐसे हैं गुरुदेव

दिव्य चरण रज साध्वी विराग–विश्वज्योतिश्री

मेरी लेखनी अचानक मेरे विचारों को कागज पर रेखांकित करने लगी। जन-जन के मीत, अद्‌भुत है ज्ञान परोसने की रीत, सबसे रखते प्रीत, ज्ञान-गोष्ठि में चित्त, आगम का है वित्त, सबका सोचते हित, स्वभाव हैं शीत, गुरू का दिल लिया जीत, कैसे गाऊँ गुरू गुण गीत ..... गुणीजनों के गुण-गौरव गाथा की गजल गायक बन कैसे बयां करूं ?गुलाब की गरिमा कांटा भला क्या जाने ?सूर्य का प्रकाश उल्लू क्या जाने?

''पारस के स्पर्श से लोहा स्वर्ण हो जाता है'' इस सुक्ति के अनुसार हम में से किसी ने न तो कभी पारस को देखा है, और न पारस के संसर्ग से लोहे को सोना होते हुए देखा है परन्तु महापुरूषों के संसर्ग से अनेक अकिंचनों को, अनेक साधारण व्यक्तियों को महान् बनते हुए हमने देखा भी है और देख भी रहे हैं।

जिस प्रकार एक दीपक से लाखों-करोडों दीपक प्रकाश करते हैं और वह मूल दीपक भी दिग्दिगन्त को प्रकाशित करता रहता है, ठीक उसी प्रकार अलौकिक ज्ञान प्रकाश से दीपक सम गच्छाधिपति लाखों भव्यात्माओं के मन मंदिर में आध्यात्मिक ज्योति की लौं जलाकर स्वयं के संग समस्त विश्व को दिव्य आलोक से जगमगाते रहते हैं।

जिस प्रकार गुणवान् व्यक्ति आदर्श बनकर उसके अस्त व्यस्त जीवन को स्वर्णिम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, वैसे ही 'गुरूदेव' कठिन परिस्थितियों में हर व्यक्ति के आगे ढाल बनकर अडिग खड़े रहते हैं।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

वंदन...

वंदनकर्त्ता

शा. केवलचन्दजी छोगालालजी संकलेचा परिवार

पू. साध्वी गुरूवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित

श्री मुनिसुव्रतस्वामी मंदिर दादावाडी तीर्थ से सुशोभित

श्री जिनकुशल हेम विहारधाम

जोधपुर-जालोर मुख्य मार्ग पर, जोधपुर से 90 कि.मी., जालोर से 50 कि.मी.।
आवास भोजन की सुन्दर व्यवस्था। दर्शन, पूजा हेतु अवश्य पधारें।

(दादावाडी नोरवा)

संपर्क- 099784 02271, 099505 22754

दूसरों के गुणानुवाद करने में कृष्ण की भांति पूज्यश्री की आतुरता बनी रहती है तथा खुद की त्रुटियों को स्वीकार करने में मृगावती की तरह तत्परता रहती है।

सरल व्यक्तित्व के धनी गुरूदेव श्री जिनशासन के लिए एकलव्य की तरह समर्पित रहते हैं। जो भी अच्छा कार्य हो तो उसमें गुरू कृपा कहते हैं तथा स्वयं की गलतियों को जाहिर करने में हिचकिचाहट का अनुभव नहीं करते हैं। ऐसे व्यक्तित्व के लिए हमारा मस्तिष्क स्वयमेव नमन के लिए झुक जाता है।

मेरे आस्था के केन्द्र इतने बड़े पद से सम्मानित होने के बावजूद पूर्ववत् सरलता, सौम्यता, शालीनता, गंभीरता। जिसमें योग्यता हो, वही इस पद पर आसीन होता है।

सरस्वती सुत के जीवन में तीन ''D'' का विशिष्ट स्थान है-

HE HAS THE "D"ETERMINATION AND "D"EVOTION TOWARDS HIS GOALS AND HE REACHES THE "D"ESTINATION.

वे जो संकल्प लेते हैं, उसके प्रति संपूर्णरूपेण समर्पित होकर स्व-मंजिल को संप्राप्त करते हैं। यह उनकी अनूठी उपलब्धि हैं। वात्सल्यवारिधि! ''अहमवि खामेमि'' जब बोलते हैं, तब अत्यन्त आनंद का अनुभव करते हैं..... कितनी लघुता।

हम जब भी आपश्री के चरणों में पहुँचते हैं तो कुछ न कुछ उनसे प्राप्त करने की जिज्ञासा दिलोदिमाग में रहती है।

ऐसा लगता है कि वे हमसे दूर न जाये या हम उनसे दूर न जाये। हर कोई सोचता है कि गुरूदेव सिर्फ और सिर्फ मेरे हैं। हालांकि यह छोटी सोच है। वे सबके हैं और सब उनके हैं।

जैसे सूर्य अपनी प्रचंड प्रकाश की किरणों के द्वारा सारे ब्रह्माण्ड को अपने में समा लेता है, वैसे ही गुरूदेव अपने विशाल हृदय में हर व्यक्ति का समावेश कर लेते हैं। इसलिए जो भी संपर्क में आता है, वो सदाबहार संबंध बना लेता है .... या यूं कहूं कि उन्हें भूला नहीं पाता .....।

आज इस आधुनिक युग में धर्म के प्रति निष्ठावान हर व्यक्ति के दिल में आध्यात्मिक जागृति उत्पन्न करने हेतु ऐसे व्यक्तित्व की आवश्यकता है।

अगणित गुणों से गुणान्वित जन-जन के हृदय सम्राट् गच्छाधिपति जिनवाणी को जगत में फैलाने का कार्य वृहद्संकल्प लेकर पूरे जगत को 'धर्म का मर्म' सरल शब्दों में समझाने का प्रयत्न कर रहे हैं। उनके अन्त:स्तल से निकले हृदयस्पर्शी प्रवचन को श्रवण कर श्रोताओं के मानस आध्यात्मिक आनंद से ओत-प्रोत हो उठते हैं। मन करता है कि सुमधुर ज्ञान की ये लहरियाँ अहर्निश अनहद नाद की भांति कानों में गूंजती रहें।

गुरूदेव श्री का गुणानुवाद करना सूर्य को दीपक बताने, सुविशाल सागर को अंजलि में लेकर बताने, स्वर्ण नगरी को मुद्रिका बनाने जैसा है। पूज्यश्री को गणाधीश पद से अधिवेष्टित होते हुए जान हमारे हृदय के अनिर्वचनीय आनंद का वर्णन न लेखनी द्वारा संभव है और न वाणी के द्वारा।

मेरे आराध्य गुरूदेव आध्यात्मिक क्षेत्र में उत्तरोत्तर इसी प्रकार प्रगति कर हमें दिशावबोध देते रहे, यही मंगलमय सद्भावना।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक
श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

गुरु वंदन...

आपके कुशल नेतृत्व में खरतरगच्छ संघ प्रगति करते रहे...

आपकी कृपादृष्टि हम पर सदा बनी रहे...

वंदनकर्त्ता

डॉ. यू. सी. जैन-लीला जैन, अजय-लीना,
संजय-शिप्रा, लषित, हर्षित, धृति, पार्थ जैन

27 'पदमदीप', पद्मिनी मार्ग,
उदयपुर-313003

अनुपम अनुशासक पूज्य गणाधीश

सुलोचना शिशु साध्वी प्रियरंजनाश्री

हे सुखसागर समुदाय के शिरोमणि।

आपश्री का जीवन गुणरूपी फूल से सुवासित है, सरलता, सरसता, सहृदयता, सौम्यता, सहिष्णुता आदि गुण आपमें समाये हुए हैं, उनमें से आठ गुण आप में विशेष है।

१. जैसे अन्दर वैसे बाहर- **''जहा अंतो तहा बाहि, जहा बाहि तहा अंतो''** आचारांग सूत्र के अनुसार आप जैसे अन्दर हैं, वैसे ही बाहर है। आपका जीवन पारदर्शी है, जिसमें कोई मालिन्य ही नहीं, दुराव और छिपाव जैसी मनोग्रन्थी आपमें अणुमात्र भी नहीं है।

2. **अनुपम अनुशासक-** आपके जीवन में कोमलता और कठोरता का विशाल संगम है। सभी के प्रति आपका बड़ा ही कोमल आत्मीयतापूर्ण सद्व्यवहार रहता है। किसी दु:खी को देखते ही आपके भीतर करूणा का स्रोत बह उठता है। उनके प्रति दयार्द्र हो जाते हैं। आप प्रेम के साथ अनुशासन करते हैं। प्रायश्चित या दण्ड में कमी नहीं, साथ ही आत्मीयता में भी कमी नहीं।

3. **संयम में सजगता-** संयम के प्रति हर पल सजगता व जागरूकता आपके रोम-रोम में विशेष रूप से समाहित है। जीवन के कण-कण में साधुता, ज्ञान और क्रिया का रस रमा हुआ है। जैसे नारियल में चिकनाई, पौष्टिकता समाई रहती है, उसी प्रकार आपके जीवन की प्रत्येक चर्या में साधना, परोपकारी वृत्ति, करूणा एवं कोमलता का माधुर्य और शक्ति भरी है। ''मुणिणो सया जागरंति'' के सूत्र को आपश्री ने जीवन में उतारा है। संयम के सिद्धांतों में किसी भी तरह का समझोता आपश्री को पसन्द नहीं है। कथनी और करनी में एकरूपता और आडम्बर रहित जीवन आपके प्रमुख गुण हैं।

4. **नियमितता-** चिन्तन, मनन, लेखन, पठन,

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक
श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से
विभूषित करने पर

गुरु वंदन...

वंदनकर्त्ता

शा. बाबुलाल लालण (सिद्धपुर वाले)

अध्यक्ष, जैन श्री संघ, धोरीमन्ना

पाठन आदि सभी धर्मक्रियाएँ ठीक समय पर करते हैं। संयम-साधना में भारण्ड पक्षी के समान सदा जागरूक और अप्रमत्त रहते हैं।

५. प्रवचन प्रभावकता- आपकी वाणी अनुभूति के आधार पर जीवन-सत्य को उद्घाटित करने वाली है। इसलिए वह वाणी जन-जीवन को सहज रुप से प्रभावित करती है। आपके वचन के साथ आचरण की ज्योति है। आपश्री प्रवचन गुण सम्पन्न होने के साथ तेजस्विता और ताजगी लिए हुए हैं।

6. निर्लोभी प्रवृति- आपश्री की आस्था प्रसिद्धि में नहीं, आत्म सिद्धि में है। आपश्री की अभिरूचि जनरंजन में नहीं, आत्मरंजन में है। आपश्री की भक्ति प्रतिष्ठा में नहीं, आत्मनिष्ठा में है। आपश्री का अनुगमन स्वयं के यशोगान में नहीं, अपितु भगवान प्राप्ति के अवधान में है।

7. देह सम्पदा- आपश्री के मुखमण्डल पर सर्वाधिक शासन है प्रसन्नता और सौम्यता का। आपश्री के नयनों में शासन है आत्मीयता और निर्विकारता का। आपश्री के ललाट पर शासन है तेजस्विता और कुलीनता का। आपश्री के हृदय में आसीन है करूणा और वैराग्य भाव। आपश्री के चरणों में विराजित है पुरूषार्थ और मंगल। आपश्री के हाथों में निवास है आशीर्वाद का। आपश्री की वाणी में विराजमान है जिनवाणी और जागृति का संदेश।

8. लक्ष्य के प्रति जागरूकता- आपश्री लक्ष्य के प्रति सतत जागृत हैं। जैसे बीज का लक्ष्य है विराट् वृक्ष बनने का, कली का लक्ष्य है फूल बन जाने का, वैसे ही आपश्री का लक्ष्य है- ' आत्मा से परमात्मा बनने का। इस लक्ष्य के आप बहुत निकट है- बस पग भरा और मुक्ति लक्ष्मी आपश्री के चरण चूमेगी।

मन की अंधियारी राहों पर करो किरण संचार,
जन-जन की पावन प्रज्ञा के खोलो आवृत्त द्वार।
उम्र हमारी सारी आपको समर्पित,
फूलों के मृदुहास लिए शासन करो वर्ष हजार।।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले
पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक
श्री सुखसागरजी म. के

परम पूज्य गुरुदेव

प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को **गणाधीश पद** से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...अभिनंदन

आपके कुशल नेतृत्व में
खरतरगच्छ संघ प्रगति करता रहे...

आपकी कृपादृष्टि गच्छ एवं
श्रीसंघ पर सदा बनी रहे...

वंदनकर्त्ता

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्रीसंघ दादावाडी मु. पचपदरा (राज.)

धर्मेश कुमा र चौपड़ा (कवास वाले)
अध्यक्ष
94141 08191

भगवानचन्द संकलेचा
महावीर कुमार संकलेचा
(9414107731)
उपाध्यक्ष

अशोककुमार ढेलड़िया
मंत्री
(94146 88896)

आनंद कुमार चौपड़ा
कोषाध्यक्ष
(94141 07933)

मनीषकुमार संकलेचा
रमेशकुमार कांकरीया
रमेशचंद ढेलड़िया
संयुक्त मंत्री

गोतमचन्द संकलेचा
ओमप्रकाश ढेलड़िया
चदंनमल चौपड़ा
संगठन मंत्री

संरक्षक : श्री विजयराजजी ढेलडिया, श्री धनराजजी चौपड़ा, श्री घिसुलालजी कांकरिया
श्री सुरेशचंदजी चौपड़ा, श्री शंकरलाल चौपड़ा

बहुमुखी प्रतिभा के धनी

साध्वी कनकप्रभाश्री

पू. गणाधीश मणिप्रभ सागर जी म.सा. ने जिनका शिष्यत्व स्वीकार किया वे स्वयं प्रतिभा के स्वामी, आगमों के ज्ञाता, भागवत् गीता, कुराण-पुराण, बाईबिल आदि षट्दर्शन के विज्ञाता थे, ऐसे प्रज्ञापुरूष सद्गुरू आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. ने अपनी विद्वत्ता ओजस्विता आदि का संक्रमण अपने शिष्य में किया, जिसके परिणाम स्वरूप आज आपश्री भी प्रज्ञा पुरूष के रूप में जिनशासन में खरतरगच्छ के दैदीप्यमान नक्षत्र हैं।

यह प्रज्ञा का ही प्रभाव हैं कि हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी आदि कई भाषाओं पर आपश्री ने अधिकार प्राप्त किया।

आपश्री की प्रेरणा एवं सान्निध्य में शताधिक दीक्षाएँ, प्रतिष्ठाएँ आदि कार्य सम्पन्न हुये, जिसमें सर्व प्रथम दीक्षा पूज्य श्री के वरदहस्तों से मेरी हुई, आप पर गुरूदेव की असीम कृपा रही, जिस कारण ही आप श्री मुनि पद से गणिपद, गणिपद से उपाध्याय पद एवं उपाध्याय पद से गणाधीश पद पर सुशोभित हुए।

आपश्री के गणाधीश पद पर प्रतिष्ठित होने पर हार्दिक बधाई देते हुये शुभकामनाएँ प्रेषित है कि आप दीर्घायु रहकर जिनशासन के सिरताज बने व संघ समाज की सेवाओं में आप निरन्तर अभिवृद्धि करते रहें।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन

लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक

श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को **गणाधीश पद** से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...

अभिनंदन

प्रेरणा : प. पू.बहिन

साध्वी श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी

स्व. शा. मिश्रीमलजी बोकड़िया

स्व. शा. बांडमलजी बोकड़िया

वंदनकर्त्ता

भंवरलाल, सोहनलाल, मांगीलाल, राकेशकुमार,

प्रवीणकुमार, राजीवकुमार, अंकितकुमार,

कमलेशकुमार, हृदय एवं समस्त बोकड़िया परिवार

श्री जसोल–मुंबई–अहमदाबाद–सूरत

गणाधीश का ताज... मोक्ष का साज...

हेमचरणरज साध्वी श्रद्धांजनाश्री
मुमुक्षु नीलिमा भंसाली

जिनकांति गुरू की आशीष,
बने खरतर के गणाधीश ।
सभी बने मोक्ष अधीश,
यही हम सबकी ख्वाईस ॥

कोयले का मजदूर कोयले की खान से कोयला निकालता है। वह सपने में भी कभी नहीं सोचता है कि मुझे कोयले की खान में से हीरे की प्राप्ति होगी। किन्तु किसी दिन अचानक कोयले की खान में से हीरा मिल जाय तो फिर उसकी किस्मत ही बदल जाती है ।

यह संसार भी कोयले की खान जैसा है, जो अज्ञान रूपी कालुष्य से भरा पड़ा है। संसार के भौतिक चकाचौंध और मौज-शौक के बीच मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि कोयले जैसी मेरी जिन्दगी में भी गुरू रूपी हीरे की प्राप्ति होगी। प्रबल पुण्योदय से वो हीरा मुझे मिल गया। वह हीरा है मेरे परम उपकारी पूज्य गुरूदेवश्री !

पूज्य गुरूदेवश्री की उदारता और सरलता के बारे में कितना लिखुं !

आपका हृदय सागर से गंभीर और चन्द्र से भी शीतल। सभी जीवों के हित-अहित सोचने वाले, मुझे इस संसार रूपी दावानल से निकालने वाले, इस कलिकाल में आपकी निश्रा मिलना किसी उपहार से कम नहीं है। जिस प्रकार मोर को मेघ के प्रति प्रीत होती है, मेघ को देखते ही वह नाचने लगता है, उसी प्रकार मेरा मन भी आपके दर्शन पाकर मोर की भाँति अति उल्लसित होता है ।

आपका नाम मात्र स्मरण करने से मेरा चित्त शांत-प्रशांत हो जाता है। आप मेरे जीवन में पारसमणि चिन्तामणि तुल्य है ।

आपश्री मुनि से गणि, गणि से उपाध्याय बने, इसी प्रकार क्रमशः सफलता की ओर अग्रसर होते हुए आज गणाधीश का ताज शिरोधार्य किया है। प्रसन्नता का कोई पारावार नहीं है ।

मेरी परमात्मा से एक ही प्रार्थना है कि यह गणाधीश का ताज एक दिन आपके लिए, मेरे लिए और सबके लिए मोक्ष का साज बन जाये ।

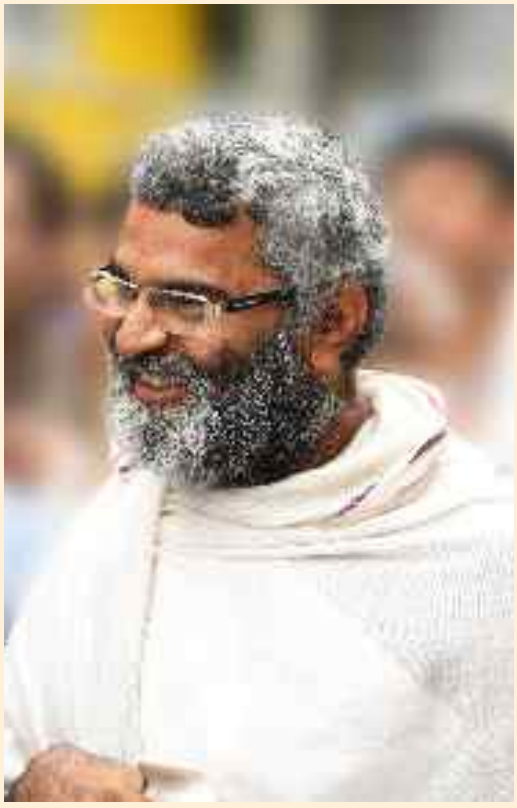

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

गुरु वंदन...

वंदनकर्त्ता

श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी-डुठारियाँ

स्टेशन सोमेसर, जिला पाली (राज.)

श्रद्धा का अभिषेक

विद्युत् चरणरज
साध्वी डॉ. नीलांजनाश्री

29 मई 2015 की शुभघडियों में परम पूज्य परम आराध्य, दीक्षा मंत्रप्रदाता गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. 'गणाधीश' पद पर आरूढ़ हुए है' यह उत्तम..... अनुत्तर संवाद जैसे ही मेरे कर्णपटलों से टकराया, रोम-रोम आनंद की फुहार से अभिस्नात हो गया। हृदय में खुशियों का सागर लहरा गया। खरतरगच्छ के क्षितिज पर एक नूतन सहस्रांशु के उदय से मनोमस्तिष्क अलौकिक उजाले से भर गया।

जिस गौरवशाली परम्परा के संस्थापक न्यायजगत् को 'प्रमालक्ष्म' जैसा अपूर्व पांडित्यपूर्ण ग्रंथराज उपहार देने वाले श्री जिनेश्वरसूरि हैं, जिस सुविहित परंपरा को नवांगी टीकाकार, स्थंभन पार्श्वनाथ तीर्थ प्रकटकर्ता अभयदेवसूरि, साधना के शिखर पुरूष, लक्षाधिक जैन निर्माता युगप्रधान दादागुरूदेव श्री जिनदत्तसूरि, आठ वर्ष की बालायु में आचार्य पद पर प्रतिष्ठित होने वाले मणिधारी दादा श्री जिनचंद्रसूरि, कलिकाल कल्पतरू दादा श्री जिनकुशलसूरि, अकबर प्रतिबोधक दादा श्री जिनचंद्रसूरि, अवधूत योगी श्री आनंदघनजी म., महान् द्रव्यानुयोगी वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र में केवली अवस्था में विचरण करने वाले श्री देवचंद्रजी म., अष्टलक्षी ग्रंथ कर्त्ता श्री समयसुंदरोपाध्याय जैसे अनेकानेक श्रुतधर महापुरूष विरासत में वरदान स्वरूप प्राप्त हुए है, उसी यशस्वी, वर्चस्वी, पुण्यशालिनी पट्टपरम्परा के ताज में एक और बेनमून-बेशकीमती 'मणि' जडित हुआ है परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमज्जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म. सा. के प्रधान शिष्य आत्मतेज के स्वामी, पूज्य उपाध्याय भगवंत श्री मणिप्रभ सागरजी म. सा. के रूप में।

निश्चय ही इस अपूर्व आह्लादकारी स्वर्णिम क्षण का आनंद अनिर्वचनीय और अप्रतिम है। समय की

अविरल धारा अनेक पडावों को तय करती हुई आज उस मुकाम तक पहुँची है, जब गच्छ, शासन, समाज और राष्ट्र को उपाध्यायश्री जैसे धुरन्धर, ज्योतिर्मय महानायक की उपलब्धि हुई है।

एक शिशु, जो अपने शैशव में नहीं जानता था कि संयोग और वियोग का क्या अर्थ होता है, सुख और दु:ख की परिभाषा क्या होती है, उसी अबोध बाल्यावस्था में उसे अपने पिता का अवसान सहना पड़ा। जिसने तुतलाती भाषा में अपनी 6 माह की बहिन नन्हीं सी गुडिया पर अपने छोटे-छोटे कोमल हाथों से स्नेह और सुरक्षा का छत्र प्रदान करते हुए पिता का दायित्व निभाया, जो माँ के कठोर अनुशासन में पला, वह 13 वर्षीय बालक

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक
श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

वंदन...

वंदनकर्त्ता

श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ
चौहटन (राजस्थान)

मीठालाल खाने-पीने, खेलने-कूदने की कोमल उम्र में फौलादी संकल्प की धनी माँ रोहिणी देवी एवं भोली-भाली निर्दोष हिरणी-सी बहिन विमला के साथ संयम के महापथ का पथिक बन गया।

नाम और वेश ही नहीं बदला बल्कि सब कुछ बदल गया।

जीवन...जीवन की दिशा, चिंतन ..... चिंतन का आधार, साथ ही करणीय भी बदल गया।

बालक मीठालाल से मुनि मणिप्रभ की यात्रा ने अपने अंतर्मन को साधना की ज्वाला में ऐसा झौंका कि वे सकल संघ द्वारा आज 'गच्छाधिपति' पद पर आरूढ किये गये हैं।

मेरा हृदय आज प्रणत है उस पितृशक्ति के प्रति, जो केवल नाम से ही पारस नहीं थे अपितु उस 'पारसमणि' का दिव्य संस्पर्श पाकर उनके अंशज-द्वय आज खरतरगच्छ के भाल पर 'मणि' और 'विद्युत्' के रूप में आलोकित हो रहे हैं। मेरा मन नतमस्तक है उस मातृशक्ति के प्रति, जिन्होंने अपने पति की चिर-जुदायी की ज्वाला में जलकर केवल आंसुओं की श्रद्धांजलि नहीं दी अपितु अपने प्राणेश्वर की निशानी स्वरूप दोनों पुष्पों का सुघड़ माली के रूप में सिंचन-संवर्द्धन करते हुए उनके प्रेम को जीवंत रखा। इतना ही नहीं, उस परम समर्पिता महानारी ने अपनी मोह ममता का त्याग कर जहाँ लौहमहिला का परिचय दिया, वहीं अपने कलेजे के टुकडे, आँखों के तारे को सर्वात्मना गुरूचरणों में समर्पित कर जिनशासन के प्रति अपनी परमनिष्ठा को भी अभिव्यक्त किया।

सृजनशिल्पी आचार्य श्री महापुण्यशाली थे कि उन्हें जीवन के छट्ठे दशक में ही सही, ऐसा अद्वितीय कोहीनूर हाथ लगा, जिसमें संघ के सरताज बनने की अगणित अर्हताएं छिपी हुई थी। एक छोटे से बीज में अनन्त संभावनाएं और क्षमताएं गर्भित है, परंतु उन्हें प्रकट करने वाले कृषि में संकल्प, तप और पुरूषार्थ रूप त्रिवेणी का सुनियोजित संगम हो तो एक ही बीज अनेकों का त्राणदाता, शरणदाता, आश्रयदाता और जीवनदाता बन जाता है। कुछ ऐसा ही चमत्कार बाल मीठालाल के जीवन में घटित हुआ।

संयमी जीवन में प्रवेश करने से पूर्व 9वीं कक्षा तक स्कूली शिक्षा ग्रहण करनेवाले मीठालाल का मस्तिष्क कम्प्यूटर सी तेजगति से चलता था। पूर्व जन्म की साधना के परिणाम स्वरूप बचपन से ही क्षयोपशम बल इतना तीव्र था कि किसी भी विषय को मात्र दो चार बार पढता और वह ज्यों का त्यों दिमाग की डायरी में नोट हो जाता। बालमन खेलकूद-प्रिय होने पर भी परीक्षा में वह सदैव अव्वल दर्जे का विद्यार्थी ही होता था। अपनी इस प्रखर मेधा का परिचय जब मीठालाल ने मात्र एक ही दिन में संपूर्ण बृहत्शांति सुनाकर दिया तो आचार्य श्री आनन्दमिश्रित अचरज से भर गये। ऐसी तीक्ष्ण प्रतिभा ..... ऐसी विलक्षण स्मरण शक्ति .....। अध्ययन की प्रतिबद्धता और मन की एकाग्रता ने उन्हें उस बालक की सामान्य काया में छिपी हुई किसी दिव्य और विराट् विभूति के दर्शन करा दिये।

भाग्य विधाता आचार्य श्री की पारखी नजरों ने बाल मीठालाल को केवल 'मणिप्रभ' नाम ही नहीं दिया अपितु उसे समग्र श्रेष्ठताओं के पुंज, अलौकिक व्यक्तित्व और शासन को प्रकाशमान करने वाली 'मणि' के रूप में तराशने का वज्र संकल्प किया। यद्यपि पाषाण खंड में से प्रतिमा का निर्माण जितना सरल है, सामान्य मानव में से महामानव का निर्माण उतना ही मुश्किल है परंतु आचार्य श्री के संपूर्ण जीवन की साधना का ही यह परिणाम था कि उन्हें ऐसा परम विनीत-आज्ञांकित और अनुशासित शिष्य मिला, जिसने कडक अनुशासन के पहरे में ज्ञान साधना करते हुए अपनी असाधारण प्रतिभा के अनावृत्त द्वारों को उद्घाटित किया।

आचार्य श्री यद्यपि हृदय से कठोर नहीं थे परंतु कठोर अनुशासन के प्रतिष्ठाता थे। उनका हृदय जितना मृदु और स्निग्ध था, अध्यापन के संदर्भ में वे उतने ही रूक्ष थे। शिष्य की अस्फुटित प्रज्ञा को प्रस्फुटित करने के लिये

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक
श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

गुरुवंदन...

वंदनकर्त्ता

शा.सुगनचन्द राजेशकुमार बरडिया

ब्रह्मसर - चैन्नई

Firm

Sunshine Products

25/1, Narayan Mudali Street
1st Floor, CHENNAI-600079

उन्होंने स्वयं को भी उतना ही तपाया, जितना शिष्य को तपाया। प्रात: 3 बजे उठकर जप-ध्यानादि सम्पन्न करते। पश्चात् 4 बजे से बालमुनि को गाथाएँ कंठस्थ करवाने के लिये स्वयं भी सजग प्रहरी की तरह उसके निकट बैठे रहते। इस दौरान मुनि की हल्की सी भी अन्यमनस्कता या लापरवाही उन्हें रोष से भर सकती थी।

गुरू म. कर्मयोगी बनकर किस प्रकार उन्हें अध्ययन करवाते और छोटी सी भूल के लिये कैसे दण्डित करते, इसका भाववाही वर्णन तो उपाध्यायश्री स्वयं गुरू सप्तमी पर्व के दिन अवश्य करते है-दीक्षित होते ही अध्ययन का सुनिश्चित कार्यक्रम था, उस अनुरूप प्रात: 4 बजे उठकर गाथाएं सुनाने के बाद ही नवकारसी नसीब होती थी। बालमुनि अभी नवदीक्षित ही थे अत: संयम और अनुशासन की मर्यादाओं में ढलने के लिये कुछ समय की अपेक्षा भी थी। परंतु समयज्ञ गुरूदेव तो प्रथम क्षण से ही मुनि की चिहुँमुखी प्रतिभा का विकास करना चाहते थे। उसमें उन्हें किसी प्रकार का विलंब काम्य न था। कोमल लता को ही यथेष्ट आकार दिया जा सकता है, ठूंठ को नहीं-इस मनोविज्ञान से भी वे सुपरिचित थे। अत: नित्यक्रम यथावत् गतिमान् था कि एक दिन बालमन में कुचमादी सूझी। सर्दी का समय .... शीत की ठिठूरन ..... उनींदी आँखे .... कम्बली में दुबकने को आतुर मन। गाथाएँ बहुत रटने पर भी याद ही नहीं हो रही थी। पर गाथा न सुनाई तो नवकारसी भी नहीं मिलने वाली थी। तो क्या करूँ ..... इस दुविधा से निजात पाने के लिये योजना बनाई। ज्ञान भंडार में से उसी पाठवाली दूसरी पुस्तक निकाल लाये। गाथा सुनाने बैठे तब अपनी पुस्तक गुरू म. के हाथों में थमा दी। और दूसरी पुस्तक अपनी कम्बली में छुपा दी। पट्ट पर बिराजमान गुरूदेव गाथा सुन रहे थे और पट्ट के नीचे ही गुरूचरणों से अपना मस्तक सटाकर बालमुनि गाथा सुनाए जा रहे थे। कम्बली में छुपी पुस्तक अब धीमे से पाट के नीचे खुल गयी थी। एक के बाद एक सडसडाट 15-20-25-30 गाथाएँ पूरी हो गयी। पर चूंकि पुस्तक से देखकर ही पाठ सुनाया जा रहा था तो ध्यान चूक गये कि पाठ कहाँ तक सुनाना है। गुरू म. भी अविराम गति से गाथा सुना रहे शिष्य की अद्‌भुत स्मरण शक्ति पर न्यौंच्छावर हुए जा रहे थे, साथ ही लाड से उसके मस्तक पर वात्सल्य से हाथ भी फिराते जा रहे थे। रफ्तार से दौडती गाडी जब सीमा पार कर गयी तो गुरू म. एकदम चौंके-अरे! पाठ जितना दिया था, उसके आगे की भी 10 गाथा यह सुना चुका है। क्या बात है?अचानक मस्तक पर फिरती अंगुलियों ने मजबूती से केशराशि को पकड़कर माथा उंचा किया और पाट के नीचे झांका तो पल भर के लिये वे स्तब्ध रह गये! ऐसी चोरी ..... ?लालबुंद चेहरे पर क्रोध की तीव्र रेखाएं उपस गयी।

बालमुनि तो मारे भय के सूखी लकडी की भांति थर-थर कांपने लगे। पूरे शरीर में पसीने की ठंडी लहर दौड गयी। चेहरा यूं निस्तेज हो गया जैसे किसी ने खून निचोड लिया हो। भूल तो हुई ही थी परंतु वह इस प्रकार अप्रत्याशित रूप से गुरू म. के दृष्टिपथ में आ जायेगी, इसकी तो लेशमात्र भी कल्पना नहीं की थी।

और तभी सिंहगर्जना के साथ गुरू म. का भारी-भरकम वजनदार हाथ हवा में लहराया और एक जन्नाटेदार चाँटा बालमुनि के कोमल गाल पर पड़ गया। 'सटाक्' की धमाकेदार आवाज से हरि विहार का पूरा परिसर गूंज उठा।

इस घटना की दिव्य विवेचना करते हुए उपाध्याय श्री की आँखों के किनारे आज भी गीले हो जाते है। गला अवरूद्ध हो जाता है। वाणी नि:शब्द हो जाती है। गुरू म. के अनगिनत उपकारों का स्मरण करते हुए उनका रोम-रोम गुरूभक्ति से जैसे रोमांचित हो उठता है। वे फरमाते है- वह थप्पड मेरे गुरू म. का अमर कृपा प्रसाद और महान् पुरस्कार था, जिसकी झंकार मैं आज भी महसूस करता हूँ। यद्यपि संयमी जीवन का वह प्रथम अपराध था परंतु उन्होंने दंड देकर उसे अंतिम ही नहीं बनाया अपितु अपराधों की श्रृंखला को ही समाप्त कर दिया। उस एक थप्पड ने मेरे जीवन की दिशा ही नहीं

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक
श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में
मोकलसर मणि
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी

म.सा.

को गणाधीश पद
से विभूषित करने पर

वंदन...

वंदनकर्त्ता

श्री शीतलनाथ भगवान एवं दादा जिनकुशल सूरि दादावाडी ट्रस्ट

मैन रोड़, पो. पादरु–344501, जिला बाड़मेर (राजस्थान)

कैलाश संखलेचा	नेमिचन्द कटारिया	पुखराज तातेड़
अध्यक्ष	मंत्री	सह मंत्री

मोहनलाल गोलेच्छा	भीखचन्दजी गोलेच्छा
कोषाध्यक्ष	सह कोषाध्यक्ष

(Regd. Office : 75, N. N. Street, Chennai-3, (M) 9841085511)

बदली बल्कि मेरे जीवन में विकास की सारी दिशाएं खोल दी।

गुरूदेव की निश्रा में बालमुनि का अध्ययन गुरूकुलवास की भांति ही हुआ। समय पर उठना, पाठ सुनाना, पुनरावर्त्तन करना, व्याकरण-काव्य-कोष-ज्योतिष आदि पढना, गौचरी आदि क्रियाएँ सम्पन्न करना, अति आवश्यक कार्य के अतिरिक्त किसी भी गृहस्थ / श्रावक से वार्त्तालाप या परिचय न करना-आदि अनुशासनबद्ध तयशुदा दैनिक कार्यक्रम होता था। बालमुनि भी सर्वतोभावेन समर्पित होकर ज्ञानयज्ञ में स्वयं को तपा रहे थे। यद्यपि यह अग्नि परीक्षा बहुत ही कठोर थी परंतु कसौटी भी तो सोने की ही होती है। सोना सौ टंच खरा था अत: उसकी कांति गुणानुगुणित होकर निखार पा रही थी।

अध्ययन के अतिरिक्त समय में गुरूदेव वात्सल्य और ममत्व से परिपूर्ण होते थे। हास-परिहास, विनोद-वार्त्तालाप, गच्छ के इतिहास की रोचक जानकारियाँ, अपने अनुभवों का निचोड देकर वे अतिरिक्त समय का भी सदुपयोग कर लेते। कई बार बालसुलभ चेष्टाओं के तहत सामान्य त्रुटि पर गुरू म. यदि रोष करते तो पू. दर्शनसागरजी म. ढ़ाल बनकर उनका बचाव कर लेते। दो वृद्ध व्यक्तित्व -पू. आचार्य श्री एवं पू. दर्शन सागरजी म. के बीच एकाकी मृगछौना-सलोना शिष्य मणि के वदन पर कभी उदासी या बोरियत की परत नहीं आयी क्योंकि आचार्य श्री बालमनोविज्ञान में भी भलीभांति निष्णात थे। वे जानते थे कि केवल अनुशासन ही बरता तो बालमन दब्बू, कुंठित या विद्रोही बन सकता है। वहीं केवल प्रेम और वात्सल्य ही बरसाया तो बालक स्वच्छंदी, उद्दंड या उच्छ्रंखल भी बन सकता है। एक पौधे को खिलाने या संपोषित करने में जहाँ पानी की पर्याप्त रसधार और मन्दवायु की शीतल बहार चाहिए, वहीं प्रकाश की तपन भी उतनी ही अपेक्षित है।

कुछ ऐसा ही त्रिवेणी संगम था आचार्य श्री के उपपात में कि वह सुकोमल पौधा खिलता गया, वृद्धिंगत होता गया, प्रसरित होता गया ज्ञान-विज्ञान की शत-सहस्र शाखाओं के साथ ...अनेकानेक उज्ज्वल गुण रूपी फलों की सौंदर्य संपदा के साथ।

कुशल कृतिकार ..... सशक्त सर्जनहार अपनी इस अनुपमेय, अनमोल कृति को निहार कर निहाल हो गये, जो आत्मिक विकास के साथ उम्र के सोपान पार करता हुआ बालमुनि से तरूण तपस्वी और युवा मनीषी के रूप में शासन का कर्णधार और संघ का स्वर्णिम भविष्य बनकर प्रतिपल गुर्वाज्ञा की आराधना में तल्लीन था। ज्ञानपुंज युवामुनि की कार्य-कुशलता, आज्ञा-पालन में तत्परता, प्रतिकूलता में सहिष्णुता, अदम्य साहसिकता अनूठी थी। उनकी ज्ञान संपदा के साथ सौंदर्य-संपदा जहाँ मध्याह्न के सूर्य की भांति चमकने लगी, वहीं मिष्ट, सौम्य, शालीन और मर्यादित विनम्र व्यवहार की शीतलता ने चंद्रमा की चांदनी को भी परास्त कर दिया।

अब आचार्य श्री की निश्रा में आयोजित होने वाले प्रत्येक कार्यक्रम, चाहे प्रतिष्ठा हो या दीक्षा, उपधान हो या पदयात्रा संघ, उसको सम्यग् रूप से संचालित करने में युवामुनि की भूमिका मुख्य सूत्रधार की होती थी। उनकी दृष्टि इतनी गहरी, सटीक, सामयिक और दूरदर्शी होती थी कि हर व्यक्ति यदि आचार्य श्री से परामर्श अथवा मार्गदर्शन लेने आता तो उनका संकेत अपने प्रिय एवं सुयोग्य शिष्य 'मणि' की ओर ही होता। आचार्य श्री को अपने शिष्य की वैचारिक प्रौढता और निर्णायक क्षमता पर इतना भरोसा था कि वे अपने जीवनकाल में ही संघीय दायित्व उनके सुडौल-मजबूत कंधों पर डालकर निर्भार से हो गये थे।

घटना सन् 1983 की है। कलिकाल कल्पतरू, भक्तों के हृदयसम्राट् दादागुरूदेव श्री जिनकुशलसूरि की पावन जन्मस्थली सिवाना में सप्तम शताब्दि समारोह, शतायु अभिनंदन समारोह एवं छह कुमारिकाओं की भागवती दीक्षा का ऐतिहासिक समारोह विराट् स्तर पर आयोजित था। संघ स्थविर, ऋजुमना आचार्य श्री जिनउदयसागरसूरि, युगप्रभावक प्रज्ञापुरूष आचार्य श्री जिनकांतिसागर सूरि जैसे दो-दो आचार्य भगवन्तों की

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन

लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को **गणाधीश पद** से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन... अभिनंदन

आपके कुशल नेतृत्व में
खरतरगच्छ संघ प्रगति करता रहे...

आपकी कृपादृष्टि गच्छ एवं
श्रीसंघ पर सदा बनी रहे...

वंदनकर्त्ता

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ (रजि.) जयपुर

शिवजीराम भवन, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

श्री जिन कुशल सूरि दादावाड़ी, मालपुरा

कुशलचंद सुराणा
अध्यक्ष

अनूप पारख
मंत्री

पुण्यदायी निश्रा एवं बडी संख्या में श्रमण-श्रमणी मंडल की उपस्थिति। सिवाना नगर में आनंद और उल्लास चरम सीमा पर था। गांव का हर व्यक्ति सन्त-सान्निध्य की खुश्बू से जैसे बौराया सा लग रहा था।

युवामुनि जितने गुरू म. के कृपापात्र थे, उतने ही आचार्य श्री जिनउदयसागरसूरि के प्रीतिपात्र थे। गुरूजनों के मन को विनय और नम्रता से कैसे जीतना, यह अपूर्व कला तो उनके भीतर जन्मजात ही समायी हुई थी।

सिवाना मोकलसर से एकदम समीप ही है। चूंकि रिश्ते से मेरी भुआ भी दीक्षा ले रही थी अत: उस भव्य समारोह में सम्मिलित होने का अवसर मुझे भी मिला था। यद्यपि मेरा डेढ वर्ष तक का अबोध बचपन इस त्रिपुटी (माताजी म., भाई म., बहिन म.) की स्नेहभरी गोद में ही बीता था परंतु मेरी बौद्धिक चेतना विकसित हो, उससे पहले ही ये तीनों दीक्षित ही चुके थे। समझ आने के बाद आज मैं पहली बार अपने भाई म. के दर्शन कर रही थी। मुझे जैसे ही उन्होंने सस्मित 'मुन्नी! कैसे हो?' कहकर पुकारा था, मेरे भीतर आनंद की अमीधार फूट पडी थी। 'ये मेरे भाई म. सा. है' इस बात का आत्मीय और अलौकिक गौरव मेरी ललाट पर सूर्य के तेज की भांति दपदपा रहा था।

उस समय मैंने उन्हें जिस रूप में देखा था, वह शाब्दिक रेखाचित्र कुछ उस प्रकार का था- गेहूँआ वर्ण, मध्यम कद, तेजोद्दीप्त- उन्नत ललाट, काले घुंघराले घने बाल, देदिप्यमान सौम्य मुखमंडल, विशाल वक्षस्थल, पारदर्शी नयनयुगल, विकसित कर्णयुगल, अधरों पर बिखरता महीन हास्य, धीर-गंभीर चाल। उनका बाह्य व्यक्तित्व जितना आकर्षक था, आंतरिक व्यक्तित्व उतना ही मनोहारी और लुभावना था। मृदु-मधुर भाषा, नपे-तुले शब्द, मिष्ट-संतुलित व्यवहार, संयत-मर्यादित आचार, अध्यात्म से अनुप्राणित विचार, स्फटिक सा उज्ज्वल तार्किक चिंतन, सम्मोहक उद्बोधन शैली आदि अनेक आभ्यन्तर गुणों की संपदा पाकर वे और अधिक नम्रीभूत हो उठे थे। अस्तु!

भव्यता से आयोजित इस शताब्दि समारोह में राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री सहित अनेक बडे-बडे अधिकारीयों का भी आगमन हुआ था। इस संपूर्ण समारोह की बागडोर युवामुनि के सधे हाथों ने थाम ली थी। आत्मविश्वास से लबरेज मुनिश्री की सफल प्रशासनिक प्रतिभा से गुरूजन जितने मंत्रमुग्ध थे, संघ के उज्ज्वल भविष्य के प्रति आश्वस्त भी।

छोटी उम्र में उनकी बेजोड निर्णायक क्षमता का जीवंत प्रमाण है-विश्व का प्रथम जहाज मंदिर। आचार्य श्री का सिवाना में अंतिम चातुर्मास सम्पन्न कर जीवाणा की ओर विहार ..... इसी बीच मांडवला में अकल्पित महाप्रयाण .....। प्राणदेवता, परमाराध्य गुरूदेव की आकस्मिक विदायी। जिन्होंने एक आंख से गुरू का दायित्व निभाया तो दूसरी आंख से पिता का स्नेह बरसाया, जिस वट वृक्ष की शीतल-सघन छांव में 12 वर्ष का समय निश्चिन्तता के साथ बिताया, वह तपती धूप में बिलखता छोडकर अचानक आज धराशायी हो गया। शिष्य मंडल के साथ पूरा धर्मसंघ शोक सागर में डूब गया। उन हृदय विदारक क्षणों में 26 वर्षीय युवामुनि की अविचल-अविकल, धीर-गंभीर मन: स्थिति अनुभव प्रवणता और स्थितप्रज्ञता का बोध करवा रही थी।

काल के इस क्रूर प्रहार को उनके चट्टान से मजबूत कंधों ने झेला ही नहीं अपितू उन किंकर्त्तव्यविमूढ और गहरे विषाद के क्षणों में भी उन्होंने विवेक और सन्तुलन की डोर को थामे रखा। उस अनजाने क्षेत्र में सहसा आ पड़ी विपदा को झेलते हुए अग्निसंस्कार की पूर्व रात्रि में विशाल स्मारक निर्माण की घोषणा करते हुए उन्होंने अपनी निर्णायक क्षमता और समयज्ञता का परिचय दिया।

देखते-देखते वह स्वप्निल कल्पना साकार बनी और उसी अग्निसंस्कार स्थल पर बेनमून शिल्पकला के साथ अवतरित हुआ जहाज मंदिर तीर्थ। पूज्य गुरूदेव की पावन स्मृति को समर्पित यह तीर्थ शिष्य के अकथ पुरूषार्थ की जीवन्त कहानी है। इसी श्रृंखला में- मयूर

जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन... अभिनंदन

वंदनकर्त्ता

धर्मेन्द्र बोहरा – 98290 22408

श्री एस. कम्प्युटर सेन्टर, जोधपुर

जिनकी आत्मा को चरणों की जरुरत नहीं...
और बाहरी चमन को नजर की जरुरत नहीं...
इनकी तारिफ में हम क्या शब्द बयां करें
जो सुरज खुद है उन्हें उजालों की जरुरत नहीं...

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

अंतर मन से हार्दिक शुभकामनाएँ...

अभिवंदना...

वंदनकर्त्ता

विपुल चारण (भिंयाड) अहमदाबाद

मंदिर, कलश मंदिर, गज मंदिर, राजहंस मंदिर, सुघोषा घंट मंदिर, कच्छप मंदिर आदि भी स्वप्नशिल्पी मानस के धनी पूज्यवर की कमनीय कल्पनाओं की ही उपज है।

पूज्य श्री की प्रशासनिक क्षमता जितनी बेजोड है, उससे भी कई गुणा अद्‌भुत है उनकी वक्तृत्व कला। गूढ दार्शनिक गुत्थियों का विश्लेषण इतना रोचक, सरस और भावपूर्ण होता है, जैसे कल-कल बहती मंदाकिनी की अमृतधार हो। यह धार कभी मेघ की तरह गरजती है तो कभी बिजली की तरह कडकती है। कभी वर्षा की तरह बरसती है तो कभी गंगा की तरह शांत और मंद-मंद बहती है। अन्धविश्वास, रूढिवाद, सामाजिक कुरीतियों पर जब वे प्रहार करते है तो ऐसा लगता है जैसे सेनापति संपूर्ण सेना को सम्यक दिशा में संचालित कर रहा हो। मां की ममता जहाँ अश्रुकणों को छलकाती है, वहीं पिता का दायित्व और कर्त्तव्यबोध हृत्तंत्री में अभिनव प्राण फूंकता है। शरीर की नश्वरता, संसार की असारता का स्वरूप तो इतना सटीक और जीवन्त होता है कि श्रोता वैराग्य की रसधार में आकंठ उन्मज्जन-निमज्जन करता हुआ सा प्रतीत होता है। इन सभी उतार-चढाव में भी पकड इतनी मजबूत होती है कि श्रोता में किसी अन्य विचार या भाव को अवकाश ही नहीं रहता।

प्रवचन के साथ लेखन का भी उनको वरदान है। चाहे गद्यात्मक हो या पद्यात्मक, उनकी निर्भीक किंतु सरस लेखनी साधिकार चलती है। गद्य लेखनी जितनी भावप्रवण और सजीव है, उतनी ही मंजी हुई और कसावट भरी है। उसमें कहीं पिष्ट-पेषण नहीं , तो कहीं उबाउपन भी नहीं।

चूंकि वे एक भावनाशील संत है अत: उनकी सुकोमल भावनाएं काव्य-सलिला के रूप में भी प्रवाहित होती है। चैत्यवंदन, स्तवन, स्तुति, सज्झाय, चौबीसी, रास, भक्तिगीत, उपदेशक गीत, मुक्तक, अनेक पंच कल्याणक एवं वास्तुक आदि पूजाएं, अनेक महापुरूषों पर इक्कीसा-इकतीसा-चालीसा आदि पद्य की अनेक विधाओं में उनकी रचनाएं हैं, जिसमें उनकी भक्त चेतना और समर्पण की अनुगूंज स्पष्ट प्रतिबिंबित होती है। इस प्रकार वे प्रखर वक्ता, सरस निर्भीक लेखक, सफल अध्यापक, आशु चिंतक, आशुकवि आदि अनेक गुण मणियों से सहज रूप से मंडित है।

अध्यापन कला तो कोई उनसे सीखे। स्पर्शित-अस्पर्शित प्रत्येक विषय पढाने में वे परम प्रवीण और पारंगत है। पढने वाला पाबंद हो या प्रमादी, प्रज्ञावान् हो या मन्दबुद्धि-प्रत्येक विद्यार्थी को वो उतने ही प्रेम से ज्ञानदान करते है। किसी भी समय जाओं, कोई बहाना नहीं होता।

वेशत: संत होने के साथ स्वभाव से भी उतने ही कोमल और भावुक है। किसी भी काम के लिये कहे, इंकार तो वे कर ही नहीं सकते। विहार की थकान हो या शारीरिक प्रतिकूलता-अगर कोई सामान्य सा आग्रह या निवेदन कर ले तो वे तुरंत उसके आवास पर ही नहीं 10-20 उंची मंजिल पर भी पधार जाते है।

अभी इचलकरंजी की ताजा घटना है- चातुर्मास जब पूर्णता की ओर गतिमान् था, तब दूर-दूर की कोलोनियों में पदार्पण हेतु निवेदन हुआ। चूंकि पूर्णिमा से छ:रि पालित संघ निमित्त से कार्यक्रम प्रारंभ हो रहा था अत: त्रयोदशी के दिन 3 कि.मी. दूर नाकोडा कोलोनी में प्रात: प्रवचन देकर वहाँ गोचरी की ही थी कि कापड मार्केट-बोहरा मार्केट से भी आग्रह हुआ। समय की अल्पता देखकर दोपहर की खरी धूप में 2 बजे 5 कि.मी. दूर कापड मार्केट पधारकर प्रवचन ही नहीं दिया, वहाँ घर-घर में पगले भी किये। घरवाले बाहर आये तब तक तो अंदर गये कि बाहर .....। फिर भी झुंझलाहट दूर-दूर तक नहीं, संध्या गोचरी तो हुई ही नहीं पर पानी भी बीच में ही वापर लिया। सभी यह देखकर दंग थे कि हमारे बापजीसा कितने सीधे-सरल है।

इचलकरंजी चातुर्मास में ही रायपुर-छत्तीसगढ संघ का आग्रहपूर्ण निवेदन स्वीकार करते हुए चातुर्मास का आश्वासन दे दिया था। तथापि इस चातुर्मास में

परम पूज्य गुरुदेव

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद

से विभूषित करने पर

हार्दिकवंदन....अभिनन्दन

आपकी कृपादृष्टि गच्छ एवं
श्रीसंघ पर सदा बनी रहे.....

वंदनकर्ता

पारसमल-चन्दा देवी, विकास कुमार-विद्या देवी, आकाश कुमार-जयश्री
धैर्य, लक्षिता, हर्षित, रक्षित खजांची, जयपुर

स्वास्तिक टाईल्स, जयपुर
8107787661, 0141-2350138

परम पूज्य उपकारी गुरुदेव
उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
को गणाधीश पद विभूषण के अवसर
पर कोटि कोटि वंदना

वंदनकर्त्ता

धनपत भंवरलालजी कानुंगो (बोथरा)
सांचोर

KANUNGO STEEL CENTRE
10, Shiv kutir, Gr. Floor, Shop no. 1
8th Khetwadi Lane, MUMBAI-400004
Ph. (022) 66363004, 66518800 Cell : 09829165750
E-mail : info@kanungosteel.com/ dhanpatkanungo@hotmail.com

प्रतिष्ठा-दीक्षादि कार्यक्रम सम्पन्न करवाने की जितनी भी विनंतियाँ हुई, उन्होंने किसी को भी निराश नहीं किया। कहाँ इचलकरंजी.... कहाँ कन्याकुमारी.... कहाँ चेन्नई .... और कहाँ रायपुर। इस बीच हुबली, बेंगलोर, कोयम्बतुर, ईरोड़, तिरूपुर आदि अनेक संघों के कार्यक्रम। उग्रविहार.. ... भीषण गर्मी..... लंबी दूरी .... शारीरिक प्रतिकूलता.... तथापि उन्होंने अपनी विशिष्ट प्रबंधन शैली से सभी कार्यक्रमों को ऐतिहासिक अंजाम ही नहीं दिया अपितु उसकी सफलता में चार चांद लगा दिये। निश्चय ही उनकी यह तपस्विता संघनिष्ठा की वह ऊंची मीनार है, जो उनके अदम्य पुरूषार्थ की यशोगाथा दिग्दिगंत में गाती हुई सी प्रतीत होती है।

उनके आसपास लोगों का मेला शहर-नगर में ही नहीं, जंगल में भी उतना ही होता है। सतत विहार से उपजी थकान फिर भी क्लान्त नहीं होते। आगंतुको की इतनी भीड कि पलभर भी विश्रान्त नहीं होते फिर भी सद्य विकसित फूल की भांति तरोताजा होता है उनका मुखमंडल। वार्त्तालाप भले दो लाईन में ही करें पर वे इतनी मीठी और अपनत्व से भरपूर होती है कि आगंतुक आत्मीयता से सराबोर ही नहीं होता, धन्य-धन्य हो जाता है।

कभी-कभी तो मुझे उनसे बहुत ईर्ष्या होने लगती है कि ऐसा ही मितभाषिता का व्यवहार हम भी आम जनता से करें पर रिजल्ट उल्टा ही आता है। कम बोले तो टिप्पणी तैयार है -महाराज घमंडी है, और ज्यादा वार्त्तालाप करें तो म. तो बातूनी है। जनता का यह उलटबांसी व्यवहार तो मेरी समझ से परे है ही पर हर व्यवहार में उनकी यशस्विता भी समझ से परे ही लगती है।

इसका समाधान जब मैं बहिन म.सा. से मांगती हूँ तो वे मुझे पूर्ण रूप से समाहित कर देते हैं कि उनकी पूर्व जन्मों की साधना जितनी गहरी है, यशरेखा भी उतनी ही लंबी-चौडी है। उनके पुण्य की सुगंध से लोग भौंरे की तरह खिंचे चले आते है तथापि उनके अंदर एक विशिष्ट और अद्‌भुत गुण है-आग्रह मुक्त विचार। किसी भी व्यक्ति को लेकर वे अपने मन में पूर्वाग्रह या हठाग्रह नहीं पालते। मिलन से पूर्व किसी भी व्यक्ति के बारे में कुछ भी सुना हो पर वर्त्तमान क्षणों में वे उतनी ही सहजता और निश्छलता से रूबरू हो जाते हैं। उस वार्त्तालाप में न व्यंग्य होता है, न कटाक्ष। इसे ऐसा कत्तई न समझे कि वे प्रपंच या दोगलापन करते है बल्कि यह उनके हृदय की उदात्तता और स्वभाव की गंभीरता ही है कि वे जानकर भी अनजान-निर्लिप्त-निस्पृह बने रहते है। या इसे उनकी साधुता कहे कि वे किसी को कुछ कटु जताकर या कहकर न दु:खी करना चाहते है, न अपराध बोध से ग्रसित। उनकी यह अनाग्रही विचारधारा उनके आसपास एक ऊर्जामय आभामंडल का निर्माण करती है। इसिलिये हर व्यक्ति उनके सान्निध्य में पहुँचकर जहाँ अलौकिक आनंद से भर उठता है, वहीं उनसे किसी अज्ञात किंतु आत्मीय संबंधों की सौंधी खुश्बू से महक उठता है।

अगणित श्रेष्ठताओं के पर्याय होने पर भी वे सदा विनम्र और सहज संतत्व की आभा से आलोकित है। उनकी निरपेक्षता और निस्पृहता तो इतनी उच्चकोटि की है कि कभी-कभी तो उन्हें देखकर सोचती हूँ कि इन्हें अनासक्त योगी कहूं या सहजयोगी। कर्मयोगी कहूं या धर्मयोगी। वातावरण कितना ही विषाक्त और विवादों से भरा हो, उनके शान्त हृदय सागर में क्रोध-रोष-आक्रोश या तनाव की कोई तरंग नहीं उठती। उनके मन का वह समाधि भाव तो सिद्धयोगी को भी दुर्लभ सा जान पडता है।

परमेष्ठी मंत्र के चतुर्थ पद आरूढ होने पर भी अभिमान किं वा दंभ की बारीक सी रेखा भी उनके व्यक्तित्व का स्पर्श नहीं कर पायी है। मुझे परम विश्वास है कि गणाधिपति पद पाकर भी आप पूर्ववत् निस्पृह-निर्लेप बने रहेंगे। आपकी उज्ज्वल ज्योति से सकल संघ को नया आलोक मिलेगा ।

गणाधीश पद से नवाजने की इस स्वर्णिम-शुभवेला में संघपुरुष चिरायु-चिरंजीवी हो, यही मंगलकामना।

लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य
पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म.
के समुदाय में
प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्यरत्न
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
को गणाधीश पद
से विभूषित करने पर
हार्दिक वंदन... अभिनंदन
प्रेरणा
प. पू. साध्वी श्री
विमलप्रभाश्रीजी म.सा.
विनंति
शा. रामरतन, प्रकाश, अजय, विजय, दिव्यांशु, जिम्यांसू
बेटा–पोता नारायणदासजी छाजेड़, केशवणा – मुंबई
RAMRATAN NARAYANDAAS JI CHHAJED
J. K. ENTERPRISES
Shop No. 2, Patilend Road,Apt. Bhagat Singh Road,
Near Muncipal Office, DOMBIVELI (E) MUMBAI - 421201

निर्मलता के निर्झर

विद्युत् चरण रज साध्वी नीतिप्रज्ञाश्री

जिनकी एक मुस्कान सारी थकान को दूर कर देती है, जिनकी पवित्र वाणी जन-जन को ऊर्जावान बना देती है, जिनकी उत्कृष्ट साधना हर व्यक्ति पर अमिट प्रभाव की रेखाए अंकित कर देती है, जिनका प्रखर पराक्रम प्राणवत्ता का संचार कर देता है, जिनका पुनीत आभा-मंडल आस-पास के वातावरण को सहज ही ऊर्जा से अनुप्राणित कर देता हैं, ऐसे खरतरगच्छ के कोहिनूर पूज्य गुरूदेव उपाध्याय भगवंत श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. गच्छाधिपति पद पर आरूढ हुए है। मेरा रोम-रोम इन क्षणों में आह्लाद से नृत्य कर रहा है, आनंद से झूम रहा है।

गुरूदेव आज जिस उच्च पद पर बिराजमान हुए है, इन क्षणों में मेरा मन उस अतीत में छलांग लगा रहा है, जब मैंने उन्हें अपनी जन्मभूमि में युवामुनि के रूप में सांचौर में प्रथम बार देखा था।

उस समय मैं 5वीं कक्षा में पढती थी। मुझे जहाँ तक याद है, उन दिनों पूज्य आचार्य भगवंत श्री मज्जिन कांतिसागरसूरीश्वरजी म.सा. बाड़मेर से छः रि पालित पदयात्रा संघ लेकर सॉचौर पधारे थे। उस समय मैंने समस्त मुनि मंडल के दर्शन के साथ ही युवा मनीषी के रूप में उभरते गुरूदेव के दर्शन भी किये थे। वो स्मृतियाँ आज भी मेरे हृदय कक्ष में सुरक्षित हैं।

सांचौर की भूमि अपने आप में पवित्र और तीर्थ स्वरूपा भूमि है। यह तो वह भूमि है, जहाँ पर इस अवसर्पिणी काल के चरम तीर्थकर परमात्मा महावीर स्वयं जीवित अवस्था में पधारे थे। इसीलिए इस तीर्थ स्वरूपा भूमि को गौतम स्वामी ने ''जयउ सामिय'' चैत्यवंदन में ''जयउ वीर सच्चउरि मंडण'' कहकर सत्यपुर मंडण

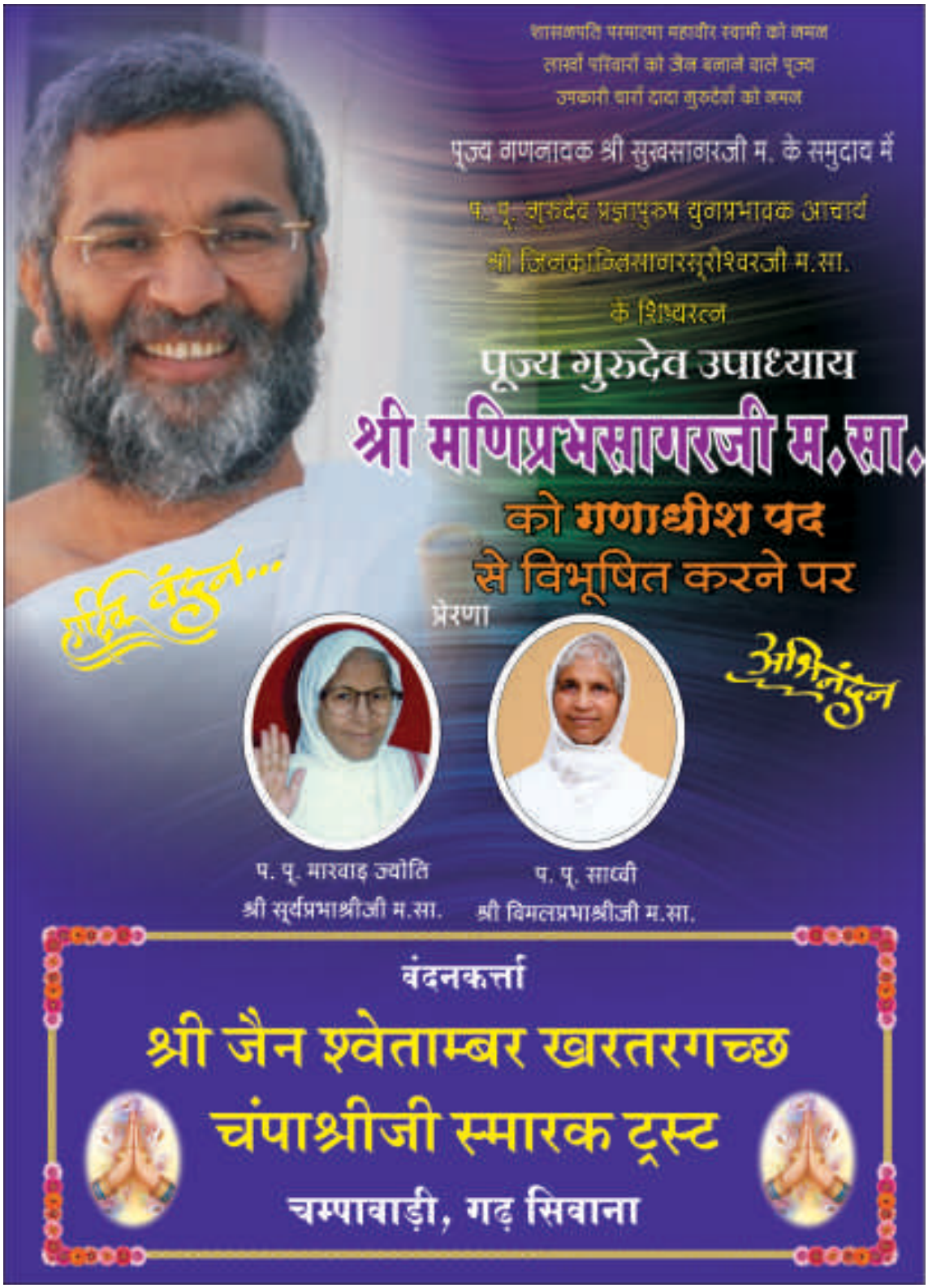

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य
उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन
पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में
प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्यरत्न
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
को गणाधीश पद
से विभूषित करने पर
हार्दिक वंदन...
अभिनंदन
प्रेरणा
प. पू. मारवाड़ ज्योति
श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म.सा.
प. पू. साध्वी
श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा.
वंदनकर्त्ता
श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ
चंपाश्रीजी स्मारक ट्रस्ट
चम्पावाड़ी, गढ़ सिवाना

परमात्मा महावीर को वंदना की थी।

इस पवित्र भूमि पर मुझे जन्म लेने का सौभाग्य तो प्राप्त हुआ ही है परन्तु मेरे जीवन में एक दिव्य पल और आया जब मुझे इसी धरती पर गुरूदेव श्री के हाथों से रजोहरण लेने का सौभाग्य मिला। साथ ही पू. गुरूदेव श्री की बहिन म. डॉ. गुरूवर्या श्री विद्युत्प्रभा श्री जी म.सा. की शिष्या बनने का भी परम सौभाग्य प्राप्त हुआ।

प्रथम बार जब मैने उन्हें देखा था, तब वे जीवन के दूसरे दशक में बिराजमान थे और आज मैं उन्हें जीवन के छठ्ठे दशक में देख रही हूँ। तब से लेकर आज तक साढे तीन दशक का लम्बा समय बीत गया है। इस अर्से में उम्र की सीढियाँ चढते हुए गुणों की अपेक्षा से आज वे हिमालय की ऊँचाई को प्राप्त कर रहे हैं।

पद मिलने से कोई व्यक्ति बड़ा नहीं होता। और न ही न मिलने से कोई छोटा होता है। यह तो केवल व्यवस्था हैं। गुरूदेव तो स्वयं अपने आप में इतने महान् हैं कि उन्हें किसी भी पद से अलंकृत होने की आवश्यकता ही नहीं है। बल्कि पद उन्हें पाकर धन्य और गौरवान्वित हुआ हैं।

आदर्श वही बनता हैं, जो निर्मल होता हैं, जो गतिशील होता है। गुरूदेव श्री पवित्रता के पुंज है, निर्मलता के निर्झर है। पूरे खरतरगच्छ के ढाल बने हुए है, गुरूदेव श्री का जीवन मधुर ही नही, अपितु मधुरतम है, जिसके कारण जहाँ भी पधारते हैं, वहाँ चातुर्मास सा ठाठ सदा ही लग जाता है। जिनके पास न कोई अपना है, न कोई पराया। सभी अपने ही लगते हैं।

आपश्री का जीवन एक महकते हुए गुलाब के पुष्प के समान हैं। जैसे गुलाब अपनी भीगी-भीगी सुगंध से अपने आस-पास के वातावरण को सुवासित करता है तथा अपने पास से जाने वालों को भी अपनी मीठी स्मृति ..... सुगंध देता रहता हैं।

आप श्री के स्वभाव में शीतलता, वाणी में मधुरता, व्यवहार में शालीनता, मुख पर सौम्यता, चिंतन में उदारता, आचरण में पवित्रता, नयनों में तेजस्विता, हृदय में कोमलता, मन में सरलता, संयम में सजगता आदि अनेकानेक सद्गुणों का सुन्दर संगम है, जिससे ऐसा प्रतीत होता है कि आपश्री का मनोरम जीवन सौरभमय सुमनों से खिला हुआ एक सुंदर, मनोहारी, आकर्षक उपवन हैं।

पू. गुरूदेव उच्च कोटि के आध्यात्मिक साधक है। प्रभावशाली वक्तृत्व कला के धनी है फिर भी गुरूदेव श्री की दिनचर्या सहज सामान्य साधु की तरह होती है। उनके करीब जाकर हम देखते है तो हमें लगता है कि गुरूदेव के भीतर इतनी सारी विशिष्टताएं हैं फिर भी इनमें किसी भी प्रकार का अहंकार या अभिमान नहीं है कि मैं बहुत बड़ा साधु हूँ, मैं ज्ञानी हूँ।

एक बार मैंने गुरूवर्या श्री से शिकायत की कि गुरूदेव तो सिर्फ आप से ही बोलते है, हमसे तो कभी बात ही नहीं करते। जैसे ही यह बात उनके कानों में पहुँची, तो उन्होंने बिना किसी प्रतिक्रिया के मुझे देखते ही बुला लिया-कैसे हो?तुम्हारी आराधना कैसी चल रही है। क्या स्वाध्याय चल रहा हैं?उनकी ऐसी लघुता देखकर मेरा हृदय श्रद्धा से भर उठा।

पू. गुरूदेव का व्यक्तित्व हिमालय से भी ऊँचा, सागर से गंभीर, मिश्री से भी मधुर और नवनीत से भी अधिक सुकोमल हैं। अगरबत्ती के समान स्वयं कष्ट सहन करके भी सब को अपने गुणों की सौरभ देने वाले है।

पू. गुरूदेव श्री के साथ हमारा तीन साध्वीजी म. का चातुर्मास हैदराबाद में हुआ। उस चातुर्मास में गुरूवर्या श्री जी की कमी कभी महसूस नहीं होने देते थे। वे गुरूदेव

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
को गणाधीश पद
से विभूषित करने पर
Exclusive Design
with Perfect Door & Window Fittings
ten
Since 1998
Designing your Dreams
Manufacturing & Exporting By :
Ratan Jain
+91 94260 11536
Ankit Jain
+91 88661 44731
Jagdish Jain
+91 94288 13206
GANPATI INDUSTRIES
54, Vikash Ind. Estate, Opp. anil Strach Mill Road,
Nr. Muni School, Bapunagar, Ahemedabad-380 018
e-mail : i10doorfitting@gmail.com
www.i10doorfitting.com
facebook : i10doorfitting
phone : (079) 22203311

के रूप में भी अपना दायित्व निभाते थे और गुरूवर्या श्रीजी की ममता और वात्सल्य भी देते थे। हर तरह से हमारा मार्गदर्शन करते। हर समय हमें पूछते रहते कि कोई तकलीफ तो नहीं। जब हम सुबह वंदन करने जाते, उस समय अगर तीन साध्वीजी में से कोई साध्वीजी किसी कारण से नहीं दिखते तो उसी समय पूछते-एक महात्मा नहीं दिख रहे है। उनकी तबियत तो ठीक है ?

जिस तरह घर का मुखिया अपने घर को संभालता है, वैसे ही गुरूदेव हमें संभालते। कितने ही लोग बैठे हो, अगर हम वाँचना के लिये पहुँचते तो गुरूदेव उसी समय सभी कार्यों को छोडकर सबसे पहले हमें वाँचना देते थे। हैदराबाद चातुर्मास में तो गुरूदेव की तबियत भी ठीक नही थी। पांव में हेयर क्रेक हो गया था फिर भी पढ़ाने में कभी प्रमाद नहीं करते थे, चाहे कितने ही संघ आये हुए हो, कितनी ही मीटिंगे हो, परन्तु वांचना की छुट्टी कभी नहीं करते थे। हमेशा कहते-स्वाध्याय तो साधु जीवन का प्राण है। वांचना तो साधु जीवन की संजीवनी है। आप सबको पढ़ाने के बहाने मुझे भी स्वाध्याय करने का, आगमों की गुत्थिओं को सुलझाने का अवसर मिलता है। इस प्रकार उनकी प्रत्येक क्रिया में विराटता के दर्शन होते है।

गुरूदेव श्री केवल प्रवचनकार ही नही हैं, अच्छे लेखक भी है, केवल आशुकवि ही नहीं है, श्रेष्ठ अध्यापक भी है। अध्ययन करना अलग बात है लेकिन अध्यापन करवाना तो बिल्कुल दूसरी बात है। जरूरी नहीं, जो हमने पढा, वो हम दूसरों को भी अच्छे से समझा सके। लेकिन गुरूदेव में तो अध्यापन की कला अच्छे से समाई हुई है। वे जो भी पढाते है, वो एक ही बार में हृदयस्थ हो जाता है। किसी भी विषय को वे इतना खोलकर समझाते हैं कि वहाँ किसी भी प्रकार का संदेह नहीं रहता। विषय चाहे आगम हो, चाहे संस्कृत का, प्राकृत का हो या दर्शन का। अगर कोई गृहस्थ जीवन से संबंधित समस्या लेकर आते है तो वे उसका भी समाधान कर देते है। उनका समझाने का तरीका ही ऐसा है कि 8 साल का बच्चा भी समझ जाता और 60 साल का वृद्ध भी।

गुरूदेव श्री का जीवन अनेकानेक गुणरूपी सुंदरतम रंग बिरंगे फूलों का गुलदस्ता है। फूल कभी यह नहीं कहता कि मेरे अन्दर सुगंध व मीठी पराग विद्यमान है। यह तो उसके स्पर्श को पाकर बहने वाला पवन बता देता है कि फूल में कितनी खुश्बू है। बादल यह नहीं कहता कि वह कब कहां कितना बरसा, यह तो आने जाने वाले राही बता देते हैं कि कहां कितना पानी बरसा। उसी प्रकार आपश्री का जीवन ओजस्वी-तेजस्वी-वर्चस्वी है। उसे मैं क्या बताऊं?वह तो आपकी सत्सन्निधि पाने वाला हर व्यक्ति बता देता है कि आपश्री के विचारों में महावीर की साधना, बुद्ध की करूणा, कृष्ण का कर्मयोग व माधुर्य, मीरा की भक्ति, कबीर की क्रान्ति समाहित है।

आप श्री चिरायु बनकर हमारा व सकल संघ का मार्गदर्शन करते रहे, यही मंगल भावना।

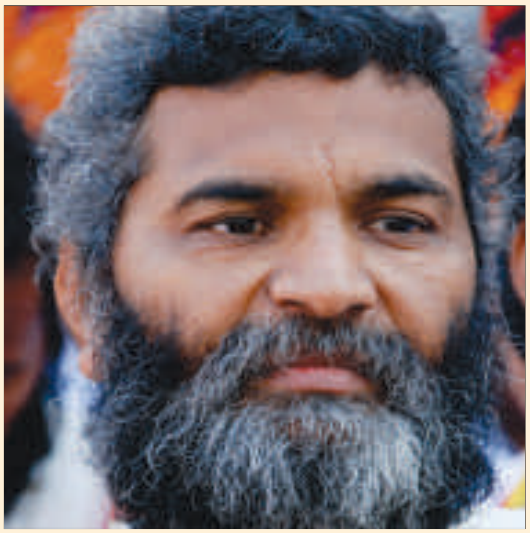

Diploma®
Metal Industries

For Better Cooking & Economy

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
को **गणाधीश पद**
से विभूषित करने पर
हार्दिक वंदन...

रतनलाल बोथरा, जगदीश बोथरा, अंकित बोहरा

Mfg. Of Stainless Steel Utensils

B-7, RAVI ESTATE, AMBIKA NAGAR, ODHAV
Ahmedabad-382415 (Gujarat)

B.L.Bothra 09426170801 Ramesh 09427031294
Jitesh 09427031295 Sunil 09429021264

समर्पण की सुगंध

विद्युत् चरण रज साध्वी विभांजनाश्री

जन्म मानव का होता है, महामानव का नहीं, जन्म एक सामान्य बालक का होता है, किसी महापुरूष का नहीं होता। परंतु जन्म के बाद व्यक्ति इस प्रकार का जीवन जीता है कि वो अपने विशिष्ट आचरण से महामानव बन जाता है।

कुछ ऐसा ही जीवन है पूज्य गुरूदेव गणाधीश उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. का ।

उन्होंने जन्म ग्रामीण परिवेश से परिपूर्ण छोटे-से कस्बे मोकलसर नगर में लिया, जहाँ किसी भी प्रकार का शहरी वातावरण नहीं था। सुविधाओं की चकाचौंध नहीं थी, आधुनिकता के उपकरण नहीं थे। लेकिन एक सामान्य से कस्बे में जन्म लेने वाला छोटा-सा बालक जब दीक्षा लेता है तो दीक्षा लेने के बाद आचार-विचार व व्यवहार से इतना विशिष्ट बन जाता है कि एक दिव्य व्यक्तित्व के रूप में उभर जाता है।

दीक्षित होते ही उन्होंने सम्पूर्ण रूप से गुरू चरणों में अपने-आप को समर्पित कर दिया। पू. गुरूदेव की निश्रा में रहकर उनकी आज्ञा की आराधना करते हुए ज्ञान साधना प्रारम्भ की। उस ज्ञानयज्ञ में उन्होंने अपने-आप को इतना तपाया कि धीरे-धीरे समय के साथ वे निखरते गये।

आज अपनी योग्यता से खरतरगच्छ के गणाधीश जैसे उच्चपद पर आरूढ हुए है। यह सूचना हमारे कानों में जैसे अमृत घोल रही है। हमारे रोम-रोम में खुशियों की बरसात हो रही हैं। आनन्द की अभिवृद्धि हो रही हैं। ऐसा दिव्य क्षण निश्चित रूप से भाग्यशाली के जीवन में ही आता है।

पूज्यश्री जितने विद्वान, प्रखर प्रवचनकार, सरस लेखक है, उतने ही सरल, सहज व सहिष्णु है। परिस्थिति कितनी ही प्रतिकूल हो लेकिन उनके चेहरे पर कभी भी परेशानी नहीं झलकती। उस स्थिति में उनका मानसिक संतुलन गजब का होता है। उनकी वाणी में तो इतना जादू है कि परिवार में पडी दरारें तो मिटती ही है लेकिन समाज में कितना ही गहरा विवाद व संघर्ष का वातावरण हो तो वह भी उनकी वाणी के प्रभाव से समाप्त हो जाता है।

मेरी जन्म भूमि साँचोर में न्याति नोहरे पर लगे नाम को लेकर पूरे गॉव में बहुत बड़ा संघर्ष छिडा हुआ था। अनेकों ने प्रयास किया उस विवाद को समाप्त करने का परंतु सभी विफल रहे। आखिर पू. गुरूदेव श्री ने ही उस विवाद को समाप्त करने का बीडा उठाया।

शांतिनाथ परमात्मा के मंदिर की प्रतिष्ठा का प्रसंग था। उस समय प्रतिष्ठा का कार्यक्रम प्रारम्भ होने से पहले गुरूदेव श्री ने लगातार 6-6 महिने तक रात-दिन एक करके मीटिंग की। उनके सफल नेतृत्व में आपसी संघर्ष समाप्त हुआ और सकल जैन संघ में एकता का वातावरण बना। साँचोर संघ के लिए तो गुरूदेव का यह परिश्रम वरदान सिद्ध हुआ।

यह घटना 1993 की है। उस समय गुरूदेव मात्र 34 वर्ष के थे। इतनी छोटी-सी उम्र होने के बावजूद उनके

पास अनुभवों की गहराई, विचारों की परिपक्वता, तार्किक शक्ति इतनी प्रबल थी कि वे हर समस्या का समाधान करने में सक्षम थे।

साँचोर संघ पर तो उनका उपकार है ही, परंतु मुझ पर तो दोहरा उपकार है। उन्होंने मुझे संयममंत्र प्रदान किया तो संयम के साथ संयम की खुराक भी दी। वे आज भी कितने ही व्यस्त क्यों न हो, फिर भी हमें वाचंना अवश्य देते है।

इचलकरंजी के चातुर्मास मे उनका करीब एक-सवा घंटा प्रवचन चलता था व प्रवचन पूरा होते ही वे जब मणिधारी भवन पधारते थे, उस समय चाहे कितनी ही थकान हो या कितने ही लोग खडे हो, फिर भी हमें दशवैकालिक की वांचना देने के लिए तत्पर हो जाते। पढने की इच्छा से कोई भी विद्यार्थी उनके पास कभी भी चला जाए, वे कभी बहाना नहीं करते। चाहे वे विहार से थके हुए हो या शारीरिक अस्वस्थता हो फिर भी वे स्वाध्याय कराने के संबंध में किसी को निराश नहीं करते, यह उनकी विशेषता है।

उनके भीतर में लघुता तो इतनी है कि सामान्य व्यक्ति के छोटे-से गुण को देखकर भी उसकी प्रशंसा किये बिना नहीं रहते। उनकी गुण-ग्राहक दृष्टि अपने-आप में निराली है।

सिद्धाचल तीर्थ भूमि पर गुरूदेव श्री के ऐतिहासिक चातुर्मास का आयोजन था, उस समय मैंने उनकी लघुता देखी थी। मेरे मासक्षमण की तपश्यर्चा चल रही थी। उस समय गुरूदेव श्री अत्यन्त व्यस्त होने के बावजूद भी स्वत: मुझे दर्शन देने व पच्चक्खाण करवाने के लिए पधारते थे। जब मेरा 27 वाँ उपवास था, उस समय अचानक मेरी तबियत खराब हो गई। बहुत घबराहट होने लगी, तब गुरूदेव श्री को बुलाया गया तो वे तुरन्त अन्य सभी कार्य छोडकर पधारे व मुझे अभिमंत्रित वासक्षेप प्रदान की। उसी समय आधे घण्टे के अन्दर-अन्दर मेरी तबियत एकदम ठीक हो गई।

यह उनके साधकीय व्यक्तित्व का ही परिणाम है। जब भी कोई व्यक्ति मानसिक या शारीरिक अस्वस्थता से पीड़ित होकर उनके पास पहुँचता है, उनके पवित्र आभामंडल में पहुँचते ही व्यक्ति को आधी शांति प्राप्त हो जाती है। शेष उनके मंत्राक्षरों से अभिमंत्रित वासक्षेप जैसे ही मस्तक को छूता है कि एक चमत्कार सा घटित हो जाता है। यह कोई अतिशयोक्ति नहीं है। ऐसा अनुभव मैंने स्वयं अपने जीवन में किया हैं

ऐसे अनूठे व्यक्तित्व के धनी गुरूदेव श्री के दर्शन मैंने सर्वप्रथम मोकलसर में किये थे।

1989 में पू. गुरूवर्या श्री जी का चातुर्मास साँचोर नगर में था। उस समय मेरे भीतर में संयमी जीवन अंगीकार करने का अंकुर फूटा था। उसके बाद मेरी दीक्षा की भावना बलवती होती गई। उसके ठीक एक वर्ष बाद में गुरूदेव एवं गुरूवर्या श्री के दर्शन वंदन के लिए साँचोर संघ के साथ मोकलसर गयी थी। वहाँ पर मैंने प्रथम बार युवामुनि के रूप में गुरूदेव श्री के दर्शन किए थे। तब से आज तक मै देख रही हूँ, गुरूदेव ने क्रमश: ऊँचाईयों के जिन सोपानों का स्पर्श किया है, निश्चित रूप से वहाँ तक पहुँचना आसान नहीं है।

मैं गणाधिपति पदाभिषेक अवसर पर गुरूदेव श्री के जीवन के लिए मंगल कामना करती हूँ कि वे निरन्तर ऊँचाईयों को प्राप्त करते हुए चिरंजीवी बने।

हार्दिक शुभेच्छा

साध्वी प्रियप्रेक्षांजना श्री

अभिनंदन अंधकार का नहीं, प्रकाश का होता है
अभिनंदन फूल का नहीं, सुगंध का होता है
अभिनंदन व्यक्ति का नहीं, व्यक्तित्व का होता है
अभिनंदन गच्छाधिपति के गुणों का होता है

चन्दन की लकड़ी को कितना भी घिस दो, तेल निकाल दो, टुकड़े-टुकड़े कर दो, किसी ओट में छिपा दो किन्तु वह अपनी सुवास फैलाये बिना नहीं रहेगा! वैसे ही पूज्य गुरुदेव गणाधीश प्रवर श्री !
मेरे हृदय में एक श्रद्धा तरंग ने जन्म लिया और ध्वनी फैली-

चिलमन ने कहा.... संघ सूरज की रोशनी हो आप!
कर्णों ने कहा.... भक्त हृदय के चाँद सितारे हो आप!
अधरों ने कहा.... जिन शासन के सिरताज हो आप1
दिल की धड़कनों ने कहा.... शासन के शणगार हो आप!
धडकनों ने कहा.... जिन शासन के हार्ट हो आप!
कदमों ने कहा.... हमारे मार्ग दर्शक हो आप!
प्रकृति के कण-कण ने कहा.... हिमगिरि सम महान् हो आप!

सभी की आवाज सुनते-सुनते देहरूपी देवालय में विराजमान आत्मदेव ने कहा- खरतरगच्छाधिपति हो आप....। हार्दिक अभिनंदन....!! बधाई....!!!

खरतरगच्छ दिवाकर को बधाई

(तर्ज- जिन्दगी प्यार का गीत)

साधवी मयूरप्रिया श्री

हे खरतरगच्छ दिवाकर, आगम प्रवचन प्रभाकर
गणाधीश पद को पाए, शत-शत करे अभिनन्दन
(टेर)
अनुपम अखण्ड आराधना, तप-जप की ऐसी साधना
स्थिर रहे तुफान के आगे, जैसे सुमेरू गिरिवरा ...(1)

मुखकान्ति भी तेजोमयी, वाणी भी हैं
नयनों में छलके करूणारस, जैसे हो क्षीर सरोवर (2)

जैसी कथनी वैसी करणी, आत्म रमण के साधक हो
मणि गुरू के चरणो में, विमल मंडल करे वंदना (3)

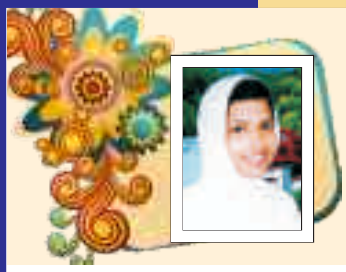

पदाभिषेक अभिनंदना

विमलचरणरज साधवी चारित्रप्रियाश्री

मनुष्य के शरीर का सबसे महत्वपूर्ण अंग कौनसा है, यह प्रश्न मेरे मस्तिष्क में बार-बार घुम रहा है। मैं इसका उत्तर पाने की प्रतीक्षा में हूँ। विश्व के अनेक मनीषियों ने इसका उत्तर ढूंढने का प्रयत्न किया है। उन्होंने अपने उत्तर को विविध प्रयोगों से सिद्ध भी किया है।

किसी ने मस्तिक को सर्वश्रेष्ठ अंग माना तो किसी ने हृदय को महत्वपूर्ण अंग मानकर स्थान दिया। किसी ने कान को महनीय स्थान बताया तो किसी ने आंख को। प्रत्येक मनीषी ने अपनी-अपनी बात को सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। उनके शोध में कहीं न कहीं सत्यांश अवश्य है। उस सत्यांश को पकड़कर ही परम सत्य को प्राप्त किया जा सकता है।

गुरूदेव को जब-जब मैं निहारती हूँ तो मेरे सम्मुख उनके नेत्रयुगल आकर्षण का केंद्र बिंदु बन जाते हैं। मेरी दृष्टि स्थिर होकर उनकी आंखों में झांकती है। मनुष्य के शरीर में आँख एक ऐसा अवयव है, जो सारे व्यक्तित्व और कृतित्व का प्रतिनिधित्व करती है।

जब मैंने उनकी आंखों को देखा तो मुझे लगा कि गुरूदेव सागर से गंभीर, बालक सम ऋजु, विनम्रता की प्रतिमूर्ति, सूर्य समान तेजस्वी है।

यद्यपि आँख वस्तु जगत का बोध कराती है, किन्तु आंख उस सत्य का भी बोध कराती है, जिसको पाकर अतीन्द्रिय सत्य तक पहुँचा जा सकता है। ये नयन मेरे लिए एक शोध का विषय बने। मैं प्रतिपल उनकी आंखो में झांकती हुई तादात्मय का अनुभव करती रहुँ और अपने आपमें अद्वैत स्थापित करती रहूँ। किसी कवि की यह पंक्तियां मेरा पथदर्शन करती है।

न जाने कौनसा जादू है तुम्हारी इन संदुर आंखों में
यह अक्स इन आंखो में, देखने को तरसता हैं।

आस्था के दीप

विद्युत चरणरज साध्वी विज्ञांजना श्री

कोई भी व्यक्ति जन्म से महान नहीं होता। अपने कर्तव्य से ऐसे सुनहरे चित्र उकेरता है, जिससे उसकी महानता स्वत: ही उजागर हो जाती है। महानता कोई लबादा नहीं है, जिसे जब चाहा ओढ लिया। इसकी प्राप्ति हेतु व्यक्ति को साधना का प्रयोग करना पड़ता है। प्रबल पुरूषार्थ, अटल संकल्प शक्ति और अखण्ड ध्येय निष्ठा के द्वारा अनेक कंटकाकीर्ण पगडंडियों का सफर तय करके साधना की ऊचांइयों का स्पर्श करता है। महानता की बुनियाद को मजबूती देने वाले तीन तत्त्व प्रमुख है- श्रमशीलता, विनम्रता और सहनशीलता।

गणाधीश श्री उपाध्याय प्रवर का जीवन इन तीनों गुणों का समवाय है।

पुरूषार्थ का प्रदीप- विशिष्टता को प्राप्त करने के लिए श्रमनिष्ठा के अलावा कोई दूसरा शॉर्टकट नहीं होता। गुरूदेव श्री को श्रम निष्ठा के संस्कार गुरू परम्परा से प्राप्त है। शासन प्रभावना और संघ की भावनाओं को प्रमुखता देते हुए संघ, प्रतिष्ठा, दीक्षा आदि विभिन्न कार्यक्रमों को निश्रा प्रदान करके दक्षिण भारत के विभिन्न क्षेत्रों की स्पर्शना करते हुए नौ माह की अवधि में लगभग 4000 km. का विहार करते हुए चातुर्मास हेतु रायपुर पधारना, संघशास्ता की श्रमनिष्ठा का जीवंत उदाहरण है। प्रतिदिन 25 से 30 km. का विहार करते हुए जनता को प्रतिबोध देना भीतरी दिव्य शक्ति का अहसास करवाता है। घर में गुरूदेव श्री के पगले हो ऐसी भक्तों की भावना को साकार करने 20 मंजिल तक की सीढियों का आरोहण गुरूदेव श्री सहर्ष करते है।

पुरूषार्थ का दीप न केवल बाह्य जगत को प्रकाशित करता है वरन् अन्तर्जगत को भी आलोकित करता रहता है। अपने अंतरंग परिषद को जप-तप, ध्यान-स्वाध्याय की

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन
पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म.
के समुदाय में
प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
को गणाधीश पद से विभूषित करने पर
हार्दिक वंदन...
अभिनंदन
प्रेरणा :
प. पू. साध्वी श्री
विमलप्रभाश्रीजी म.सा.
स्व. श्री विरधीचन्दजी गांधी
स्व. श्रीमति राजादेवी गांधी
वंदनकर्त्ता
गणेशमल, नेमीचन्द, उदयराज, भंवरलाल,
महेशचन्द, मांगीलाल, बाबूलाल, ललितकुमार
नारायणदास, धनराज, दर्शनकुमार गांधी परिवार
धोरीमन्ना – जोधपुर

दिशा में अभिप्रेरित करते है। साधु-साध्वीजी भगवंतों को परमात्म वाणी का अमी पान करवाकर उनके भीतर आत्मनिष्ठा, आज्ञानिष्ठा, गुरूनिष्ठा और आचारनिष्ठा का जज्बा पैदा करते है। सुबह से शाम तक प्रवचन, जन प्रतिबोध, अध्यापन, साहित्य लेखन आदि विविध शासन प्रभावना रूप श्रम की धाराएँ आपके आस-पास प्रवाहित हो रही हैं।

प्रगति में छिपी उन्नति- विष्णु सहस्रनाम में एक पंक्ति आती है- 'अमानी मानदो मान्यः' अर्थात् जो विनम्र रहे, अभिमान न करे, दूसरों को सम्मान दे-वह मान्य होता है। किसी का तिरस्कार नहीं करना, सबको सम्मान देना, यह महानता का लक्षण है। विनीत आत्मा ही इस महानता को प्राप्त कर सकता है। गणाधीश श्री के समक्ष चाहे छोटा बच्चा हो या बडा पदधारी व्यक्ति, उपाध्याय श्री की विनम्रता सबको उचित अधिमान देती रही है। मांडवला जहाज मंदिर प्रतिष्ठा के अवसर पर पधारने वाले साधु-साध्वीजी भगवंतों की अगवानी में गुरूदेव श्री स्वयं 1 कि. मी. पधारते थे। यह उपक्रम आज भी गुरूदेव श्री के जीवन में जीवंत है, जो उनकी कायिक विनम्रता के साथ भाव विनम्रता को भी द्योतित करता है।

विनम्रता का फलित हैं-सरलता, निरभिमानिता और सहजता। उपाध्याय श्री के जीवन में इन तीनों विशेषताओं का संगम एक साथ देखा जा सकता है।

सहने का उत्स साधना- सहिष्णुता धर्म का प्रथम द्वार है। जो व्यक्ति सहना जानता है, अनुकूलता और प्रतिकूलता से अप्रभावित रहता है, अपने लक्ष्य पर अडिग रहता है, वही अपने जीवन काल में सफलताओं का वरण करता है। और जिसमें सहिष्णुता का अभाव होता है, थोडा सा कष्ट आने पर विचलित हो जाता है, वह अपनी मंजिल को प्राप्त नहीं कर सकता। मुनि के लिए बाईस परिषहों का विधान किया गया है। तत्त्वार्थ सूत्र में पू. उमास्वाति म. ने लिखा- 'मार्गाच्यवन निर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः' परीषहों को सहने के विधान का प्रथम उद्देश्य है कि मार्ग से च्युत न होना। दूसरा उद्देश्य है- निर्जरा एवं शोधन। सर्दी-गर्मी को सहना, अनुकूल-प्रतिकूल स्थितियों में शांत रहना, सफलता का सूत्र है। शारीरिक सहिष्णुता ही सहिष्णुता की प्रथम कसौटी है। सत्य का संधान एक सहिष्णु व्यक्ति के द्वारा ही संभव है।

सत्य-संधित्सु गणाधीश श्री जी की सहिष्णुता प्रणम्य है। दिसम्बर-जनवरी की शरीर को कम्पकम्पाने वाली सर्द हवाएँ और मई-जून की झुलसाने वाली गर्म हवाएँ आप श्री के मन मस्तिष्क को तनिक भी प्रभावित नहीं करती है। मौसम का मिजाज बदलता रहता है, परंतु गुरूदेव श्री अपने निर्धारित कार्यक्रम में सामान्यतः किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं करते। गच्छ के प्रशासक होने के नाते संघीय-सामाजिक परिस्थितियों से रूबरू होना पडता है। लेकिन सहिष्णु मनोवृति के कारण आप श्री प्रत्येक परिस्थिति के साथ सामंजस्य बनाकर चलते है।

आप श्री आर्हत् वाङ्मय के प्रवचनकार है। आगमों के अनुसंधाता है। प्रत्युत्पन्न प्रज्ञा के धनी है। आपश्री धीर, वीर, गंभीर, अनासक्त, ऋजु, मृदु आदि अनेक गुणों से युक्त है।

आपके विचारों में जीवन का दर्शन है। प्रवचन भीतरी बदलाव की प्रेरणा है। संवाद में जीने की सीख और साधना का संदेश है। आपश्री की सन्निधि में परिवर्तन का विश्वास है। आपके प्रवचन में व्रती चेतना के जागरण का पाथेय है। आपके व्यक्तित्व में जादुई सम्मोहकता है।

एक भी अकल्पनीय शब्द आपके मुखारविंद से

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन

लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक

आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को **गणाधीश पद** से विभूषित करने पर

वंदनकर्त्ता

बाबूलाल, किशनलाल, चम्पालाल, भूरचन्द, गौतमचन्द

संजय, महावीर, राजीव, दिपक, हरीश, कपिल, अंकित, रवि,

सौरभ, भव्य, जैनम्, धैर्य बेटा–पोता

शा. पीरचन्दजी हंजारीमलजी वडेरा, (भाणाणी) परिवार बाड़मेर

प्रतिष्ठान

*** पीरचन्द बाबूलाल एण्ड कम्पनी, बाड़मेर * महालक्ष्मी पोपलीन मिल्स प्रा. लि,**

इचलकरंजी–मालेगांव–बालोतरा–सुरत

जाने-अनजाने निकल नहीं पाता, ऐसा इसलिए ही संभव है कि आप श्री ने स्वयं को भीतर तक साध लिया है। आप श्री सदैव व्यवहार और निश्चय की समन्विति 'रहे भीतर जीएं बाहर' सूत्र में जीवन व्यतीत करते है।

आपश्री की सरलता और करूणा के बीच संघशास्ता स्वरूप भी स्थापित हो रहा है। आप इतने करूणा निधान है कि अपने साधु-साध्वी जी भगवंतों का मानसिक और शारीरिक थोड़ा सा कष्ट भी आपश्री से देखा नहीं जाता। उसके त्वरित समाधान की व्यवस्था करके ही आपको आत्मतोष मिलता है। जहाँ तक आप श्री की सरलता और करूणा का प्रश्न है, मुझे स्मरण हो रहा है-जब गुरूवर्या श्री से अलग उपाध्याय श्री के संरक्षण में मेरा चातुर्मास पूना में था। पूना पहुँचने से पूर्व घटना ऐसी घटी कि सोलापुर में सीढियों से गिर जाने के कारण मेरे कमर में चोट लग गयी। इस चोट की वजह से नीचे बैठना, सीढियों से उतरना संभव न था। और गुरूदेव श्री जिस उपाश्रय में बिराजमान थे, वह दूसरी मंजिल पर था और हम अन्य बिल्डिग की पहली मंजिल के उपाश्रय में। जिस उद्देश्य से गुरूवर्या श्री ने मुझे गुरूदेव श्री की निश्रा में भेजा था, अब उस उद्देश्य को क्रियान्वित करने की शक्ति मुझमें संभव न थी। मैं मन मायूस कर चुपचाप लेटी रहती, स्वयं को कोसती रहती थी कि कैसा मेरा दुर्भाग्य है कि मैं इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठा नहीं पा रही हूँ। मेरे हॉस्पीटल से आने के दूसरे ही दिन एक ऐसी अकल्पित घटना घटित हुई, जिसकी मैं स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकती। एक चार वर्ष की दीक्षित साध्वी के अध्ययनार्थ गुरूदेव श्री स्वयं अपने विद्यार्थी मुनियों के साथ वाचना प्रदान करने हेतु हमारे उपाश्रय में पधारे और यह क्रम सतत चार महिनों तक गतिमान् रहा। यह घटना उपाध्याय श्री की सरलता और महानता की सूचक है।

व्यक्ति थोड़ा सा पढ़ लिख जाता है, संघ समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त कर लेता है तो वह अभिमान से इतना फूल जाता है कि कभी छोटों से सीधे मुहँ बात करना तो दूर, उसके सामने नजर उठा कर भी नहीं देखता। परंतु हमारे संघशास्ता इन सबसे अछूते एक ऋजुमना महामानव है। जब भी हम गुरूवर्या श्री से अलग गुरूदेव श्री के उपपात में रहते है तब कभी भी आप श्री हमें गुरूवर्या श्री की कमी, उनकी अनुपस्थिति नहीं अखरने देते। गुरूदेव श्री हमें उतना ही वात्सल्य प्रदान करते है। हमारे निवेदन से पूर्व ही आप श्री हमारी आवश्यकताओं को भांप जाते है। इतनी आत्मीयता, इतना अपनत्व प्राप्त कर नि:संदेह मुझे स्वयं के सौभाग्य पर गौरव हो उठता है।

गणाधीश श्री शास्त्रीय और संघीय मर्यादाओं, शाश्वतिक और सामायिक संहिताओं के अनुपालन में पुरोधा पुरूष है। वे जानते है कि मर्यादा रूपी लक्ष्मण रेखा का अतिक्रमण होते ही सीता रूपी चरित्र का दुष्ट प्रवृतियों के रावण द्वारा हरण हो जाता है। इसलिए आप श्री प्रत्येक कदम सोच समझकर, उसका परिणाम जानकर रखते है। और साधु- साध्वीजी भगवंतों एवं श्रावक-श्राविकाओं को भी मर्यादाओं का पालन करने हेतु आगाह करते हैं ताकि व्यक्ति और संघ की तेजस्विता, पवित्रता और वर्चस्विता द्वितीया के चन्द्रमा जैसे प्रतिदिन वर्धित होती रहे।

ऐसे कुशल सारथी संघशास्ता, जिनका जीवन जीवंत संदेश है, को पाकर सब आनंदित है और पदाभिषेक के पावन अवसर पर मैं यह मंगल शुभाशंसा व्यक्त करती हूँ कि आप श्री की आत्मनिष्ठा, आज्ञानिष्ठा, गुरूनिष्ठा और आचार निष्ठा का अनुपालन कर हम अमृतमय बन जायें।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन

लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य

श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.

के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...

प्रेरणा

प. पू. साध्वी श्री विमलप्रभा श्रीजी म.सा.

प. पू. साध्वी श्री मयुरप्रिया श्रीजी म.सा.

वंदनकर्ता

शा. पन्नालाल गौतमचन्द पारसमल कवाड़ परिवार

फलोदी – तिरपात्तूर

गुरु मेरी पूजा... गुरु मेरी भक्ति

सुलोचन पादधूलि साध्वी प्रियश्रुतांजनाश्री

मुझे पूज्य गुरूदेवश्री के बारे में कुछ लिखने का आदेश मिला, मैंने कलम हाथ में उठाई और सोचने लगी- क्या लिखूं? मेरे पास न तो शब्द हैं, न लिखने का अभ्यास और न इतना गहरा अध्ययन। प्रथम बार प्रयास कर रही हूँ।

''क्या कहूं कैसे कहूं, गुरू-गुण गाया न जाय।
इस पावन वेला में, कहे बिन रहा न जाय''।।

पूज्य गुरूदेव के विषय में जितना भी कहा या लिखा जाए, वह कम है। लेखनी व शब्दों में वह सामर्थ्य नहीं कि वह पूज्यश्री को परिभाषित कर सकें। सारे शब्द बौने हैं, सारी उपमाएँ अधूरी हैं आपश्री के सामने। आपश्री वाणी के जादुगर हैं, आपकी वाणी का एक-एक शब्द दिल और दिमाग को झकझोर डालता है। सुनने वाले के दिल को छू जाता है, श्रोता को प्रसन्नचित्त कर देता है। पूरे साल में सिर्फ एक बार शरद पूर्णिमा की रात्रि में चन्द्रमा से अमृत झरता है, पर गच्छाधिपति श्री के मुख-चन्द्र से तो चौबीसों घंटे, बारह महीने अमृत झरता रहता है। पूज्यश्री के प्रवचन श्रोताओं में मात्र तत्कालीन प्रभाव ही नहीं छोडते वरन् त्रैकालिक परिवर्तन का कार्य करते हैं।

गुरूदेव श्री की वाणी में जीवन जीने के तरीकों का समावेश है तो उनकी आँखों में हर प्राणी के प्रति प्रेम है, उनका हृदय वात्सल्य का महासागर है तो उनका मुखमंडल निरंतर प्रसन्न रहने का संदेश देता है। आपश्री की एक मुस्कान मायूस दिलों में भी जान फूंक देती है। यही वजह है कि इस संत का उठा हर कदम नए इतिहास का सर्जन करता है। हम यही कहना उचित मानते हैं कि इनका जन्म इसलिये हुआ है कि हर रोज नया इतिहास लिखें।

आप भक्तों के भगवान हैं। भक्त भगवान के मंदिर तो रोज जाते हैं, लेकिन ऐसा कम ही होता है, जब भक्तों की पुकार सुन भक्त के घर भगवान पहुँचते हैं। जैसे श्रीराम शबरी की कुटिया में और करूणानिधान भगवान महावीर चन्दनबाला की दहलीज पर... वैसे ही आप नगर-नगर, गाँव-गाँव जाते हैं।

मनमोहक है आपका व्यक्तित्व, आपश्री जिस किसी प्रदेश में जाते हैं, वहां की जनता आपके पीछे दौडना शुरू कर देती है। आने वाले समय में लिखा जाएगा कि साधारण सी काया में एक ऐसा भी संत हुआ, कि वो जिधर चल देता था, उस दिशा में लाखों कदम उठ जाते थे।

आप युग दृष्टा भी है। समाज में घुन की तरह फैल रही विकृतियों के प्रति आपश्री विशेष रूप से जागरूक है। आपने अपने प्रवचनों में कहा- धर्म के प्रति अनास्था का भाव, गुरूजनों के प्रति अनादर का भाव तथा संस्कार और संस्कृति के प्रति उपेक्षा का भाव समाज को खोखला कर रहा है। संस्कृति को बचाने की कसक और संस्कारों का शंखनाद करने का तरीका किसी अन्य संत में नहीं देखा था, जो आपश्री में देखा। कभी-कभी तो आश्चर्य होता है कि प्रभु ने गुरूदेवश्री में विशेषताओं का ऐसा खजाना भर दिया है, जो इन्हें साधारण संत से उपर उठा देता है।

आपश्री के सानिध्य में हुए अंजनशलाका, प्रतिष्ठा,

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन

लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को **गणाधीश पद** से विभूषित करने पर

आमंत्रण

साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म.सा.
साध्वी जिनज्योतिश्रीजी म.सा.
का चातुर्मास प्रवेश 25 जुलाई 2015 को चैन्नई में होगा

विनीत

श्री शान्तिनाथजी भगवान जैन श्वेताम्बर मंदिर ट्रस्ट

404, T. H. Road, CHENNAI - 600 021

Tel. : (044) 25904661

उपधान व दीक्षाएँ का विधि-विधान अद्‌भुत होते हैं। आपके मंत्र उच्चारण का जीवंत लहजा वातावरण में स्थिरता का रंग भर देता है।

आपश्री एक उच्चसाधक भी हैं। साधक प्रतिपल प्रसन्न रहता है। आपश्री के चेहरे पर प्रतिपल प्रसन्नता झलकती है। लाखों-करोडों लोगों के बीच बैठकर जिस तरह से गुरूदेवश्री ने अपनी आध्यात्मिकता का जादू बिखेरा है, वह देखने लायक है। शब्दों की ताकत नही, भाषा की इतनी औकात नहीं कि इस महान् व्यक्ति की विराटता का वर्णन कर सके ।

मेरा यह पहला प्रयास उस विभूति के प्रति समर्पित किये जाने वाले सूर्य के सामने दीप और सागर के सामने बूंद की तरह है।

गच्छाधिपति गुरूदेव को हार्दिक बधाई, बधाई, बधाई.....।

खरतरगच्छ शिरोमणिः गुरुदेव श्री

साध्वी प्रियदर्शांजना श्री

विश्व के इस बाग में प्रतिदिन लाखों पुष्प खिलते है, ठीक वैसा ही पुष्प मोकलसर की पहाड़ियों में लूंकड़ परिवार के नंदनवन में खिला, महका, मुस्कुराया जिनकी मधुमय सौरभ से जिनशासन निरंतर सुवासित हो रहा है। गुलाब की डाली पर फूल खिलते ही दिव्य, भव्य, नयनरम्य प्रतीत होता है। वैसे ही नन्हीं-सी कलियों के सदृश राजस्थान के धरातल पर मुस्कुरा उठा। प.पू. आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी गुरुदेव का सानिध्य पाकर खरतरगच्छ शिरोमणि बन गया।

इस धरातल पर कोई मानव सुरभित गुलाब का फूल बनकर अवतीर्ण होता है। आंख खुलते ही उस घर परिवार का बगीचा खिल उठता है, मणि जैसे शिष्य को पाकर गुरु फूलवारी खिल उठी। वह नन्हा सा पौधा आज गणाधीश जी के रूप में विकसित हो गया आज उदयमान सूर्योदय को पाकर जिनशासन....खरतरगच्छ संघ, समुदाय धन्य धन्य बन गया। जगत एक नयी चेतना, एक नयी स्फूर्ति की अनुभूति कर रहा है।

किसी संत ने कहा है-

जिंदगी न केवल सांसों का खजाना,
जिंदगी न केवल जीने का बहाना
जिंदगी सिंदूर है पूरव दिशा का,
जिन्दगी का नाम है सूरज उगाना।

हवाओं को, फिजाओं को नाज है आप पर !
बहारों को, सितारों को, नजारों को नाज है आप ।
ओ जैन जगत के दैदिप्यमान दिव्य मणि!!
गणाधीश प्रवर श्री
गमन और वसुन्धरा को नाज है आप पर !
हे गणाधीश प्रवर! श्री जिनशासन को नाज है आप पर !
गणाधीश पदारोहण की मंगल घड़ियों में
हार्दिक अभिनंदन....अभिवंदन....।

प्रत्येक पूर्णिमा
को
नाकोड़ा तीर्थ
पर पदयात्रा करने वाले भक्तों
का श्री कटारिया सिंघवी
परिवार
हार्दिक अभिनंदन करता है।
प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
को
गणाधीश पद
से विभूषित
करने पर
हार्दिक वंदन
वंदनकर्त्ता
संघवी अमृतलाल पुखराजजी कटारिया
महामंत्री : श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ, मुंबई
प्रतिष्ठान
महाभैरव मेटल इन्डस्ट्रीज-मुंबई
मो. 9819025596, 9320425596

मेरे गुरुवर मणिप्रभ तुमको वंदन

आर्या सम्यक्प्रभाश्री

सूरज सम तूं प्रखर मणि वंदन
चन्द्र सुशोभित धवल तु मणि, वंदन
रिमझिम रिमझिम झरती तेरी वाणी, वंदन
शोभित प्रकृति के तुम महाव्रती, वंदन

मेरे गुरूवर मणिप्रभ तुझको वंदन
हरित धरा पर तुम चरैवती-चरैवती, वंदन
भक्त हृदयों में गुंजित तेरे उपदेशीत, वंदन
कूका करते मधुर स्वरों के वंदन

तान सुनाते पपीहे स्वरों के वंदन
मेरे गुरूवर मणिप्रभ तुझको वंदन
माधुर्य भरा तेरे शब्दों का सागर, वंदन
मीठे वचनों का मधु कलश भरा, वंदन

शब्दों की गागर भरकर तेरे ज्ञान शिखरो को वंदन
धन्य हुआ मेरा जीवन, करती हूँ तुझको ''सम्यक'' वंदन
मेरे गुरूवर मणिप्रभ तुझको वंदन

अभिनंदन के फूल

सुलोचन चरण रज प्रिय मेघांजना श्री

गुरूवर स्वीकारो अभिनंदन।
प्रखर मनीषी दीर्घदर्शी।
वाणी आपकी अमृत वर्षी।।
जन-जन के आराध्य मणिप्रभ,
गच्छाधिपति पद को स्वीकारो अभिनंदन।।
पथ भ्रमितों के दिक् निर्देशक।
संयम साधक के आप संरक्षक ।।
हे करूणानिधि संघ-वाहक मणिप्रभ
गच्छाधिपति पद को स्वीकारो अभिनंदन।।
हे ज्योतिर्धर गच्छ दिवाकर।
नव जीवन के आप पयोधर।।

हे महामहिम गुरूदेव मणिप्रभ,
गच्छाधिपति पद को स्वीकारो अभिनंदन।।
सम्यग्ज्ञान के अखंड दीप गुरूवर।
दीन दुखियों के आप कल्पतरूवर।।
कृपा बरसाते भक्तों के आधार मणिप्रभ,
गच्छाधिपति पद को स्वीकारो अभिनंदन ।।
गच्छाधिपति पद महोत्सव मनाये।
सब मिलकर हम मंगल गाये।।
कान्तिगुरू के प्यारे शिष्य मणिप्रभ,
गच्छाधिपति पद को स्वीकारो अभिनंदन।।

आपके कुशल नेतृत्व में
खरतरगच्छ संघ प्रगति करता रहे...
शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य
उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन
आपकी कृपादृष्टि गच्छ एवं
श्रीसंघ पर सदा बनी रहे...
पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में
प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्यरत्न
Dinesh M. Jain
Proprietoe
M. : 9825033695
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
को गणाधीश पद से विभूषित करने पर
NAVSTAR METAL & ALLOYS
TRADING HOUSE FOR ASP, SSR AND JINDAL FOR THEIR PRODUCT
STAINLESS STEEL SHEETS & PLATES IN ALL GRADES
3, S.P.F Mill Compound, Nr. Kewsal Kanta, Rakhial, Ahmedabad- 380023
Phone : (079) 2274 5144, 22745679

जैसलमेर जुहारिए दुःख वारिये रे, अरिहंत बिम्ब अनेक तीर्थने नमो रे।।
जैसलमेर के पंचतीर्थी के दर्शनों का लाभ
जैसलमेर महातीर्थ का गौरव पुरे विश्व में सुप्रसिद्ध है यही वह पवित्र भूमि है जहां दुर्ग स्थित जिन मंदिर में अति प्राचीन 6600 जिन बिम्ब विराजमान है। यही वो पवित्र भूमि है जहाँ प्रथम दादागुरुदेव श्री जिनदतसूरीश्वर जी म.सा. की वह चमत्कारी चादर, चोलपट्टा एवं मुंहपती सुरक्षित है जो उनके अग्नि संस्कार में अखण्ड रहे थे। यही वो पवित्र भुमि है जहां आचार्य जिन भद्रसूरी द्वारा पंद्रहवीं शताब्दी में स्थापित दुनिया का अति प्राचीन ज्ञान भंडार है जिसमें अति दुर्लभ विजय पताका महायंत्र, पन्ना व स्फटिक की मूर्तियां तथा तिल जितनी प्रतिमा और जौ जितना मंदिर, चौदहवीं सदी में मन्त्रित की हुई ताम्बे की शलाका लगाकर श्री आचार्य जिनवर्धनसूरि जी महाराज द्वारा-स्थिर की हुई जिन प्रतिमा एवं भैरव की मूर्ति, अनेक चमत्कारी दादावाडीया, उपाश्रय, अधिष्ठायक देव स्थान एवं पटवों की हवेलियां आदि देखने योग्य स्थान है।लौद्रवपुर के अधिष्ठायक देव भी बहुत चमत्कारिक है।भाग्यशालियों को ही उनके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त होता है। यहाँ दुर्ग स्थित जिनालय, अमरसागर, लौद्रवपुर, ब्रह्मसर कुशल धाम एवं पोकरण का जिन मंदिर व दादावाडीयां आकर्षण कोरणी के कारण पुरे विश्व के जन मानस के लिए आकर्षण का केन्द्र बने हुए है।साथ ही सुनहरे सम के लहरदार धोरों कि यात्रा का लाभ ।यहाँ आधुनिक सुविधायुक्त ए.सी - नॉन ए.सी. कमरे, सुबह नवकारसी व दोनो समय भोजन की व्यवस्था है व साथ ही पंचतीर्थी के लिए वाहन व्यवस्था भी उपलब्ध है।
श्री जैसलमेर लौद्रवपुर पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, जैसलमेर, 345001 (राजस्थान) , फोन - 02992-252404

हमारे गणाधीश प्रवर श्री कैसे हैं?

–साध्वी प्रियचैत्यांजनाश्री

हे पूज्य श्री मारवाड़ रा....मोकलसर रा भाग्य जाग्या है–Good

मातेश्वरी रोहणीदेवी री कुक्षी रत्नकुक्षी है–Good

बहन विमला ने गणाधीश प्रवर रे रूप में भ्राता श्री मिल्या है–Good

पू. कान्तिसागरसूरिजी गुरुदेव री वात्सल्य भरी छत्रछाया मिली है–Good

लूंकड परिवार में जन्म लेने शासन को नाम दिपायो है–Good

आप श्री ने मुनिवेश में छोटा–भाई बहन मिलिया है–Good

काव्यशैली लेखनी साहित्य में घणी प्रगति की है–Good

विभिन्न पूजन, महापूजन री भारी रचना की है–Good

पूज्य श्री री ओजस्वी तेजस्वी ऊर्जस्वी यशस्वी वाणी है–Better

कल्पना शक्ति...अदम्य...उत्साह प्रतिभा मिली है–Better

संयम जीवन में त्याग री फूलवारी निखालसता आई है–Better

आपश्री का अध्ययन सैद्धान्तिक, आगमिक, मार्मिक है–Better

समता, सरलता, समन्वयता रो व्यवहार है–Better

खरतरगच्छ में मणिसम विरासत में मिल्या है–Better

आप ने शिष्य संपदा रूपी परिवार मिलिया है–Better

आप श्री री प्रज्ञा प्रतिभा में प्रखरता है–Better

आप श्री ने नूतन दीक्षित रूप बालमुनि मिलिया–Best

सिधनूर रा भाग्य जाग्या गणाधीश पदवी रो लाभ मिल्यो–Best

गणाधीश पदवी रे बाद प्रथम दीक्षा शिल्पा री कराई है–Best

गणाधीश पदवी रे बाद प्रथम अंजनशलाका प्रतिष्ठा कराई–Best

गणाधीश पदवी बाद बड़ी दीक्षा कराई है–Best

आपश्री गणाधीश पदवी आरोहण बाद रायपुर (छ. ग.) में प्रथम चातुर्मास ठायो है–Best

गणाधीश पदारोहण पर हार्दिक...3 बधाईयाँ....

इन्हीं मंगल कामनाओं के साथ.....

अभिवंदन ....अभिनंदन

सहपाठी बने शिखरपुरुष

तेजराज गुलेच्छा
चैयरमेन, जीतो, बेंगलोर

आज के क्षण हमारे संघ के लिये आनंद, उल्लास और नृत्य से परिपूर्ण है। लम्बे समय के बाद हमारे संघ को एक चुंबकीय एवं प्रभावक व्यक्तित्व संघशास्ता के रूप में प्राप्त हुआ है। जिस अभ्युदय के सपने हम देखते थे, आज उनके साकार होने की कल्पना की जा सकती है।

29 मई को पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. को खरतरगच्छ संघ के संचालन हेतु गच्छाधिपति पद से अलंकृत किया गया, यह घटना मेरे लिये अत्यंत गौरव रुप है। पूज्य उपाध्यायश्री के बारे में सोचते-सोचते अचानक ही मैं अतीत की घटनाओं में खो गया। पूज्य उपाध्याय श्री मेरे गाँव और गली के ही होने के कारण मैंने उन्हें बचपन से ही देखा है।

एक वक्त था जब हम मोकलसर में एक साथ स्कूल में पढते थे। यद्यपि उस स्कूल में एक साथ हमारा समय मात्र एक वर्ष का था क्योंकि उन्होंने वहाँ प्रवेश किया था और मेरी वहाँ से शिक्षा एक साल बाद पूरी हो गयी थी। पर मैंने उन्हें उस छोटी सी अवधि में जैसा देखा था, उसके लिये कहा जा सकता हैं कि उनका अतीत वर्तमान की आहट थी, जिसकी पदचाप उस समय भी सुनी जा सकती थी।

मैं स्कूल में विद्यार्थी संघ का अध्यक्ष था, अत: प्रत्येक छात्र की योग्यता एवं स्वभाव मेरी निगाहों में रहता था। 6ठीं कक्षा का छात्र मीठालाल स्वभाव से शांत पर प्रतिभा की अपेक्षा अत्यंत तेजस्वी एवं होनहार छात्र माना जाता था। उसके चेहरे पर छायी मासूमियत एवं गंभीरता किसी को अपनी ओर खींचने में पर्याप्त थी।

हमारी स्कूल में 26 जनवरी का कार्यक्रम था। विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों में एक कार्यक्रम 26 जनवरी की महत्ता प्रतिपादन का था। हमने कुछ छात्रों को भाषण हेतु तैयार किया। इसी के तहत मैंने मीठालाल को

कहा-भाषण तुझे भी देना है। पढने में अव्वल परंतु मेलजोल रखने में अत्यंत संकोची मीठा तो मेरी बात सुनते ही जैसे घबरा उठा। संकोच से उसने यही कहा-भाया! मैं नहीं बोल सकता। मुझे भाषण आता भी नहीं।

मेरी स्मृति में आज भी 48 साल पूर्व की घटना ज्यों की त्यों अंकित है। भय से सिमटी उस शक्ल को मैंने हौले से... प्यार से..... अपनत्व से..... थपथपाया और कहा-तूं इतना डर क्यों रहा है?मैं हूँ ना। मैं स्वयं तेरे को भाषण तैयार करवाऊँगा। बस! तूं तो मात्र याद कर लेना। मुझे पूरा विश्वास है कि तूं अवश्य ही अच्छा बोलेगा।

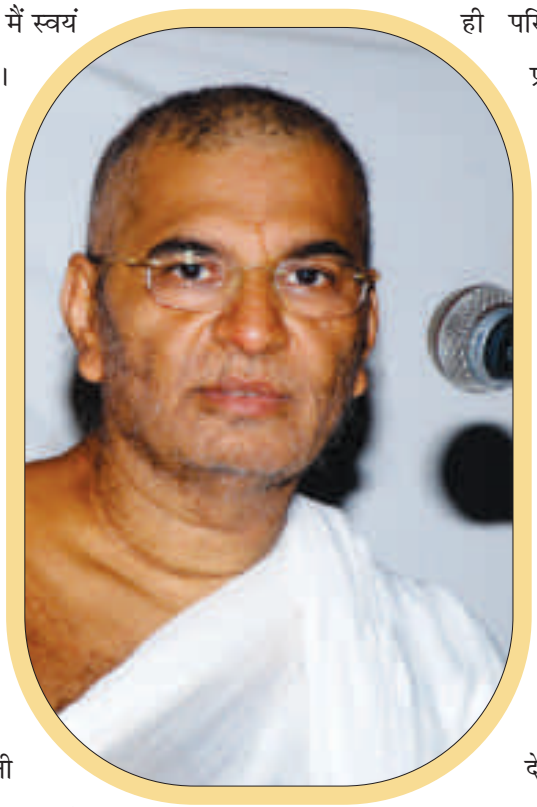

उसने ना.....नुकुर खूब किया परंतु मेरी जिद के आगे उसे झुकना पड़ा। मैंने उसे अपने पास बिठाकर दो चार बातें बतायी और कहा- बस, तूं इसी आधार पर तैयार कर ले। मेरी अपेक्षा से भी बढकर मात्र एक दिन में ही अपनी प्रतिभा मे मीठू ने अत्यंत सारगर्भित भाषण तैयार करके जब मुझे दिखाया तो मैं पढकर चकित हुए बिना नहीं रहा और अत्यंत अहोभाव से उसे कसकर अपने सीने से लगा लिया।

दूसरे दिन जब पूरे आत्मविश्वास के साथ दुबले-पतले परंतु उर्जामय मीठू ने भाषण दिया तो पूरा मैदान तालियों की गड़गडाहट से गूंज उठा।

इस घटना के तीन साल बाद अचानक समाचार मिले कि मुझ सहित पूरे स्कूल का अत्यंत प्रिय मीठू ने परिवार सहित संयम ले लिया हैं तो मैं चौका। अरे.....। यह क्या हुआ?धीरे-धीरे मैं अपनी व्यापारिक व्यस्तता में व्यस्त होता गया। मीठू, जो कि अब मुनि बन गये थे, वे मेरी स्मृति से विलुप्त हो गये।

परंतु उन्हें मैंने पुनः पहली बार 1998 में, जब हमारे ही परिवार द्वारा निर्मित दादावाडी प्रतिष्ठा में देखा तो देखता ही रह गया। कितना उन्नत व्यक्तित्व हो गया था मेरे जुनियर सहपाठी का। मैं गौरव से भर उठा उनके आभा मंडल से। उनकी ही निश्रा में इस जिनालय-दादावाडी की अत्यंत भव्यता से प्रतिष्ठा संपन्न हुई और उसके बाद तो लगातार अनेकों कार्यक्रम मैंने उनकी निश्रा में आयोजित किये एवं होते देखे।

निःसंदेह वे प्रतिक्षण आयु की अपेक्षा ही नहीं, गुणों की अपेक्षा भी उंचाईयों का स्पर्श कर रहे हैं।

उन्नत व्यक्तित्व के धनी मेरे गाँव, मेरी गली में रहने वाले एवं मेरे सहपाठी से मुनि बने पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के गणाधिपति पदारोहण की शुभवेला में हार्दिक मंगल-कामना।

जीवन के गहन चिंतक

रमेश बी. लुंकड़,
सचिव - श्री जैन श्वे. मणिधारी
जिनचन्द्रसूरि दादावाडी संघ, इचलकरंजी

जब मुझे ज्ञात हुआ कि गणाधीश विशेषांक प्रकाशित हो रहा है, तब मेरे अन्तर में भावना जगी कि क्यों न मैं भी अभिनंदन के इन क्षणों में अपने भावों को शब्दों की माला में पिरोकर समर्पित करूं।

वैसे मैं पूज्य गुरूदेव श्री से द्रव्य जगत एवं भाव जगत, दोनों से अभिन्नता के साथ जुडा हूँ। मेरी उनके प्रति असीम श्रद्धा एवं अटूट समर्पण है।

2014 का इचलकरंजी चातुर्मास तो मेरे जीवन की अमूल्य निधि और ऐतिहासिक दस्तावेज है। यह चातुर्मास जहाँ हमारे संघ के लिए अगणित आनंद एवं खुशियाँ लेकर आया, वहीं मेरे लिए तो जैसे दीपोत्सव का पर्व बन गया, जिसमें केवल आनंद ही आनंद था। और क्यों न होता?इस चातुर्मास से पहले ही मैंने तय कर लिया था कि मुझे 4-5 महिने घर-गृहस्थी-व्यापार के कार्यों को दरकिनार करके उनके पावन अवग्रह में ही रहना है। उनको स्पर्श करके आ रही पवन से ही श्वास लेना है।

स्वर्णिम चातुर्मास में पूज्य गुरूदेवश्री की धीर-गंभीर वाणी सबके दिलों में इस तरह धड़कने लगी, जैसे उन पर एकछत्र अधिकार हो गया हो। प्रवचन के समय तो सबके पॉवों में घुंघरू बंध जाते और सभी चल पडते सुखसागर प्रवचन पांडाल की ओर, जहाँ परमात्मा महावीर की अमृत-वाणी श्रवण कर तृप्ति का अनुभव होता।

पूज्य गुरूदेवश्री अनेकानेक दृश्य-अदृश्य गुणों के भंडार हैं। मैं तो क्या, कोई भी उनके समस्त गुणों को शब्दों में व्याख्यायित नहीं कर सकता। मुझमें दृष्टि और सामर्थ्य नहीं कि उनके गुणों को शब्दों का आकार दे सकुं।

भला कोई कैसे जान सकता है सागर की गहराई को, चाँद की शीतलता को, गिरिराज की उत्तुंगता को, सूर्य की तेजस्विता को?ऐसे ही हमारे गुरूदेव हैं, जिन्हें शब्दों

की चार दिवारी में बांधा नहीं जा सकता।

इस आलेख में मैं पूज्य गुरूदेव के विराट् व्यक्तित्व को एक पहलु से रूबरू करवाने का प्रयास करूँगा। इचलकरंजी स्वर्णिम चातुर्मास का सुअवसर। व्यापार के दिनों में भी सुखसागर प्रवचन पांडाल धर्म प्रेमी बंधुओं से खचाखच भरा रहता था। यूं कहूँ तो भी अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यहाँ प्रतिदिन **'स्वर्णिम दस्तावेज'** लिखा जाता था।

प्रवचन समाप्त हुआ। मैं प्रतिदिन की भाँति मंच से विशेष सूचनाएँ व जानकारी देने हेतु माईक के सामने पहुँचा। मैं सूचनाएँ देनी प्रारम्भ करूं, तब तक 70-80 लोग उठकर जाने लगे। मुझे अच्छा न लगा। मैं दो-मिनट रूका, फिर मुझे विचार आया कि मैं उन्हें मर्यादा पर थोडा प्रवचन सुना दूँ। मैंने उन्हें हिदायत देना प्रारम्भ करते हुए कहा कि पूज्य गुरूदेवश्री जब तक प्रवचन पांडाल में विराजित हैं, तब तक हमें उठकर नहीं जाना चाहिये। उनके प्रति कृतज्ञता रूप वंदन करके एवं सर्वमंगल श्रवण करके ही जाना चाहिये। यह उपालंभ देते-देते मेरे शब्द भी रूक्ष हो गये थे, ऐसा मुझे अनुभव हो रहा था, तभी पूज्य गुरूदेवश्री ने मुझे ईशारा करके बुलाया और कहा- जो चले गये, उन्हें उपालंभ ना दो। उनकी परिस्थितियाँ ही ऐसी होगी कि जाना जरूरी होगा। उन्हें धन्यवाद दो कि वे परमात्मा की वाणी श्रद्धा और शांति के साथ श्रवण तो करते हैं। संसार के हजारों जरूरी काम छोडकर आते हैं। फिर जाने वाले तो चले गये। जो लोग बैठे हैं, वे तो निर्दोष हैं, उन्हें क्यों सुना रहे हो?उन्हें शब्दों से क्यों पीडा दे रहे हो?उस समय तो मैं अच्छी तरह समझ नहीं पाया लेकिन गुरूदेव का आदेश था, अतः मैंने उद्विग्नता के साथ मंच संचालन का कार्य पूर्ण किया। लेकिन जब एंकात में मिला, तब गुरूदेव ने समझाया कि सबकी परिस्थितियाँ एक जैसी नहीं होती। अपने भाव दूसरों पर नहीं थोपने चाहिये। यहाँ अपेक्षा बढते ही तुम दुःखी हो जाओगे।

संसार के कार्यों में, व्यवहार में, धर्म क्रिया में जो भी हमारा साथ दे, उन्हें धन्यवाद देना ही चाहिये और हम देते ही हैं, लेकिन वे लोग, जो हमें पूरा साथ ना दे, उन्हें भी धन्यवाद देना चाहिये। उनके भी सुकृत की अनुमोदना करनी चाहिये। यही प्रेम, मैत्री एवं मधुर जीवन का सूत्र है।

आज जब भी इन विचारों डूबता हूँ तो मुझे अत्यंत स्फूर्ति एवं आनंद का अनुभव होता है। गुरूदेव की गुण ग्राहक दृष्टि व गहन चिंतन का विचार करते ही श्रद्धा और अधिक व्यापक हो जाती है। वे किसी भी हाल में गुणी एवं गुण का सम्मान करने से नहीं चूकते, चाहे वह किसी भी गच्छ-संप्रदाय का हो या जैनेतर हो।

यह लिखते हुये मुझे ऐसा अनुभव एवं रोमांच हो रहा है कि गुरूदेव का आशीर्वाद सदा मेरे साथ है।

पूज्य गुरूदेवश्री को गणाधीश पदारोहण की अनंत-अनंत शुभकामनाएँ उनके चरणों में प्रेषित करता हूँ।

मैं परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि आप चिरायु बनकर जिनशासन की खूब सेवा करे। आपके सानिध्य एवं मार्गदर्शन में खरतरगच्छ का खूब विकास हो, शासन-आंगन सदा खुशियों से महकता रहे। साधु-साध्वी- श्रावक-श्राविका, हर क्षेत्र में खूब आगे बढे। वह चाहे संख्या का क्षेत्र हो, ज्ञान का क्षेत्र हो, क्रिया का क्षेत्र हो, आत्मसाधना का क्षेत्र हो या धर्म प्रभावना का क्षेत्र हो।

चतुर्विध संघ उनके मार्गदर्शन में एवं उनकी आज्ञा को शिरोधार्य कर निरंतर उन्नति के शिखर का आरोहण करे। प्रभु से एक मात्र यही प्रार्थना ।

शुभकामना

मुमुक्षु रजत सेठिया-चौहटन

कैसे करूँ अपने दिल की बात।
कलको ले लिया है मैंने हाथ।
शुभ घड़ी आज आई है,
गणाधीश दिवस की खूब बधाई है।।
प्रभु से करूँ एक प्रार्थना।
करते रहे आत्मा की साधना।
जीवन उन्नत बने आपका,
हर पल रहे ध्यान वीतराग का।।
शासन के उज्ज्वल सितारे हो।
गुरुवर आप सबको प्यारे हो।
गच्छ की आप हो शान,
कान्तिगुरु का बढ़ाया है मान।।
मोकलसर में जन्म लिया है।
लुंकड कुल को चमकाया है।
गुरु की छत्र-छाया में,
संयम आपने पाया है!
तेरह वर्ष की उम्र में दीक्षा लेकर
जीवन सफल बनाया है।।
गच्छ-उन्नति का ही एक,
लक्ष्य आपने सजाया है
गच्छाधिपति का हुआ Selection,
गच्छ का रहेगा एक Attraction
हे गणाधीश पावन दिवस पर
'मुमुक्षु रजत' का स्वीकारो Congratulation.

गुरुदेव का ओजस्वी चेहरा

चम्पालाल छाजेड़-भिवंडी (मुम्बई)

मुम्बई का चातुर्मास समाप्त होते ही उग्र विहार कर पूज्य गुरूदेव श्री भिंवडी पधारे तो भिवंडी संघ के चेहरे के जो भाव थे, वो देखने लायक थे। मुझ पर प्रतिष्ठा की पत्रिका प्रकाशन का दायित्व था। मैं एक महीने में लगभग 15-17 बार पत्रिका के सिलसिले में मुम्बई जाता था। वहां बिराजित गुरूदेव से मिलने जाता तो उनका ओजस्वी चेहरा मानो मुझे बार बार यही कहता था कि सब काम समय के साथ पूरे हो जायेंगे। और वो ही हुआ, सारी तैयारिया पूरी हो गई।

पूज्य गुरूदेव का मिगसर वदि दूज को भिवंडी में भव्य प्रवेश सम्पन्न हुआ। उस समय भिवंडी संघ के लगभग 3000 लोग प्रवेश और वरघोड़े में उपस्थित थे। ऐतिहासिक प्रतिष्ठा बड़े ही हर्षोलास से निर्विघ्न सम्पन्न हुई।

हम गुरुदेव के आभारी है कि श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ भिवंडी की स्थापना भी पूज्य गुरूदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागर जी म.सा. की पावन निश्रा में ही आज से लगभग 10 वर्ष पूर्व हुई थी। आपके मार्गदर्शन में हमारा संघ दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करता रहे।

पूज्य गुरूवरश्री को संघ के गणाधीश बनने पर हार्दिक बधाई एवं वंदना।

दिव्यता के धनी : गुरुदेवश्री

मुमुक्षु शुभम् लूंकड, जोधपुर

फाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी को मणि के प्रकाश से प्रकाशित करने वाले सूर्योदय की स्वर्णिम घडियों में अद्‌भुत और अलबेले पुत्र रत्न को मां रोहिणी देवी ने जन्म दिया।

गुरुदेव श्री के जन्म से मानो मोकलसर नगरी शंखनाद से उद्‌घोषित हो उठी। पारसमलजी लूंकड के गृहांगण में एक नवजात पुत्ररत्न के अवतरण से खुशियों के पुष्प खिल उठे। हर्षानंद की कलियां महक उठी।

उस लाडले पुत्र रत्न का नाम मीठालाल रखा गया। आंखों का तेज, चेहरे की सुन्दरता, विशाल भाल... इन लक्षणों से ही भविष्य की उज्ज्वलता सामने हो आई कि निश्चित ही यह बालक मां रोहिणी की कुक्षि को रत्न कुक्षि का गौरव प्रदान करेगा।

छोटी उम्र में क्रूर काल ने पिताश्री का अपना कवल बना लिया। पिता का साया उठ गया। घर का प्रज्ज्वलित दीप सदा सदा के लिये बुझ गया। धार्मिक संस्कारों में पली मां ने आखिर कर्मों की लीला समझ कर अपने जीवन में संयम के भावों को प्रवेश दिया। वैराग्य का दीया जला। उसके प्रकाश में स्वयं को ही नहीं, अपितु अपने लाडले पुत्र मीठालाल एवं पुत्री विमला को भी आलोकित किया।

13 वर्ष के पुत्र एवं 10 वर्ष की पुत्री के साथ मां रोहिणी देवी का संयम-धारण का सपना साकार हुआ गिरिराज पालीताना की भूमि पर वि. 2030 आषाढ वदि सप्तमी के दिन!

पूज्य आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म. सा. के श्री चरणों में अपने जीवन को समर्पित किया।

'गुरु वह मानसरोवर है, जिसमें कंस जैसा अधम मनुष्य भी डुबकी लगाए तो वह हंस और परमहंस बन सकता है।'

ऐसे गुरु कान्ति की वाटिका के पुष्प बने गुरुदेवश्री!

विश्व के क्षितिज पर दिनकर बन आए पूज्य गुरुदेव गणाधीश श्री मणिप्रभसागरजी म.! भाई बहिन और मां की त्रिवेणी जिनशासन में खरतरगच्छ की आन बान और शान बनी।

तुम्हें देख कर कान्ति गुरु का अहसास होता है।
तुम्हारी हर कृति में उनका श्वास होता है।
यों तो आज अनास्था का युग है पर,
तुम्हें देख कर शिष्यत्व पर विश्वास होता है।।

जो सिर्फ अपने दायरों में सांस लेते हैं, इतिहास उन्हें अपने पन्नों पर कभी जगह बनाने की इजाजत नहीं देता और जिन्हें इतिहास रचने का जुनून होता है, वे वक्त और हालातों की कभी परवाह नहीं करते। गुरुदेवश्री रातोंरात महान् नहीं बने, इन्हें इनकी महान् आदतों, महान् सोच और महान् सपनों ने शिखर पुरूष बनाया है।

शब्दों की कारीगरी... हुनर मेरे पास नहीं कि मेरे गुरुदेव के विराट् व्यक्तित्व को शब्दों में बांध सकूं। मैं क्या कहूं, आपश्री के व्यक्तित्व के बारे में, जहाँ नई परम्पराओं के प्रति आकर्षण है, वहीं अस्तित्व से संघर्ष करती परम्पराओं के जीर्णोद्धार का जुनून मन के किसी कोने में परवरिश पा लेता है।

मुझे आपश्री के चरणों में जीवन समर्पित करने का सौभाग्य मिला, अत: मैं अपने आपको गौरवान्वित समझता हूँ... शीघ्रातिशीघ्र आपका पथगामी बनूं।

पेन से नहीं प्रेम से... मुख से नहीं मन से... देह से नहीं दिल से... शब्दों से नहीं भावों से.... होठों से नहीं हृदय से...गच्छाधिपति पद की आपको हार्दिक हार्दिक बधाई।

सेवा का सौभाग्य

मुकेश प्रजापत, बाड़मेर

पिछले 28 वर्षों से मैं गुरूदेव श्री के चरणों में सेवारत हूँ। उनके सानिध्य में बिताये पलों की मैं क्या व्याख्या करूँ? मैं गुरूदेव के बारे में क्या कहूँ ? उनकी साधना का बहुत बड़ा चमत्कार है –एक बार मुझे बुखार आ गया, तब बहुत उपाय करने पर भी मेरी तबियत ठीक नहीं हुई। मैं गुरूदेव के चरणों में गया और वासक्षेप ली। कुछ ही घंटों में मेरा बुखार उतर गया।

गुरूदेव के पास रहने का मेरा बहुत बडा सौभाग्य है। मैं जन्म से भले ही जैन नहीं, पर जीवन से जैन बनने का जो अहो भाग्य पाया, वह सब गुरूदेव श्री की ही कृपा है। उनका सरल, सहज और सौम्य स्वभाव हर किसी को आकर्षित करता है। मेरे परिवार पर उनकी बहुत बडी कृपा है।

गणाधीश बनने पर मैं उन्हें बधाई देता हूँ तथा कामना करता हूँ कि उनकी चरण-छाया मुझे सदैव प्राप्त होती रहे। वे दीर्घायु होकर शासन की प्रभावना करे।

मेरे जीवनदाता गुरुदेव

कैलाश बी. संखलेचा

परम पूज्य, मेरे श्रद्धाकेन्द्र गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभ सागरजी म.सा. 'गणाधीश' पद से अलंकृत हो रहे है। यह क्षण मेरे लिये परम प्रसन्नता का है।

हमारा परिवार तीन पीढि से गुरूदेव श्री के प्रति संपूर्णता से समर्पित है। अत: अबोध बचपन से ही मुझ पर उनका वात्सल्यभरा वरदहस्त रहा है।

यह हमारे नगर का भी परम सौभाग्य रहा है कि पूज्य आचार्यश्री के स्वर्गवास के बाद आपश्री का प्रथम चातुर्मास मेरी जन्मभूमि पादरू नगर में हुआ। उस समय आपश्री मात्र 26 वर्ष के थे परंतु प्रवचन शैली इतनी सरस और अनूठी थी कि संघ ने यह निर्णय किया कि मंदिर-दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा का महाविधान भी आपश्री की निश्रा में ही सम्पन्न हो। इस प्रकार वह ऐतिहासिक प्रतिष्ठा आपश्री के जीवन की प्रथम प्रतिष्ठा थी। साथ ही सोने में सुहागा आपश्री के प्रथम शिष्य की दीक्षा का भव्य कार्यक्रम भी पादरू में ही सम्पन्न हुआ।

तब से लेकर आज तक तीन दशकों में मैंने गुरूदेवश्री को बहुत निकटता से देखा है, समझा है, अनुभव किया है। उन्हें जितना मैंने गहराई से जाना है, उतनी ही मेरी श्रद्धा बढती गयी है।

यद्यपि अबोध बचपन से ही गुरूदेव की मुझ पर कृपादृष्टि रही परंतु शारीरिक अस्वस्थता के कारण में पूज्यश्री का शिष्य नहीं बन पाया। तथापि मेरा हृदय आज भी सर्वात्मना उनके श्रीचरणों में समर्पित है।

पूज्यश्री का जब चैन्नई में चातुर्मास था, तब मेरे पिताश्री तो चारों ही माह आपश्री की सेवा में ही अनुरक्त थे। पूज्य श्री का वह चातुर्मास पिताश्री के जीवन के संध्याकाल में जैसे बहार लेकर आया था। हमें विरासत में मिली वह गुरूभक्ति व गुरूपंरपरा के प्रति श्रद्धा आज भी शतगुणित-सहस्रगुणित होकर जीवंत है।

पूज्य श्री विराट् व्यक्तित्व के स्वामी होने पर भी

मुझ जैसे पर इतनी महर और अनुग्रहदृष्टि रखते है कि मैं उन्हें जीवनदाता कहूँ तो भी अतिशयोक्ति न होगी। अभी एक वर्ष पूर्व ही मेरी अस्वस्थता इतनी बढ गयी थी कि चैन्नई के सभी अच्छे-अच्छे डॉ.ने हाथ झटक लिये थे। जीवनदीप बुझने ही वाला था। आशा की कोई भी किरण दिखायी नहीं दे रही थी। ये समाचार ज्योंहि गुरूदेव को मिले, उन्होंने अविलंब अभिमंत्रित वासक्षेप व रक्षापोटली भेजी और उस आशीर्वाद ने संजीवनी बूंटी का काम किया। बुझता दीया फिर से रोशन हो उठा। यह पूज्यश्री के साधकीय व्यक्तित्व का ही चमत्कार था कि रक्षापोटली बांधते ही मेरे मृतप्राय: प्राण पुनर्जीवित हो उठे। मेरे प्राणदाता गुरूदेव के उपकारों का मैं किन शब्दों में वर्णन करूं?

आज मैं जो कुछ भी हूँ, उनकी कृपा की बदौलत ही हूँ।

गणाधीश पदाभिषेक अवसर पर मैं मंगलकामना करता हूँ कि आपश्री चिरायु-चिरंजीवी बनकर धर्मसंघ को अपनी छांव से सदैव हराभरा रखे।

आपश्री का अमृतमय आशीर्वाद मुझ पर, मेरे परिवार पर सदा यूं ही बरसता रहे।

We Are Very Lucky To Have A Gurudev

सौ. नीतिका सुराणा, चैन्नई

उपकारी गुरुवरजी,
श्री मणिप्रभसागरजी।
कैसे छोड़ दुं गाना तेरी गाथा
आपके नाम के अलावा
गुरु मुझे कुछ नहीं आता।।
मुझे नहीं फर्क पड़ता कोई
कौन मेरी छवि बिगाड़ रहे हैं,
मुझे तो पता है कि मेरे गुरुवर
मेरी किस्मत संवार रहे हैं।।
मणिप्रभसागरजी की कृपा
मणिप्रभसागरजी की करुणा,
सारे जग से निराली है।
जहाँ गुरुवर चरण धरे,
वो धरती नसीबों वाली है।

घणी खम्मा...

सोहन लूणिया, मुम्बई

राजस्थान के राजा
खरतरगच्छ के सिरताजा
मरुधर के महाराजा
माता रोहिणी के लाल
जिन कान्तिसूरि के कमाल
भक्तों के श्रद्धा केन्द्र
गणाधीश मणिप्रभ गुरुराज को घणी घणी खम्मा...

प्रणाम तुम्हें गुरुदेव मेरे

सचिन पारख, रायपुर (छ.ग.)

प्रणाम तुम्हें हे गुरुदेव मेरे
हे मणिप्रभसागर दूर करो अँधेरे।।
इस जग में न कोई किसी का
रहता मन में डर हर किसी का
आत्म बल का ज्ञान नहीं मुझे
परमात्म की कोई वाणी न सूझे।।
धन दौलत का मोह न छूटे
कर्म कषाय नित मुझको लूटे
धर्म की मंजिल कैसे पाऊं
हे गुरुवर तेरी शरण में आऊँ।।
अब गुरुवर बस ध्यान रखना
ज्ञान प्रकाश से जग रोशन करना
गणाधीशजी आपको मान रहे हैं
दादा गुरुदेव सम जान रहे हैं।।
बस इतना उपकार है करना।
खरतरगच्छ में नये प्रकाश भरना।
उस प्रकाश से दूर हो दु:ख मेरे।
हे मणिप्रभसागर दूर करो अँधेरे।।

गुरु उसको कहते है !!!

प्रस्तुति-पुरूषोतम सेठिया, बालोतरा

गुरू उसको कहते हैं
जो अपने आप में चैतन्य हो!
गुरू उसको कहते हैं,
जो अपने आप में अनन्य हो!
गुरू उसको कहते हैं
जो चेतना से सिद्ध हो!
इसलिए गीतार्थ में प्रसिद्ध हो।
गुरू आता है सदैव-विश्व को जगाने के लिए,
इसलिए-बाँहे फैलाए खड़ा है,
हर किसी को अपनाने के लिए!
गुरू ऐसा होता है,
जिसके चरणों को पखारने के लिए,
भक्त के भाव रहते हैं आतुर
गुरू उसको कहते हैं,
जिसके कंठ से होता है उच्चरित-सदैव ज्ञान का सुर
काश! सुने तो कोई हृदय से
-सद्गुरू तत्पर है हर किसी को अपनाने के लिए!
गुरू उसको कहते हैं,
जो अपने शिष्य को भी अपने साथ उसकी उंगली पकड़कर
उसे परमधाम ले जा सकते हैं।
शिष्य यदि हो जाये समर्पित
उसे मुक्ति पद तक पहुँचा सकते हैं।
सद्गुरू तत्पर है-
भक्ति मार्ग समझाने के लिए
काश! शिष्य समझे कि- गुरू तो बाँहें फैलाए खड़ा है!
शिष्य को सीने से लगाने के लिए!!!

मणि गुरु गुण गीतिका

(तर्ज : रत्नाकर पच्चीसी)

प्रसन्न चौपड़ा, मुंगेली

1. नहीं राग है, नहीं द्वेष है, नहीं मोह माया मान है।
सम्मान में, अपमान में, जो सदा ही एक समान है।
जिनको सदा अपने गुणों, कर्तव्यो का भान है।
गणाधीश श्री मणिप्रभ गुरू को कोटि कोटि प्रणाम है।।

2. नहीं छूटती है वासना, नहीं टूटती है कामना।
संसार के जंजाल में नहीं होती है कोई साधना।
नहीं धर्म है अन्तस में मेरे हे प्रभु मैं क्या करूं।
मिथ्यात्व के सागर से गुरूवर अब मैं कैसे तरूं।।।

3. संसार सागर में भटकते, मानव तन को पाया हैं।
जैन धर्म पाया पुण्य से, गुरू चरण को भी पाया है
आलम्बन मिला मुझे, गुरूराज आपके शरण का,।
मिट जाये जल्दी दु:ख मेरे, पुन: पुन:, जन्म मरण का।।

4. मैं पाप विषयों में फंसा, नहीं तत्व का मुझे ज्ञान है।
अल्पज्ञ हूँ फिर भी, मुझे खुद पे बडा ही गुमान है।
मै हिंसा में फंसा हुआ, पापी में गुरूवर घुल गया।
कहता है आगम सार क्या, ये सारी बातें भूल गया।।

असीम आनंद के क्षण

सतीश-सुदीप कोचर, दुर्ग

खरतरगच्छ गणाधीश प.पू. गुरूदेव श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. को वंदन, जो जीवन में भर दे स्फूर्ति स्पंदन।

गुरूदेव! आपके सद्‌गुणों का वर्णन शब्दातीत है। कहाँ से प्रारंभ करूं?कैसे करूं?क्या लिखुं?कलम तो उठा ली है परंतु समझ नहीं आता कि पहले किस गुण का वर्णन करूं? ज्ञान का या फिर विनम्रता का, सरलता का या सहदयता का?वत्सलता का या पर दु:खकातरता का?मुझ जैसी छोटी नदी विराट् सागर के लिये कह भी क्या सकती है?यह दीपक सूर्य के लिये क्या कहे?यह बिन्दु सिन्धु के लिये क्या कहे? यह गागर सागर के लिये क्या कहे?यह श्रद्धालु अपने श्रद्धेय के लिये क्या कहे?

जिस प्रकार आकाश के तारों को, पृथ्वी के रजकणों को, समुद्र की लहरों को, मानव-हृदय की विचार-तरंगों को, वर्षा के जल बिन्दुओं की गणना करना असंभव है, उसी प्रकार गुरूदेव श्री आपके जीवन की गुण-राशि अवचनीय है। मेरी लेखनी में वह तेज कहाँ, जो आपके गुणों का प्रकाश करूं, गुणों के आकर गुरूदेव कृपा हो ऐसी मैं भी विकास करूं।

अपके विचारों में हिमालय सी ऊँचाई, आचार में दुग्ध सी शुभ्रता, ऐसे विराट् व्यक्तित्व और अगाध कर्तृत्व को जानना असंभव ही है। गंगा की तरह पावन दिव्य जीवन, मेघ सी सरस रसधार बरसने वाली मीठी-वाणी, स्फटिक सी शुद्ध निर्मल काया में करूणा से लबालब अंत:करण के दर्शन, मानो संसार के सारे गुणों ने, सारी अच्छाईयों ने ही आपकी देह को धारण कर रखा हो। दिव्य गुणों का दीपक है आपश्री का दिल, जिसमें कर्तव्य की कटोरी में सद्‌भावना का स्नेह डालकर सद्‌विचारों की ज्योति से दुनिया को आलोकित कर रहा है।

आज मन हर्षित है, प्रफुल्लित है, समता के सागर में आध्यात्मिकता की लहरें हिलोरे ले रही है और इन लहरों से हम सभी का मन जुड़ा हुआ है। अफसोस के साथ लिखना पड़ रहा है कि हम उन स्वर्णिम पलों के प्रत्यक्ष साक्षी नहीं बन पाये, जिन पलों में आप गणाधीश बने।

धन्य है आपश्री के कुल और वंश को! धन्य है आपश्री के माता को, जिन्होने आपश्री को परम पवित्र चारित्र मार्ग पर चलने की सहर्ष अनुमति प्रदान की।

अंतत: आपश्री जीवनधारा को शाश्वत सत्य लक्ष्य के प्रति प्रवहमान रखते हुए तथा भवभ्रमण के अंधकार को आत्मा से आलोकित कर शरीर, मन, इन्द्रिय आदि की सघन परतों के नीचे दबे अनंत-अपरिमित ज्ञान को प्राप्त करें ।

दरअसल कलम मैंने चलाई है लेकिन अंतर के ये उद्‌गार मेरे पिता श्री स्व. श्री सोभागमलजी कोचर के हैं। उनसे जितना आपश्री के बारे में सुना, महसूस किया, उसे सीमित शब्दों द्वारा अभिव्यक्त करने का प्रयास किया।

अभिनंदन – गीत

(तर्ज- बाजे रे बाजे-बाजे नौबत बाजे......)

श्रीमति दक्षा पी. मुणोत, रायपुर

म्हारे अंगणा गुरूवर पधारे-2
धन्य हुए है भाग्य हमारे-2
आयो रे आयो-आयो अवसर सुहाणो-2
ढोलक बाजे, मृदंग बाजे, वीणा के सुर बाजे।
पुलकित है मन, गदगद है मन, कोटिकोटि अभिनंदन ....
आयो रे आयो-आयो अवसर सुहाणो- सुहाणो

निसा रे रे रे, म रे रे रे रे, नि सा रे रे रे सा
सा रे म पनि सा नि प म रे निपमरेसा पमरेसा निसानि
पारसमलजी रो राज दुलारो, रोहिणी देवी री आंख रो तारो।
जिनशासन रो दिव्य सितारो, गणाधीश पद पायो।
शांत सलोनी सूरत थारी, देख-देख मन भायो।
हो ऽऽऽ लुंकड कुल रा थे उजियारा, गुरूवर थारी महिमा भारी...............
आयो रे आयो-आयो अवसर सुहाणो- सुहाणो ।। 1 ।।

बालपणे में पालीतणा में, माँ-बहिना संग संयम पायो।
कांतिसागरजी रा पट्टधारी, मणिप्रभ नाम सुहायो।
सत्य अहिंसा पथ अनुगामी, ज्ञान-दीपक प्रगटायो।
हो ऽऽऽ धन्य-धन्य है भाग्य हमारे, ऐसे गुरूवर हमने पाये।
आयो रे आयो-आयो अवसर सुहाणो- सुहाणो ।। 2 ।।

प्यारे-2 गुरुवर पधारे, नरनारी मिल मंगल गाये।
प्रार्थना स्वीकार करके, चौमासा यहाँ ठाया।
सद्गुण की सुगंध से सारा आंगन है महकाया
हो ऽऽऽ गुरूवर की मधुरी वाणी का,
निशदिन बहता अमृत झरणा ....
आयो रे आयो-आयो अवसर सुहाणो- सुहाणो ।। 3 ।।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित –
राहुल ए. संघवी – 9408395557, 8735039456
• तमन्ना प्रेजेन्ट्स
• राहुल इवेण्ट
अंजनशलाका, प्रतिष्ठा, दीक्षा, नव्वाणुं, चातुर्मास, संगीत संध्या, गजल, गरबा, मैजिक शो, ड्रामा आदि हर प्रकार के आयोजन में पूर्ण सेवाऐं प्रदान करने के अनुभवी
106, सांई कृपा सोसायटी, अमित नगर के पास, कारेली बाग, बड़ोदरा (गुजरात)

पारस-मणि

राकेश पाण्डेय

विभ्रंश स्मृतियों के अंधकार में उल्का आलोक का एक विस्फोट होता है, और मैं लौट जाता हूं आज से करीब तेईस साल पीछे। संभवत: सन् 1992 का जुलाई माह था वह; जब रेतीले राजस्थान की तपती धरती में बारिश की बूंदों के साथ महोपाध्याय समयसुन्दर जी म. की जन्मस्थली सत्यपुर (सांचोर) में एक महामना के दर्शन व भाव-वंदन करने का अवसर उपस्थित हुआ था। यौवन की असीम ऊर्जा और उच्श्रृंखल वैचारिक प्रवाह के बीच एक सौम्य धवल वेशधारी जैन साधु के दर्शन का यह अवसर मेरे लिए अप्रतिम था। मैंने अपने तब तक के जीवन में पहली बार किसी जैन साधु के दर्शन किये थे। जिज्ञासु मन उत्सुकता से भर गया। मन की उत्सुकता ने करवट ली और वैचारिक प्रवाह चिंतन में बदल गया। पारस-मणि तो स्पर्श करने के बाद लोहे को सोने में बदलती है, परंतु आप श्री के प्रथम दर्शन ने ही मेरा जीवन बदल दिया।

यह मेरे जीवन के रूपांतरण का संक्रांति काल था।

उस समय तक मेरा कवि हृदय व भावुक मन कल्पना लोक में विचरण करता रहता। धीरे-धीरे मैं जैन धर्म की गहराइयों में उतरने लगा। शास्त्रीय और आगमिक सिद्धांतों पर चिंतन-मनन आरंभ हुआ। मुझे एक शब्द मिला- पुरुषार्थ। मेरे चिंतन की दिशा बदली- 'जब अपने पुरुषार्थ के बल पर एक आत्मा तीर्थंकरत्व, सिद्धत्व, बुद्धत्व व मोक्ष को उपलब्ध हो सकता है; तो फिर अन्य सांसारिक कार्य मुश्किल कहां रहे!'

मैंने भौतिक उपलब्धियों को जीवन-यापन तक सीमित रखा और ज्ञानार्जन को प्राथमिकता दी। स्वाध्याय को परिपक्वता प्रदान करने के लिए मैंने प्राकृत और गुजराती भाषा सीखीं। स्वाध्याय मेरे लिए व्यसन सा बन गया। परिणामत: जैन धर्म के सैद्धांतिक व भौतिक वैभव का विवेचन करने वाली मेरी शोधपरक रचना 'वैभव और वैराग्य' का प्रकाशन भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के 'प्रकाशन विभाग' द्वारा किया गया। संभवत: यह जैन धर्म पर भारत सरकार द्वारा प्रकाशित पहली व एकमात्र पुस्तक है।

यह प्रसंग आत्म-प्रशंसा का नहीं है। न ही किसी की भावनाओं को आहत करने का है। आप चाहें तो स्वयं भी कर सकते हैं। कोई बहुत मुश्किल काम नहीं है मुंह पर कपड़ा बांध कर मंदिर जी में प्रवेश करना, सच बोलना या लेदर का उपयोग छोड़ना.....। मैं तो कहूंगा कि कर के देखिये। पर-निंदा, पर-छिद्रान्वेषण, क्रोध और कषाय से ऊपर उठिये। मन की शांति के साथ निश्चित रूप से आप को भी वही आत्मानंद मिलेगा, जिसका अनुभव मैं करता रहता हूं।

सांचोर में परम पूज्य गुरूदेव श्री का वह प्रथम दर्शन मेरे जीवन का उत्स था। उसके बाद के तो कितने ही प्रसंग हैं, कितनी बार मिलना हुआ, याद भी नहीं है। पर एक बात हमेशा याद रहती है। पूज्य श्री के पास पहुंच कर जिस आत्मीयता और अपनेपन का अनुभव होता है, वह अनिर्वचनीय है। लगता है, जैसे अपनों के बीच आ गया हूँ। वह धवल वेश मुझे आमंत्रण देता है। वहां एक असीम शांति का अनुभव होता है।

पूज्य श्री के गणाधीश पदारोहण के अवसर पर बधाई देने का सामर्थ्य मुझमें नहीं।

मेरा विनयावनत वंदन.....।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी की जय
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों की जय
पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में
प. पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न
पूज्य गुरुदेव उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
को गणाधीश पद से
विभूषित करने पर
हार्दिक वंदन...
अभिनंदन
M.A.ENTERPRISES
Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)
ASHOK M. BHANSALI
FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

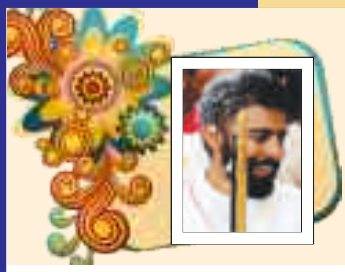

संथारा आत्म हत्या नहीं, आत्म–साधना है...

मुनि मनितप्रभसागर

जीवन और मृत्यु की आकांक्षा से मुक्त होकर अध्यात्म में पूर्णरूपेण स्थित होने की विशिष्ट प्रक्रिया को अनशन कहा जाता है। यह मृत्यु से मृत्युंजयी बनने की अनुत्तर साधना है।

जिस प्रकार बीज–वपन की फलश्रुति फल की प्राप्ति है, उसी प्रकार समस्त आराधना की फल श्रुति समाधि मरण की प्राप्ति है। आचार्य पूज्यपाद ने मृत्यु को महोत्सव बनाने की अपूर्व विधा का प्रतिपादन 'मृत्यु महोत्सव' नामक ग्रंथराज में किया है। उसमें वे अनशन को सकल–साधना का निचोड बताते हुए कहते हैं :–

तप्तस्य तपसश्चापि पालितस्य व्रतस्य च ।
पठितस्य श्रुतस्यापि, फलं मृत्युः समाधिना ।।

जीवन पर्यन्त तपे हुए तप का, पाले हुए व्रत व महाव्रत का और पढे हुए समस्त श्रुत–ज्ञान का फल समाधि मरण की प्राप्ति है। समाधि मरण को अनशन एवं संथारा भी कहा जाता है।

अनशन की पूर्णता और सफलता आत्म समाधि से मानी जाती है। अनशन में साधक कषायों का कृशीकरण और आहार का अल्पीकरण करता हुआ राग–द्वेष से उपरत होकर समत्वपूर्वक मरण को प्राप्त करता है, इस कारण इसे समाधि मरण कहा जाता है।

संथारे का तात्पर्यार्थ संस्तारक से है। व्यवहार भाषा में साधु के बिछौने को संस्तारक और संथारा कहा जाता है। पूर्व समय में अनशन करने वाला तृण अथवा चावल की भूसी का संथारा स्वीकार करता था, उस आधार पर कालानुक्रम से अनशन को संथारा कहा जाता है।

संवेग का उत्कर्ष है संथारा–

संथारा संवेग और वैराग की उत्कृष्ट परिणति है । यह हँसते मुस्कुराते मृत्यु को गले लगाने की अनोखी प्रक्रिया है। शास्त्रों में कहा गया है – जिसका चित्त प्रसन्न हो, जिसे अनित्य जीवन की संबोधि हो गयी हो और जो जन्म–जरा–मृत्यु की वेदना से मुक्त होकर संसार–सागर का पार पाना चाहता हो, वही आत्मार्थी उत्तरोत्तर निर्वेद व संवेग का पोषण करता हुआ अनशन कर सकता है।

अनुपशान्त आत्मा अनशन का अधिकारी नहीं होता, तथापि निदान से प्रेरित होकर और चारित्र धर्म से खिन्न होकर कुपितावस्था में जो अनशन स्वीकार किया जाता है, उस मरण को शास्त्रों में अनशन नहीं, अपितु अकाम और बालमरण कहा गया है।

वीरता की सर्वोच्च कसौटी –

अनशन का अर्थ है – स्वेच्छापूर्वक मृत्यु का वरण करना। यह वीरता, धीरता और गंभीरता की सर्वोच्च कसौटी है। महासंग्राम में हजारों लाखों करोड़ों मनुष्यों को पराजित करने वाले की अपेक्षा एक मात्र दुर्जेय आत्मा को जीतने वाले की परम विजय कहलाती है।

अनशन में शुद्ध अध्यवसायों में आरोहण करता हुआ साधक समस्त कर्मों का क्षय कर या तो परमात्म दशा को प्राप्त करता है अथवा देवलोक में जाता है।

अनशन कब करें ?

उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है –

लाभांतरे जीविय बूहइत्ता
पच्छा परिन्नाय मलावधंसी।

जब तक इस नश्वर शरीर से नये नये गुणों की उपलब्धि होती रहे, तब तक साधक तन–जीवन को पोषण दे और जब यह शरीर साधना में निरूपयोगी प्रतीत हो, तब साधक परिज्ञा पूर्वक मल–त्याग की भाँति इसका त्याग कर दें।

ज्ञ परिज्ञा से जब साधक यह जान लेता है कि यौगिक शक्तियाँ क्रमशः क्षीण होती जा रही हैं, रत्नत्रयी की साधना में शरीर साधक बनने की बजाय बाधक बन रहा है और सम्यग् ज्ञान दर्शन–चारित्र तथा तत्पश्चरण पूर्वक संचित कर्मों का क्षय करने में मैं अशक्त हूँ तब साधक प्रत्याख्यान परिज्ञा पूर्वक अनशन के द्वारा शरीर का त्याग कर देता है।

सूत्रकृतांग सूत्र में रोग होने पर अथवा नहीं

होने पर तथा बुढापा आने पर अथवा न आने पर, इन चारों अवस्थाओं में श्रमण तथा श्रमणोपासक के लिये अनशन का उल्लेख किया गया है।

मूलाराधना में उसे अनशन का अधिकारी कहा गया है –

(1) जो दुश्चिकित्स्य व्याधि से पीड़ित हो और जिस रोग का प्रतिकार करना असंभव हो।
(2) वृद्धावस्था आने से जिसका देह बल क्षीण हो गया हो और संयम पालन दुष्कर हो गया हो ।
(3) मनुष्य, देव अथवा तिर्यंचकृत उपसर्गों के कारण मरण निकट प्रतीत हो रहा हो।
(4) चारित्र ध्वंस हेतु विविध अनुकूल उपसर्ग उपस्थित किये जा रहे हो।
(5) दुष्काल होने से शुद्ध भिक्षा का अभाव हो।
(6) गहन वन में भटक जाने से सम्यग् पथ प्राप्त न हो ।
(7) इन्द्रिय शक्ति का अभाव होने से विहार करने में अशक्त हो।

मनोरथ श्रमण एवं श्रमणोपासक का –

अनशन को धर्म साधना के मंदिर का स्वर्ण कलश कहा गया है। जिस प्रकार सुरभि को पुष्प का, प्रकाश को दीपक का तथा दीप्ति को सूर्य का सार कहा गया है, उसी प्रकार समाधि–मरण को सम्पूर्ण जीवन का सार कहा गया है। संथारे की साधना श्रमण एवं श्रमणोपासक, दोनों के लिये समान रूप से सर्वथा करणीय है। 'पण्डित मरण की प्राप्ति' दोनों का मनोरथ कहा गया है।

श्रमण एवं श्रमणोपासक नित प्रति इस मनोरथ का सेवन करते हैं कि मैं पण्डित मरण को कब प्राप्त करूंगा' जिसका निर्देश स्थानांग सूत्र में इस प्रकार किया गया है–

कयाणं अहं अपश्चिम मारणंतिय
संलेहणा झूसणा झूसिते भत्तपाण
पडियाइक्खित्ते पाओवगत्ते कालं अणवकंखमाणे
विहरिस्सामि ?

भावार्थ– कब मैं अपश्चिम मारणांतिक संलेखना की साधना स्वीकार कर, भक्त पान का परित्याग कर, पादपोपगमन अनशन स्वीकार कर मृत्यु के प्रति निरवकांक्षी बनकर विचरण करूंगा।

अनशन के प्रकार –

अर्हत् प्रतिपादित भगवती सूत्र में दो प्रकार के अनशन विवेचित हैं–इत्वरिक तथा मारणांतिक। जघन्यतः एक दिन का तथा उत्कृष्टतः छह मास के तप को इत्वरिक तथा मृत्यु पर्यन्त आहार त्याग को यावत्कथिक कहा गया है।

प्रायः जीवन के अन्त में तथा मृत्यु के सन्निकट होने पर आचरित होने से यावत्कथिक अनशन को मारणांतिक भी कहा गया है। इस प्रकार यात्कथिक तथा मारणांतिक दोनों समानार्थी हैं।

औपपातिक सूत्र में मारणांतिक अनशन दो प्रकार से व्याख्यायित है –

पादपोपगमन और भक्त प्रत्यारव्यान। इनके भी दो दो भेद कहे गये हैं व्याघात तथा निर्व्याघात। भूकंप, दावानल, सिंह आदि उपसर्गों के उपस्थित होने पर हठात् जो अनशन किया जाता है, उसे व्याघात अनशन कहते हैं। जीवन का अन्त करने वाले उपरोक्त उपसर्गों के अभाव में यथाकाल जिस अनशन का आचरण होता है, वह निर्व्याघात अनशन कहलाता है।

समवायांग सूत्र में अनशन के तीन प्रकारों का वर्णन प्राप्त होता है –

(1) **भक्त प्रत्याख्यान**–इसमें तीन अथवा चार आहार का त्याग होता है। इस प्रकार का अनशन करने वाला गमनागमन कर सकता है। स्वयं अपनी शुश्रुषा कर सकता है तथा अन्य से भी करवा सकता है।

(2) **इंगिनी**–इसमें नियमतः अशन, पान, खादिम और स्वादिम, इन चतुर्विध आहारों का त्याग किया जाता है। इंगिनी अनशन करने वाला नियत क्षेत्रान्तर्गत गमनागमन सकता है। स्वयं अपनी सेवा कर सकता है परन्तु भक्त प्रत्याख्यान की भांति अन्य से शुश्रुषा नहीं करवा सकता।

(3) **पादपोपगमन**–चतुर्विध आहार के प्रत्याख्यान से युक्त प्रायोपगमन अनशन में अनशन करने वाला जिस आसन में अनशन का प्रारंभ करता है, उसी आसन में मरणांतक स्थिति तक स्थिर रहता है और स्वयं शुश्रुषा करने और दूसरे से करवाने का त्याग करता है। पादपोपगमन में अनशन करने वाला अचल वृक्ष की भांति निश्चेष्ट होता है चाहे कैसा भी प्राण लेवा परीषह उपस्थित हो जाये। जैसा कि अन्तकृत्दशांग में गजसुकुमाल का उदाहरण प्राप्त होता है। यह अनशन तीन अवस्था में किया जा सकता है (1) लेटे हुए (2) बैठे हुए (3) खडे – खडे।

आगमों में अनशन अन्य भी अनेक भेद कहे गये हैं– यथा सपराक्रम एवं अपराक्रम। जंघा बल क्षीण

होने पर किया जाने वाला सपराक्रम तथा क्षीण न होने पर भी किया जाने वाला अपराक्रम अनशन कहलाता है। एकान्त (गुफा आदि) में किया जाने वाला अनशन निर्हारि एवं उपाश्रय में किया जाने वाला अनिर्हारि कहलाता है।

संथारा आत्महत्या नहीं है–

संथारा जीवन के प्रति समता तथा मृत्यु के प्रति निर्भयता की उच्चतम साधना है। देह में रहते हुए देहातीत बनने का संकल्प संथारे के द्वारा अभिव्यक्त होता है।

यह साधना समस्त साधकों के लिये है। इसमें जाति या संप्रदाय का कोई बंधन नहीं है। तभी तो आचार्य विनोबा भावे ने अपने अन्तिम समय में इस संलेखना की महिमा का उल्लेख करते हुए 155 घंटों का अर्थात् साढे छह दिनों का अनशन स्वीकार कर अपनी मृत्यु को महोत्सव बनाने का श्लाघनीय उदाहरण प्रस्तुत किया था।

अनशन में देह दमन का नहीं अपितु कर्म शमन का ऐसा अनूठा प्रयोग है जिसमें कषायों को निर्बल और आत्मा को निर्मल किया जाता है।

अनशन वीरत्व एवं समत्व की वह कसौटी है जिसमें साधक उत्तरोत्तर संसार से विमुख, आत्मशुद्धि की ओर उन्मुख और मोक्ष के सम्मुख होता है। अनेक अज्ञानी इसे आत्महत्या की संज्ञा देते हैं परन्तु अनशन और आत्म–हत्या सर्वथा भिन्न है । संथारा प्रसन्न अवस्था में स्वेच्छा से स्वीकार किया जाता है जबकि आत्महत्या मजबूरी में की जाती है। संथारे में मोक्ष प्राप्ति की विशुद्ध कामना और सकारात्मक सोच का सुंदर संयोग होता है जबकि आत्महत्या निराशा, घुटन तथा नकारात्मक सोच की अन्तिम परिणति है।

अनशन जीवन का एक वह उज्ज्वल आलेख है जो सदा–सदा मृत्यु–महोत्सव की प्रेरणा देता है जबकि आत्महत्या जीवन के पन्नों पर अंकित एक ऐसा काला धब्बा और कलंक है जिस हजारों वर्षों बाद भी मिटाया नहीं जा सकता।

संथारा जन्म–मरण की अनादि परम्परा का विच्छेद करने वाला दिव्य संकल्प है। आत्म हत्या में असंतोष और रोष होने के कारण आत्मगुणों का घात होता है और पतन की खाई में गिरकर जीव पुनः पुनः जन्म मरण की पीड़ा को प्राप्त करता है।

निश्चित परमात्मा महावीर का जीवन–दर्शन जितना आह्लादकारी है, उनका अनशन का दिग्दर्शन उतना ही आश्चर्यकारी है । राजस्थान उच्च न्यायालय ने अनशन–संथारे को आत्म–हत्या के तुल्य बताकर उसे अपराध की श्रेणि में डाल दिया है। न्यायालय का यह निर्णय अतीव निंद्य और अनुचित है, इसे शीघ्र ही खारिज किया जाना चाहिये ।

पवन श्रीश्रीश्रीमाल श्री मणिधारी युवा परिषद् मुंबई के अध्यक्ष चुने गए

श्री मणिधारी युवा परिषद, मुंबई की साधारण सभा में सांचोर निवासी परम गुरुभक्त श्री पवनराज नारायणमलजी श्रीश्रीश्रीमाल को सर्व सम्मति से अध्यक्ष चुने गये। वे परिषद के संस्थापक सदस्य भी है। एवं विगत 12 वर्षों से संस्था के विभिन्न पदों पर रहते हुए काफी कार्य किया है। संघ में आप एक कर्मठ कार्यकर्ता के तौर पर जाने जाते है। उनके कुशल नेतृत्व में श्री मणिधारी युवा परिषद मुंबई नई ऊंचाईया प्राप्त करेगी।

– धनपत कानुंगो

खरतरगच्छ युवा परिषद् रायपुर का गठन

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से रायपुर शहर में श्री खरतरगच्छ युवा परिषद् का गठन किया गया। सर्वसम्मति से श्री सुरेशजी भंसाली को अध्यक्ष चुना गया। श्री तरूण कोचर उपाध्यक्ष, श्री पारसजी पारख महामंत्री, श्री विजयजी मालू को कोषाध्यक्ष चुना गया। श्री सचिन पारख को प्रचार प्रभारी एवं श्री अरूण गोलेच्छा को वैयावच्च प्रभारी बनाया गया।

पूज्यश्री ने कहा–हमें खरतरगच्छ के विकास, संवर्धान के लिये पूर्ण रूप से समर्पित रह कर कार्य करना है। परिषद् को इन कार्यों में पूर्ण रूप से संलग्न रहना है।

– सचिन पारख, प्रचार प्रभारी

क्रियानिष्ठ व्यक्तित्व श्री संघवी पारसमलजी भंसाली एवं होनहार युवक श्री निखिल भंसाली की अकल्पित विदायी

बहिन म. डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभा श्री

बैंगलोर से अचानक कुशलजी गोलेच्छा का फोन आया और उन्होंने जो समाचार दिये उसे सुनकर पलभर के लिये विचारों का प्रवाह जैसे थम गया, दिमाग कुन्द हो गया। ऐसा कैसे हो सकता है? अरे! न कोई बीमारी की सूचना थी और न किसी प्रकार की कोई तकलीफ थी, यह अचानक कैसे घटित हुआ। सूचना थी संघवी चौथमलजी के पौत्र एवं सुरेश जी –सुमित्रा जी के इकलौते पुत्र भी निखिल भंसाली की मृत्यु की!

प्रकृति में हवा में बार–बार मेरा प्रश्न उछलता रहा पर उत्तर कहीं कोई देने वाला न था ! जो घटना थी, उसे असत्य किया नहीं जा सकता था और घटना की सत्यता पर मन विश्वास करने के लिये तैयार नहीं था पर भरोसा कब तक नहीं करती और मैं भरोसा न करती, इससे क्या घटना बदल सकती थी।

मेरी भावनाओं को आखिर यथार्थ की कठोर चट्टान के समक्ष झुकना पडा। यद्यपि झुकने को मन झुका पर भावों का तूफान भीतर ही भीतर मुझे झकझोरता रहा–क्या यही संसार है? क्या इसी अविश्वसनीय संसार के लिये हम लंबी–लंबी विराट्काय–योजनाएँ बनाते हैं ? भरोसा नहीं अगले पल का पर जब बातचीत करते हैं तो ऐसा लगता हैं कि कम से कम हमारी आयु 100 साल की तो है हीं ।

मेरी ऑखों में कभी स्वप्न में भी याद न आने वाला निखिल प्रतिपल घूम रहा था । मन पर एकदम उदासी की परतें छा गयी । कितना होनहार आशाओं से भरा हॅसमुख निखिल....! माता–पिता एवं परिवार का भविष्य निखिल.....! पत्नी एवं होने वाले शिशु का स्नेह प्रदाता निखिल..... ! प्रकृति ने यह कैसा अन्याय किया कि पलभर में ही सभी की आशाओं पर पानी फेरते हुए निखिल के आयुष्य की ड़ोर काट दी ।

निखिल की यद्यपि मैंने बहुत ज्यादा नहीं देखा पर अहमदाबाद प्रवास में दो–चार बार अवश्य देखा था मैंने उससे जब भी संवाद किया था, उसने

मुझे प्रभावित ही किया था।

मुझे लगा था वह नम्र होने की साथ–साथ धार्मिक एवं अपने पारिवारिक संस्कारों के अनुरूप शिष्ट हैं। लगातार उसे अगर सत्संग मिला तो अवश्य ही बहुत जल्दी वह अपने परिवार की परम्पराओं के अनुरूप और अधिक ढल जायेगा।

उसकी पत्नी की पारिवारिक परम्परा यद्यपि तेरापंथी समाज से थी पर जब उसे मंदिर दर्शन की एवं चैत्यवंदन की विधि सीखने की प्रेरणा दी तो उसने तुरंत उसे स्वीकार करते हुए सीखना प्रारंभ भी कर दिया।

परंतु अचानक विधि ने यह कैसा क्रूर खिलवाड़ किया ? अभी तो जीवन का प्रारंभ हुआ था और शायद निखिल ने अपने लिये, अपने परिवार के लिये बहुत सारी कल्पनाएँ भी की होगी परंतु सब कुछ यथार्थ के कठोर थपेड़ों के समक्ष बिखर गया और देखते–देखते संपूर्ण स्वस्थ निखिल सभी को आँसुओं के समुन्दर में तैरता छोड़कर विदा हो गया।

उसकी चिन्ता अभी ठण्डी हुई भी न थी कि अचानक समाचार मिले– निखिल की मृत्यु के कारण बैंगलोर से अहमदाबाद पधारे श्री पारसमल जी संभाली अचानक उस्मानपुरा मंदिर में दूसरे तल में विराजमान परमात्मा की पूजा करते–करते गिर पडे हैं । परमात्मा की निश्रा में ही गिर पड़े श्री भंसाली जी को हाथों–हाथ

समीप खडे लोगों ने उठाया तो उस समय भी गिरने एवं उस कारण लगी चोट को भूलकर श्री भंसाली ने उनसे कहा– अभी मुझे दो भगवान की पूजा करनी बाकी है। उन्हें हाथों में उठाकर लोगों ने पूजा करवायी और हाथों में उठाकर ही उन्हें नीचे लाया गया।

हॉस्पिटल ले जाते समय रास्ते में जब उनसे पूछा–आप कैसा महसूस कर रहें हैं ? तुरंत उनका उत्तर था– मैं नवकार मंत्र का जाप कर रहा हूँ ! परंतु धीरे वे बेहोशी की ओर बढ़ गये । उन्हें सीधा हास्पिटल ले जाया गया । ड़ॉक्टरों ने उपचार शुरू किये पर उनका मस्तिष्क और उसकी समस्त क्रियाएं समाप्त हो चुकी थी ।

बैंगलोर से पुत्र, पौत्र, बहुएँ, सारा परिवार अहमदाबाद पहुँच गया । स्वास्थ्य स्थिर था। किसी भी प्रकार का सुधार नहीं हो पा रहा था। नवकार महामंत्र का जाप जारी था। पाँचों बंधुओं का परिवार उपस्थित था। पूरे परिवार ने विचार विमर्श के अंत में उन्हें बैंगलोर ले जाना तय किया। चार्टर प्लेन अहमदाबाद पहुँच गया, परंतु नियति को कुछ और मंजूर था। उन्होंने अपने भरे परिवार के बीच अमहमदाबाद में ही अंतिम सांस ली।

पारसमलजी का पूरा जीवन मेरी आँखों में चलचित्र की भॉति तैर गया! मैं उन्हें वैसे तो बहुत बचपन से जानती हूँ। फिर भी बहुत निकटता से मैंने उन्हें 2004 में जब उपाध्याय श्री भाई म.सा. की निश्रा में हमारा बैंगलोर चातुर्मास था, तब से देखना शुरू किया था।

हम जब बैंगलोर चातुर्मास हेतु जा रहे थे, तब क्रियानिष्ठ श्री पारसमल जी विहार में हमसे मिलने अपने अन्य दो तीन ट्रस्टीगणों के साथ पधारे। उस दिन अष्टमी थी। उन्होंने अपने साथियों से कहा– आप रूके, मैं जरा अपना आयंबिल कर लूं। मैंने पूछा–यात्रा में भी आप आयबिल करते हैं ! उन्होंने तुरंत कहा– अष्टमी व चतुर्दशी को आयंबिल करना, यह मेरा वर्षो का धर्म है। उनका आयंबिल भी परम शुद्ध होता था। मात्र कडु किरायता के पानी में रोटी भिगोकर खा लेना ।

मैं उनकी इस तपनिष्ठा को देखकर सहज ही अहोभाव से भर उठी। अपनी रसना पर इनका कितना नियंत्रण है! वर्तमान में जहाँ आयंबिल के भोजन में भी स्वाद की कामना से सामग्री का निरंतर विस्तार हो रहा हैं, वहाँ लगभग 75 वर्ष में भी भोजन के प्रति कैसी गहरी अनासक्ति । किरायता अपने आप में कितना कड़वा होता है, इसे पीना भी पड़े तो व्यक्ति नाक बंदकर एक श्वास में ही पीना चाहता है, वहीं यह रसना त्यागी अत्यंत सहजता से किरायते के पानी को सब्जी का रूप देकर स्वीकार कर लेता है !

उनकी भावुकता भी बहुत गहरी थी ! भाव भरे किसी भी प्रसंग में उनकी आँखें बरसे बिना रह ही नहीं सकती थी ! परमात्मा की सुन्दर भक्ति का कार्यक्रम होता तो उन्हें देखकर ऐसा लगता कि जैसे एक बिछुड़ा नन्हा बालक अपनी मां को गोद में लेने के लिये अपने पास बुलाने के लिये विनंती कर रहा हो ।

परमात्मा को देखते ही उनके रोम–रोम में आनंद–व्यथा–विरह सारे, भाव एक साथ साकार हो जाते थे ! उनकी एक ही प्रार्थना होती थी–पैसा हो या न हो, परमात्मा की आज्ञा मेरे जीवन में अखंड रहनी चाहिये ।

मुझे आज भी अच्छी तरह याद हैं–उनके छोटे बेटे प्रकाश ने व्यापार संबंधी चर्चा करते हुए कहा था–पिताजी की भावना थी कि मेरे परिवार में भट्ठी का व्यापार नहीं होना चाहिये ! पिता सदैव यही शिक्षा देते थे बहुत अधिक आरंभ–समारंभ की प्रवृत्ति से हम पैसा तो कमा लेंगे पर पाप से हमारी आत्मा कितनी बोझिल होगी। पैसा यहीं रहेगा पर आत्मा से लगा पाप उसे नरक तक ले जायेगा! हमें संपत्ति की अपेक्षा संस्कारों का विस्तार करना चाहिये! पिताजी की भावनाओं का सम्मान करते हुए हमने उनकी शिक्षा की स्वीकार कर लिया है और आज भी यही परम्परा जारी है ।

मेरा सिर नमन की मुद्रा में झुक गया उस पुण्यशाली श्रावक के आदर्श व्यक्तित्व के सामने। आज जहॉ प्रत्येक व्यक्ति पैसा, संपत्ति और पदार्थ की दौड़ में स्वयं को सबसे आगे रखना चाहता हैं, वहीं ऐसे विरले लोग भी मिलते हैं, जो धन की अपेक्षा धर्म को महत्व देते हैं।

मैंने बैंगलोर में दो चातुर्मास संपन्न किये। प्रथम 2004 में पूज्य उपाध्यायश्री की सन्निधि में एवं दूसरा स्वतंत्र 2006 में । इन दोनों चातुर्मासों में श्री भंसालीजी का मैंने अनुभव किया था कि वे प्रतिदिन प्रवचन श्रवण करते ही थे, चाहे कैसा भी आवश्यक कार्य क्यों न हो।

बसवनगुड़ी में श्री भंसालीजी सा. गंभीर, क्रिया–प्रधान एवं भक्त हृदय श्रावक माने जाते थे ।

बसवनगुड़ी दादाबाड़ी में वे ट्रस्ट के स्थापना काल से ही जुडे हुए थे ।

2006 में जब पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागर जी म.सा. की निश्रा में विमलनाथ परमात्मा एवं दादाबाड़ी प्रतिष्ठा का जब अवसर आया था, तब श्री भंसाली जी ने तन–मन–धन का भरपूर उपयोग किया था। प्राचीन विमलनाथ परमात्मा को विराजमान करने का, चन्द्रप्रभ स्वामी एवं दादागुरूदेव श्री जिनदत्त सूरि बिम्ब भराने का लाभ आपने प्राप्त किया था ।

परमात्मा और गुरूदेव के प्रति अपना समर्पण व्यक्त करने के साथ–साथ उन्होंने जिनशासन का विशिष्ट आयोजन संघ भक्ति स्वरूप नवकारसी का लाभ भी प्रतिष्ठा कार्यक्रम के अन्तर्गत प्राप्त किया था ।

वैसे यह मान्यता है इस परिवार के लिए कि यह पूरा परिवार चाहे किसी भी कार्यक्रम में अगर पहुंचा है तो बिना लाभ लिये हर हाल में नहीं आ सकता। भंसाली परिवार के सभी सदस्य गच्छ एवं समाज के प्रति इतने गहरे समर्पित है कि किसी भी कार्य के लिए किसी को कहो, मना नहीं हैं। प्रतिपल यह परिवार जैसे जिनशासन के लिए समर्पित है ।

आज से लगभग 49 वर्ष पूर्व इसी परिवार द्वारा अपनी जन्मभूमि गढ़सिवाना से विशेष ट्रेन द्वारा सम्मेत शिखर आदि अनेको तीर्थों का संघ आयोजित किया था । और तभी से यह परिवार संघवी परिवार के नाम से पहचाना जाता है । आपकी जितनी रूचि संघ एवं शासन के कार्यों में थी, वैसी ही रूचि सेवा के क्षेत्र में भी थी। व्यवसाय से निवृत्त होने के बाद आपका सारा समय या तो स्वाध्याय में जाता था और या महावीर हॉस्पीटल की व्यवस्था में।

उनकी अप्रमत्त मानसिकता अनुमोदनीय थी। जिस समय बसवनगुड़ी मंदिर दादाबाड़ी की प्रतिष्ठा का कार्यक्रम था, उस समय हम उनके ही खाली पड़े पास वाले फ्लेट में एक माह रूके थे। उस समय मैंने निकटता से उनकी आचार शैली देखी थी। उनकी बिल्डिंग में लिफ्ट व्यवस्था थी, पर मैंने उन्हें कभी लिफ्ट द्वारा आते–जाते नहीं देखा। एक बार मैंने पूछा भी–आपकी उम्र इतनी अधिक है फिर भी आप तीन सीढ़ियाँ चढ़ते हैं, उतरते हैं। आपको तकलीफ तो होगी ही। भावुक होकर उन्होंने प्रत्युत्तर दिया था–मैं यथासंभव सीढ़ियों का ही प्रयोग करता हूँ क्योंकि इससे अनावश्यक विराधना से बचता हूँ एवं प्रकृति प्रदत्त पॉवों का उपयोग भी हो जाता है।

उनकी इस जागरूक मानसिकता के समक्ष मैं नत हुए बिना नहीं रही।

उनकी रूचि, सेवाभाव एवं समर्पण की भावना को देखते हुए बसवनगुड़ी ट्रस्ट ने उनको 2009 में अध्यक्ष पद हेतु चुना तो महावीर हॉस्पीटल प्रबंधन ने भी उन्हें अपनी संस्था का अध्यक्ष चुनकर गौरव का अनुभव किया ।

अध्यक्ष बनने से पूर्व भी आप चार पाँच घण्टे प्रतिदिन हॉस्पीटल का व्यवस्था में व्यतीत करते थे तो अब अध्यक्ष बनने के बाद तो जैसे हॉस्पीटल को व्यवस्था को पूर्ण समर्पित हो गये।

श्री भंसाली जी ने सदैव अपनी उम्र को चुनौती दी थी। वे उम्र से भले ही नौवें दशक में चल रहे थे, पर स्फूर्ति की अपेक्षा तो सम्पूर्णतः युवा थे। किसी भी कार्य के लिए उम्र उनके लिए बाधक नहीं थी।

जब मेरा 2006 में बैंगलोर में चातुर्मास चल रहा था, उस समय कर्णाटक खरतरगच्छ सम्मेलन कराना तय हुआ। कर्णाटक में रह रहे खरतरगच्छीय अनुयायी वृन्द को जानकारी एवं निमंत्रण हेतु स्वयं श्री पारसमल जी मा. अन्य तीन ट्रस्टीगणों के साथ पधारे। मैंने कहा भी–आप क्यों पधार रहे हैं? उन्होने अत्यन्त भावभरा उत्तर देते हुए कहा–मेरे गच्छ की सेवा करके मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी। मुझे जाने में कोई परेशानी नहीं होगी। श्री संघवी जी निस्संदेह उम्र के साथ नहीं बल्कि उम्र को मात करके चलते थे।

संघ व शासन में उनकी उपस्थिति मात्र से गरिमा आ जाती थी। अचानक उनका अत्यल्प बीमारी में विदा हो जाना निस्संदेह अपूरणीय क्षति है। परंतु उनके जीवनकाल की व्यवस्था को देखते हुए ऐसा अनुमान किया जाता है कि उनका मानव जीवन सार्थक हो गया है। हर व्यक्ति यही तो चाहता है कि अंतिम समय में उसे प्रभु का दरबार मिले। श्री संघवीजी को अपने जीवन में तो अपने पुरूषार्थ द्वारा प्रभु मिले ही थे, परंतु होश में जीवन की अंतिम क्रिया परमात्मा की पूजा थी । प्रभु पूजा करते हुए एवं नवकार मंत्र का स्मरण करते हुए वे बेहोश हो गये थे। उनकी यह क्रिया एक तरह से उनके जीवन को प्रतिबिंबित करती है। क्योंकि मृत्यु ही जीवन का निष्कर्ष है। उनके मरण स्थिति से यह सहज ही अनुमान लगता है कि अवश्य ही परमात्मा सींमधर स्वामी ने उन्हें अपनी निश्रा में बुलाकर साधना की ओर आगे बढ़ाने का सुनहरा अवसर प्रदान किया होगा।

उनकी आत्मा शीघ्र ही कर्मक्षय करके सिद्धत्व को प्राप्त करे यही मंगल भावना।

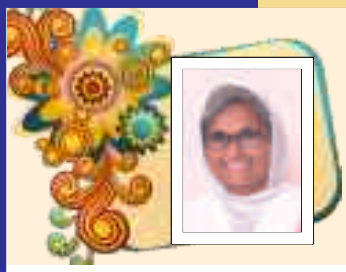

मेरी अनुभुति

साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्री

हम महाकौशल क्षेत्र का प्रवास करते हुए जब वारासिवनी पहुँचे तब हमें स्थानीय श्रावक जीवदाय समर्पित परम सेवाभावी श्री विनोदजी संचेती मिले। विनोदजी संचेती अर्थात्, स्थानीय गौशाला के पर्याय। मैंने जब सामान्य जानकारी लेते हुए पूछा-आप जीवदया के प्रति इतने समर्पित कैसे हुए? उन्होंने बताया हम वर्षो पूर्व ही आदरणीय श्री कुमारपाल भाई के संपर्क में आ गये थे। हम उनके द्वारा जितनी भी प्राकृतिक आपदा से निपटने में सहयोगी राहत शिविर लगाते थे जैसे कच्छ का भुकंप हो या लातूर का हम वहाँ अपने भाई श्री विजयश्री के साथ जाते ही थे।

उन्हीं के साथ रहते हुए हमारे भीतर जीवदया के रूप में गोशाला की स्थापना की प्रेरणा मिली। हमने लगभग 20 वर्ष पूर्व इस गोशाला की नींव डाली। इस गोशाला की नींव हमने उन पशुओं से डाली जिन्हें हम छापा मार की कार्यवाही से बचाकर लाये थे। हमारी 10-15 युवकों की एक टोली थी। उस टोली को जैसे ही सूचना मिलती कि इस रोड़ से अमुक न. की ट्रक जानवर लेकर जा रही हैं हम तूरंत पहुँच जाते और अवैध जा रहे उस ट्रक के समस्त जानवर पकड़ लेते। पकड़े जानवर कहाँ छोड़े इसी समस्या के समाधान में इस गोशाले की नींव पड़ी।

हमारे यहाँ एक भी दुधारू जानवर नहीं हैं। इतनी विशाल गोशाला पर इस गोशाला की व्यवस्था के लिये हमने आज तक एक भी पैसा एफ. डी. के रूप में जमा नहीं करवाया। हमारें गुरूजी श्री कुमारपाल का कहना हैं कि जमा करने की कोई जरूरत नहीं हैं। इनके भाग्य से अपने आप व्यवस्था होगी?

गोशाले के फंड के लिये आज तक हमने कोई समारोह नहीं किया। कभी किसी नेता को नहीं बुलाया। कुमारपाल भाई का संपूर्ण पीठबल हमारे साथ हैं। उनका कहाँ हुआ है जब भी जरूरत हो निसंकोच सूचना देना। हम उनके साथ साल में दो तीन बार रहते हैं। उस समय उनके जीवन का निकटता से अनुभव करते है। उनका जीवन ही हमारी प्रेरणा है।

विनोदजी ने अपने जीवन का अनुभव बताते हुए कहा-चारों और छापामार टुकडी के रूप में हमारी चर्चा हो गयी। अपने हितों में हमें बाधक समझकर गुस्सायी कसाई टुकडी ने योजना बनाकर हमें सूनसान जंगल में बुला लिया। रोज हम उन्हें घेरते थे उस दिन उन्होंने हमें घेर लिया। जैसे ही हमें पता चला हम वहाँ से इधर उधर हो गये परन्तु एक लड़का गौरव उनके हाथ में आ गया।

हम आपको क्या बताये ? उन्होंने उस लड़के के मस्तक पर रोड़ मारी कि उसका माथा फट गया। हमारे साथ एक ओर लड़का था। उसके पास बंदूक थी। उसने रिस्क लेकर फायर किया जिससे गौरव उनके हाथ से मुक्त हो गया।

उसकी हालत देखकर हमारे हाथ पाँव फूल गये। हम उसे लेकर नागपुर भागे। नागपुर रवाना होते ही सूचना दे दी थी अत: हम जैसे ही हॉस्पीटल पहुँचे वहाँ सारी तैयारी थी। डॉक्टर ने देखते ही स्पष्ट घोषणा कर दी- इस केस में कोई दम नहीं हैं। परन्तु हमारे द्वारा यह कहने पर कि आपसे जो हो सकता हैं आप कीजिये।

सारी औपचारिकता के बाद ऑप्रेशन किया गया परन्तु स्थिति में सुधार नहीं था। सभी की सलाह पर हम उसे न्यूरो स्पेशलिस्ट एवं अत्यंत संवेदनशील डा. लोकेन्द्रसिंह के पास लेकर गये। डा. लोकेन्द्रसिंह ने भी यही कहा- आप कहें तो में परिश्रम कर सकता हूँ बाकी केस फैल है।

हमारे निवेदन पर उन्होंने केस हाथ में लिया।

ऑप्रेशन खोलकर दुबारा ऑप्रेशन किया गया। ऑप्रेशन के बाद डॉ. ने कहा- मेरे से जो हो सकता था मैंने कर दिया। बाकी अब भगवान पर या नियति पर छोड़ दीजिये।

हजारों व्यक्ति उस बच्चे की जिंदगी के लिये अपने इष्टदेव का स्मरण कर मनौती मांग रहे थे। अनेकों प्रकार की बाधाएं रखी। मैं लगातार बच्चे के साथ था। कुछ दिन बाद डॉ की अनुमति से हम घर ले आये। वह कौमा में था। सतत् मेरी आराधना गतिमान् थी। लगभग 15 दिन बाद वह कौमा से बाहर आया, पर अभी भी उसकी स्मृति गायब थी। न वह किसी को पहचानता था ओर न उसे कुछ याद था।

आखिर दुनियावालो की दुआ एवं जीवदया के पुण्य ने गौरव की जिंदगी लौटाते हुए उसे लगभग एक माह बाद स्वस्थ किया। उसकी स्मृति लौट आयी। वह पूरी तरह स्वस्थ हो गया।

मैने जब विनोदजी के मुहँ से गौरव की यह गौरवगाथा सुनी तो उससे मिलने का लोभ रोक नहीं पायी। गौरव को बुलाकर मिली। उसके हृदय में कहीं किसी भी प्रकार का न गिला शिकवा था और न अहंकार संपूर्ण सहजता थी उसके शब्दों और भावों में।

वारासिवनी के लोगों द्वारा ही नहीं बल्कि संपूर्ण महाकौशल में विनोदजी के प्रति एक गहरी आस्था हैं। उनकी अपनी व्यक्तिगत जिदंगी की चर्चा करते हुए बताया-लगभग 10 साल पूर्व परिवार के दामाद घर पर आये हुए थे। प्रातः उनको रवाना होना था पर संयोग से वे रूक गये। उन्होंने बाहर घूमने का प्रोग्राम बनाया और 16 वर्षीय साले विकल्प से कहा-चलो बाहर तालाब में तैरने चलते हैं। विनोदजी का इकलौता लड़का ... आशाओं का केन्द्र ... भविष्य का सुनहरा सपना...। साले बहनोई मस्ती में डूबकर बालाघाट नदी किनारे पहुँचे। तालाब में नहाने के लिये सभी उतर गये। 16 वर्षीय विनोदजी, प्रमोदजी की आँखों का तारा विकल्प यकायक ही पानी की दलदल में फंस गया। दलदल का यह नियम है कि एक बार उसमें कोई फंस गया तो जीवन रहते तो उबर नही सकता। उसकी लाश ही बाहर आती है। पूरे परिवार में हाहाकार मच गया। लाश का पोस्टमार्टम होते-होते रात्रि हो गयी। अतः लाश को अस्पताल में ही रखा गया।

इकलौती औलाद का खौफनाक हादसा...। पूरे गॉव की हमदर्दी विनोदजी के साथ थी। विनोदजी स्वयं इस हादसे को देखकर सकते में आ गये। उनकी दुनिया ही जैसे वीरान हो गयी। कलेजा तड़फ उठा। इकलौता कलेजा का टुकडा उनके देखते-देखते असंमय ही लाश में तब्दील हो गया था।

भीतर विचारों का अहापोह मचा हुआ था नहीं... नहीं...। प्रकृति इतनी कठोर नहीं हो सकती। अभी मेरा बेटा उठेगा और मेरा संसार पुनः हरा भरा होकर आनंदमग्न हो उठेगा। इधर बालाघाट होस्पीटल में डॉक्टर ने मृत्यु का प्रमाण पत्र दे दिया। ज्योंहि मृत्यु का प्रमाण पत्र देखा और विनोदजी का विचारों का तूफान थम गया। उनके अन्तर्मन में परमात्मा की वाणी गुंज उठी। आत्मा अजर अमर हैं। वह आयुढय कर्म के अनुसार मात्र पर्याय परिवर्तन करती हैं। अब वे स्थिर थे, संयत थे और शांत थे।

वे लंबे समय तक होस्पीटल में बैठे, अपने पुत्र की लाश देखते रहे, सदा-सदा के लिये उसका चित्र अपनी आँखों में जैसे स्थिर कर रहे हों।

सभी के बहुत आग्रह के बाद वे पुत्र की लाश के पास ही रात को दो तीन बजे सो गये। चूंकि मन ने पुत्र की मृत्यु को स्वीकार कर लिया था अतः विचारों की तरंगे शांत हो चूकी थी। ज्योंहि सोये कि थकान... उदासीनता एवं प्राकृतिक व्यवस्था से ऐसी गहरी नींद लगी कि प्रातः उन्हें उठाना पड़ा।

जब मैने यह घटना सुनी तो मेरा मन उनकी अनासक्ति के सामने नत हुए बिना नही रहा-। मैंने इस संबंध में जब उनसे पूछा तो उन्होंने कहा-प्रकृति ने मेरे सामने जिस स्थिति का निर्माण किया उसे स्वीकार करना मेरी मजबूरी थी। जब स्वीकार करना ही था तो तत्काल करने में ही क्या हानि थी। मैंने प्रकृति के इस मंजर को प्रेम से स्वीकार करते हुए सोचा-संभवत नियति मुझे संसार की जिम्मेदारी से मुक्त कर जीवदया के काम से पूरी तरह जोड़ना चाहती है और अगर नियति ने मेरे लिये यही तय कर लिया हैं तो इसमें हस्तक्षेप करने वाला मैं कौन?

समाचार दर्शन

ता. 23 अगस्त को सम्मेलन समिति की बैठक संपन्न

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में अखिल भारतीय खरतरगच्छ महासम्मेलन समिति की बैठक ता. 23 अगस्त को संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता श्री मोहनचंदजी ढड्ढा ने की। इस बैठक में समिति की विधिवत् घोषणा की गई।

श्री मोहनचंदजी ढड्ढा चेन्नई को चेयरमेन, श्री रिखबचंदजी झाडचूर मुंबई व विमलचंदजी सुराणा जयपुर को को.चेयरमेन बनाया गया। संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा बैंगलोर को अध्यक्ष, संघवी श्री विजयराजजी डोसी बैंगलोर को संयोजक, श्री तिलोकचंदजी बरडिया रायपुर को उपाध्यक्ष, श्री पदमजी टाटिया चेन्नई को महामंत्री, श्री दीपचंदजी बाफना अहमदाबाद को कोषाध्यक्ष, संघवी श्री बाबुलालजी मरडिया मुंबई को सहकोषाध्यक्ष बनाया गया।

इस समिति में श्री बाबुलालजी छाजेड मुंबई, श्री भंवरलालजी छाजेड मुंबई, श्री प्रकाशचंदजी लोढा जयपुर, संघवी श्री वंसराजजी भंसाली अहमदाबाद, श्री प्रकाशजी कानूगो मुंबई, श्री वीरेन्द्रमलजी मेहता चेन्नई, श्री सुरेशजी कांकरिया रायपुर, श्री भूरचंदजी जीरावला जोधपुर, श्री जयकुमारजी बैद रायपुर, श्री बाबुलालजी लूणिया अहमदाबाद,श्री पुखराजजी श्रीश्रीमाल नंदुरबार, श्री गजेन्द्रजी भंसाली उदयपुर, संघवी श्री रमेश मरडिया सूरत को सम्मिलित किया गया। आवश्यकतानुसार समिति का विस्तार किया जायेगा।

इसके अलावा समस्त राज्यों की क्षेत्रीय समितियां बनाई गई। पूर्वी राजस्थान के संयोजक श्री प्रकाशचंदजी लोढा जयपुर, श्री ज्योति कोठारी, श्री फतेसिंहजी बरडिया, श्री अनूपजी पारख को सहसंयोजक बनाया गया। पश्चिमी राजस्थान के संयोजक श्री भूरचंदजी जीरावला जोधपुर एवं सहसंयोजक श्री रतनलालजी संखलेचा बाडमेर को बनाया गया। तमिलनाडु के श्री उत्तमचंदजी रांका को उपाध्यक्ष, श्री गौतमचंदजी कवाड तिरूपातूर को संयोजक, श्री रतनचंदजी बोथरा तिरूपुर एवं श्री प्रदीपजी जेठिया ईरोड को सह संयोजक की जिम्मेदारी दी गई। कर्णाटक के लिये श्री बाबुलालजी पालरेचा हॉस्पेट उपाध्यक्ष, श्री बाबुलालजी भंसाली बैंगलोर को संयोजक, श्री तेजराजजी मालाणी बैंगलोर को सहसंयोजक बनाया गया।

गुजरात के लिये श्री पुखराजजी तातेड को उपाध्यक्ष, श्री रतनलालजी हाला वालों को संयोजक बनाया गया। श्री रतनजी बालड सूरत को सह संयोजक बनाया गया। मुंबई महानगर में श्री मनोहरजी कानूगो को उपाध्यक्ष, श्री मांगीलालजी श्रीश्रीश्रीमाल, श्री जवाहरलालजी देशलहरा को सहसंयोजक बनाया गया। शेष महाराष्ट्र के लिये श्री पुखराजजी श्रीश्रीमाल को उपाध्यक्ष, श्री महावीर जी छाजेड पूना, श्री एवं श्री राजेन्द्रजी डागा अक्कलकुआं को सहसंयोजक बनाया गया। दिल्ली प्रदेश का कार्यभार श्री हीरालालजी मुसरफ को सौंपा गया।

छत्तीसगढ के लिये श्री प्रकाशचंदजी सुराणा को उपाध्यक्ष, श्री सुरेशजी कांकरिया को संयोजक बनाया गया। तेलंगाना के लिये श्री मोतीलालजी ललवानी को उपाध्यक्ष, श्री चुन्नीलालजी संखलेचा को संयोजक बनाया गया। अन्य प्रान्तों व पदाधिकारियों की घोषणा बाद में की जायेगी।

इसके अलावा विभिन्न समितियॉ बनाई गई। जिसके अन्तर्गत वित्त समिति का दायित्व संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा, श्री वीरेन्द्रजी मेहता, श्री मांगीलालजी मालू को सौंपा गया। भोजन व्यवस्था का दायित्व श्री महेन्द्रजी रांका बैंगलोर व उनके साथियों को सौंपा गया। क्रय व्यवस्था श्री सुरेन्द्रजी रांका बैंगलोर, टेंट डेकोरेशन आदि व्यवस्था श्री दीपचंदजी बाफना श्री भूपतजी कांटेड अहमदाबाद को, प्रचार प्रसार व्यवस्था पदमजी टांटिया चेन्नई, मंच संचालन व्यवस्था श्री अरविन्दजी कोठारी बैंगलोर, रमेश लूंकड इचलकरंजी, आवास व्यवस्था श्री बाबुलालजी लूणिया अहमदाबाद, श्री किशनचंदजी बोहरा जयपुर, श्री सुरेशजी कांकरिया रायपुर को सौंपी गई। वैयावच्च का दायित्व संघवी श्री बाबुलालजी मरडिया मुंबई, श्री सुरेशजी लूणिया चेन्नई एवं श्री अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् को सौंपा गया।

रायपुर में उपधान तप का आयोजन

छत्तीसगढ की राजधानी रायपुर नगर में श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी के प्रांगण में पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 6 की पावन निश्रा एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 की सानिध्यता में महामंगलकारी उपधान तप का प्रारंभ होने जा रहा है।

श्री ऋषभदेव जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं दादावाडी ट्रस्ट एवं चातुर्मास समिति की ओर से अध्यक्ष श्री तिलोकचंदजी बरडिया ने पूज्य गुरुदेवश्री से उपधान तप कराने, निश्रा प्रदान करने व शुभ मुहूर्त्त प्रदान करने की भावभरी विनंती की। जिसे स्वीकार कर पूज्यश्री ने उपधान तप प्रथम प्रवेश का आसोज वदि 12 ता. 9 अक्टूबर 2015 का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया। दूसरा मुहूर्त्त आसोज वदि 14 ता. 11 अक्टूबर का होगा।

माला का वरघोडा मिगसर वदि 3 ता. 28 नवम्बर 2015 को आयोजित होगा। जबकि माला विधान मिगसर वदि 4 रविवार ता. 29 नवम्बर 2015 को संपन्न होगा। उपधान तप के मुख्य लाभार्थी का लाभ श्री नरेन्द्रजी पारख ने लिया है।

रायपुर में चातुर्मास का अनूठा टाट

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 6 की पावन निश्रा एवं पूजनीया माताजी म. श्री रतनमाला श्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभा श्रीजी म. आदि ठाणा 6 का चातुर्मास अपने आप में ऐतिहासिक वातावरण के साथ गतिमान् है। प्रतिदिन प्रवचनों में श्रद्धालु लोगों की अपार भीड होती है। रविवार को पूज्यश्री विशेष रूप से पारिवारिक प्रवचन फरमाते हैं, जिसे श्रवण करने के लिये बडी संख्या में लोग उपस्थित हो रहे हैं। हर शनिवार को पूज्यश्री जिज्ञासाओं का समाधान प्रवचन में प्रदान करते हैं।

पूज्यश्री प्रवचनों के लिये 20 हजार वर्गफीट का विशाल वाटरप्रूफ पाण्डाल बनाया गया है। पूज्यश्री की पावन निश्रा में तपस्या की झडी लगी हुई है। 50 से उपर सिद्धि तप की महान् तपस्या चल रही है। मासक्षमण चल रहे हैं। 16 उपवास, 9 उपवास, अट्ठाईयां बडी संख्या में हो रहे हैं। वीश विहरमान तप भी चल रहा है।

ता. 24 अगस्त को पूज्यश्री के नेतृत्व में संपूर्ण जैन समाज की एक विशाल मौन रैली का आयोजन किया गया। जिसमें 15 हजार से अधिक श्रावक श्राविकाओं की उपस्थिति थी। ऐसा विशाल आयोजन

जैन समाज के इतिहास में पहली बार हुआ। राजस्थान उच्च न्यायालय द्वारा दिये गये संथारे पर फैसले के विरोध में इस रैली का आयोजन किया गया था। इस रैली की व्यवस्था में श्री खरतरगच्छ युवा परिषद् रायपुर आदि कई मंडलों का पूरा योगदान रहा। यह रैली राजभवन पहुँची। जहाँ राज्यपाल महोदय को ज्ञापन दिया गया।

पूज्यश्री ने राज्यपाल महोदय को जानकारी दी कि संथारा यह जैन धर्म की एक पारम्परिक आध्यात्मिक साधना है। इसे आत्म हत्या कहना अपने आप में अपराध है।

पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. प्रातः 8.00 से 8.40 तक वैराग्यशतक पढाते हैं। 10.00 से 10.30 तक कर्मग्रन्थ की कक्षा चल रही है। शाम प्रतिक्रमण के बाद युवाओं हेतु तत्वज्ञान की कक्षा चलती है। इन कक्षाओं में बडी संख्या में जिज्ञासु उपस्थित होते हैं। – संतोषचंद गोलेच्छा, महेन्द्र कोचर, महासचिव, चातुर्मास समिति

त्रिची में चातुर्मास प्रवेश

गणाधीश उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की आज्ञा से छत्तीसगढ़ महत्तरा पद विभुषिता स्व. श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की विद्वान एवं विदुषी शिष्याओं आर्याश्री तरुणप्रभाश्रीजी म.सा., आर्या श्री सुमित्राश्रीजी म.सा., आर्याश्री प्रियमिश्राश्रीजी म.सा., एवं आर्या श्री मधुस्मिताश्रीजी म.सा. का सन् 2015 का तिरुच्चि दादावाड़ी में चातुर्मास प्रवेश भव्य रुप से दि. 26.7.2015 रविवार को सम्पन्न हुआ।

पूज्य गुरुवर्याएं चेन्ने से लम्बा विहार कर रास्ते के सभी गांवों में धर्मप्रभावना करती हुई तिरुचि पहुंची। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय से दर्शन वन्दन करने के पश्चात् भव्य वरघोड़ा जयघोषों एवं गाजे बाजे के साथ श्री राजेन्द्र गुरु मंदिरजी में दर्शन-वन्दन के पश्चात् बड़ा बाजार, गांधी मार्केट, पालकौर होते हुए, काजापेठ स्थित श्री दादावाडीजी श्री मुनि सुव्रतस्वामिजी जिनालय पहुंचा। जहां छोटे छोटे बच्चों ने देश की विभिन्न प्रान्तों की वेशभूषा में जैन धर्म के नारे लगाते हुए भावभीना स्वागत किया। महिलाओं ने और मण्डलों की प्रतिनिधि बहनों ने, सामेया के रुप में कलश धारण कर अक्षतों और जयघोष के साथ दादावाडी द्वार पर गुरुवर्याओं का भव्य स्वागत के साथ चातुर्मास प्रवेश कराया।

सा. श्री मनोरंजनाश्रीजी का ७५ वां जन्मदिवस धूमधाम से मनाया गया

आगरा। साध्वीजी श्री मनोरंजनाश्रीजी म.सा. का 75 वां जन्मदिन श्री हीर विजयसूरि जैन उपाश्रय रोशन मौहल्ला में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित धर्मसभा में विभिन्न वक्ताओं ने पूज्य महाराज श्री को शुभकामना अर्पित की। शुभकामना देने वालों में बृजेन्द्रसिंह लोढ़ा, अजय चौरड़िया, दुष्यन्त जैन, कोमलचंद भूरा, रीता ललवानी, प्रीति बरड़िया, नीरु चौरड़िया, रुचि जैन आदि प्रमुख थे। जैन श्वेताम्बर महिला मंडल की ओर से पूज्य साध्वीजी को 75वें जन्मदिवस के उपलक्ष में आयंबिल का आयोजन जैन भवन में किया गया तथा करीबन 50 श्रद्धालुओं ने आयंबिल का लाभ लिया। महाराजश्री के जन्म दिवस के उपलक्ष में जीवदया की टीप भी हुई।

इस अवसर पर श्री कमलसिंह बोहरा, राजकुमार जैन, अशोक कोठारी, प्रेम ललवानी, विमलराय सुराना, राजीव पाटनी, प्रमोद ललवानी, प्रकाश वैद, राजेन्द्र धारीवाल, दिनेश गादिया, अशोक ललवानी आदि भक्तजन विशेष रुप से उपस्थित थे। आयंबिल कराने की व्यवस्था राजेन्द्र धारीवाल तथा महिला मंडल ने सम्हाली। प्रत्येक आयंबिल तप करने वालों को महाराजश्री के 75वें जन्मदिवस के उपलक्ष में 75-75 रुपये की प्रभावना दी गई।

वडोदरा में भव्यचातुर्मास प्रवेश सम्पन्न

छत्तीसगढ़ रत्नशिरोमणि महत्तरा पद विभूषिता प. पू. मनोहरश्रीजी म.सा. की सुशिष्या सरल स्वभावी, दीर्घ संयमी पर्यायी प्रवर्तिनी महोदया प. पू. कीर्तिप्रभाश्रीजी म.सा. , प्रबुद्धसाध्वीजी भगवंत तत्वरसिका पू. दर्शनप्रभाश्रीजी म.सा., अध्ययनरसिका पू. ज्ञानप्रभाश्रीजी म.सा. एवं विनय रसिका पू. चारित्रप्रभाश्रीजी म.सा. का संवत 2071 का चातुर्मास प्रवेश दिनांक 19.7.2015 रविवार के शुभदिन मंगल मुहूर्त्त में बड़ी धूमधाम से वडोदरा की धर्मधरा पर संपन्न हुआ। प्रारम्भ में बैण्ड बाजा की सुमधुर सुरावली से पू. साध्वीजी भगवंतों का अहोभाव पूर्वक भव्य स्वागत किया।

पुरुष ने श्वेत वस्त्रों में, बहनें लाल कलर की बांधणी में, बालिकाएं मंगल कलश के साथ और बालकों शासन की ध्वजा लेकर श्वेत अश्वों पर बैठ के वरघोड़े की शोभा बढ़ा रहे थे। खरतरगच्छ समुदाय के साध्वीजी भगवंतों में एकमात्र प्रवर्तिनी पद विभुषिता, पावननिश्रा दाता प.पू. किर्तीप्रभाश्रीजी म.सा. के स्वमुख से मंगलकारी मांगलिक सुनने के बाद आनंद और हर्ष भरे माहौल में स्वागत गीत, स्वागत प्रवचन, फरमाया इस में आराधकों को आत्मकल्याण की साधना हेतु आने वाले चातुर्मास में तन-मन और मन लगाके जप तप की साधना, आराधना में जुड़ने का आह्वान किया।

इस मांगलिक अवसर पर दुर्ग, इन्दौर, रतलाम, पूना, सूरत, नवसारी, भायंदर, पायधुनी, पादरा, मुम्बई सहित अनेक स्थलों से महानुभावों पधारे थे। आजवा रोड़ स्थित झाबक भवन मे आयोजित इस सुनहरे अवसर पर श्री खरतरगच्छ जैन संघ, वडोदरा के सभी जनों में आनंद और उल्लास की लहर छाई हुई नजर आती थी। स्वामीवात्सल्य समेत समग्र कार्यक्रम का लाभ श्री पानीबेन पन्नालालजी पारेख एवं श्रीमती सुनंदाबेन महेन्द्रकुमारजी पारेख परिवार ने लिया।

नीमच में भव्यचातुर्मास प्रवेश सम्पन्न

परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति गुरुदेव उपाध्याय भगवंत श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी परम पूज्या प्रवर्तिनी श्री प्रमोदश्रीजी म.सा. की सुशिष्या सरलमना, परम पूज्या राजेन्द्रश्रीजी म.सा. की शिष्या श्री जिनज्योतिश्रीजी म. सा. शिष्यारत्ना, स्पष्टवक्ता, सरलमना परम पूज्या श्री गुणरंजनाश्रीजी म.सा. का नीमच की धन्यधरा पर चातुर्मासिक प्रवेश सानन्द सम्पन्न हुआ आपश्री के प्रवेश समारोह में कई संघो पदाधिकारी, समाज सेवी, राजनेता आदि प्रवेश समारोह में उपस्थित हुए । आपश्री का प्रवेश वरघोड़ा बाजार के मुख्य मार्गो से होता हुआ सभा स्थल पर पहुँचा आपश्री ने अपने व्याख्यान में चातुर्मास की महत्ता को विस्तार से वर्णन किया। एवं चातुर्मास के दौरान धार्मिक कार्यक्रम की झड़ी लगी रहेगी।

9अगस्त को उवसग्गहरं महापूजन की गई पूजा एवं एकासने के लाभार्थी श्री गोलेच्छा परिवार भीलवाड़ा एवं 16 अगस्त को संतीकरम महापूजन, आपके द्वारा नमस्कार महामन्त्र की तप आराधना का ऐतिहासिक एवं अद्‌भुत कार्यक्रम प्रतिवर्ष रहता है 20 सितम्बर से 29 सितम्बर तक अखण्ड नवकार महामन्त्र का जाप एवं एकासने चलेगे एवं 29 सितम्बर को पारणे के मुख्य लाभार्थी श्री दिनेशकुमारजी, गोरवकुमारजी नागोरी परिवार नीमच को दिया गया है।

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् का गठन

पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा व उनकी प्रेरणा से रायपुर में ता. 24 अगस्त 2015 को भारत भर के युवाओं की एक बैठक संपन्न हुई। जिसमें सर्व सम्मति से अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् के गठन की घोषणा की गई।

जिन धर्म व गच्छ के कार्यक्रमों में युवा वर्ग की भूमिका को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से इस परिषद् की स्थापना की गई। निर्णय लिया गया कि पूरे देश में हर गांव व शहर में इस परिषद् की शाखा स्थापित की जायेगी। युवकों में धार्मिक मूल्यों का विकास करना, जन सेवा एवं परस्पर स्नेह सद्भाव का निर्माण करना, गच्छ गौरव बढाना, खरतरगच्छ की शास्त्र शुद्ध समाचारी का प्रचार करना, गच्छ के कार्यों में सक्रिय योगदान करना, वैयावच्च का कार्य पूर्ण रूप से सम्हालना आदि इस परिषद् के मुख्य उद्देश्य हैं। 18 वर्ष की उम्र से 50 वर्ष की उम्र तक के सदस्य इस युवा परिषद् से जुड सकेंगे।

एक वर्ष में 100 से अधिक शाखाऐं स्थापित करने का लक्ष्य बनाया गया। इन समस्त शाखाओं के प्रतिनिधियों को केन्द्रीय समिति में लिया जायेगा। उन सदस्यों से ही केन्द्रीय समिति बनेगी।

इस युवा परिषद् के पदाधिकारियों की घोषणा की गई। संघवी श्री अशोकजी भंसाली अहमदाबाद को चेयरमेन, श्री रतनचंदजी बोथरा दिल्ली को अध्यक्ष, संघवी श्री कुशलजी गुलेच्छा बैंगलोर को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री सुरेशजी भंसाली रायपुर को क्षेत्रीय उपाध्यक्ष, श्री प्रदीपजी श्रीश्रीश्रीमाल मुंबई को महामंत्री, श्री रमेशकुमार लूंकड इचलकरंजी को सहमंत्री, श्री सुरेशजी लूणिया चेन्नई को कोषाध्यक्ष, संघवी श्री राजेशजी छाजेड मुंबई को सह कोषाध्यक्ष बनाया गया।

प्रचार संयोजक श्री धनपत कानूंगो मुंबई को बनाया गया। इस समिति में श्री गौतम संखलेचा चेन्नई, श्री सचिन पारख रायपुर, श्री योगेश बरडिया गोंदिया, श्री धनपत वाघेला बडौदा, श्री मनीष नाहटा दिल्ली को सम्मिलित किया गया।

श्री पदमजी टाटिया चेन्नई, श्री महावीरजी छाजेड पूना, श्री शंकरलालजी घीया मुंबई, श्री प्रदीपजी जेठिया ईरोड, श्री नरेन्द्रजी पारख रायपुर, श्री अरविन्दजी कोठारी बैंगलोर को सलाहकार बनाया गया।

– धनपत कानूंगो, मुंबई
प्रचार संयोजक

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

जहाज मंदिर पहेली 112

प्रस्तुत पहेली में हर उत्तर का प्रथमाक्षर 'वि' होगा।

1	वि						
2	वि						
3	वि						
4	वि						
5	वि						
6	वि						
7	वि						
8	वि						
9	वि						
10	वि						
11	वि						
12	वि						
13	वि						
14	वि						
15	वि						
16	वि						
17	वि						
18	वि						
19	वि						
20	वि						
21	वि						
22	वि						
23	वि						
24	वि						

1. जिनप्रभसूरि रचित ग्रन्थ के प्रथम दो अक्षर-
2. गौतम स्वामी का एक विशिष्ठ गुण-
3. भगवान महावीर का एक भव -
4. मन: पर्यवज्ञान का एक भेद -
5. भगवती सूत्र का अपर नाम -
6. चौदह पूर्वों में से एक -
7. किंपाक फल में क्या होता है -
8. पार्श्वनाथ की दीक्षा शिविका का नाम -
9. मरुभूती से संबद्ध एक अटवी -
10. मणिधारी जिनचन्द्रसूरि की जन्मभूमि -
11. धर्मध्यान के चार प्रकारों में से एक -
12. एक सौ आठ पार्श्वनाथ में से एक -
13. एक तिर्यग्जृंभक देव
14. जो चार प्रकार की होती है
15. 'धर्मफल में संदेह करना' क्या कहलाता है -
16. बलसाणा तीर्थ के अधिपति -
17. पांचवे आरे के अन्त में होने वाला राजा -
18. अनुत्तर विमान देवलोक का पहला-दूसरा भेद -
19. ब्राह्मण का पर्यायवाची -
20. संस्कार का विलोमार्थी शब्द -
21. शांतिनाथ के पिता का नाम -
22. बीस क्या है-
23. विजयसेठ की पत्नी का नाम-
24. जिनप्रभसूरि रचित प्रसिद्ध ग्रंथ -

जहाज मन्दिर पहेली झेरॉक्स करके ही भरें व इस पत्ते पर भेजे

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.
द्वारा श्री जिनकुशलसूरि जैन दादावाड़ी
एम. जी. रोड़, पो. रायपुर - 492001 (छ. ग.),
फोन : 0771-2226085

नियम -

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 25 अक्टूबर तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल नवम्बर में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेता को 200 रू. का और 100-100 रु. के छह एवं 50-50 रु. के चार प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. सातों विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
7. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-

**शा. धनराजजी-सुनीतादेवी,
उज्ज्वल, गीतांजली,
प्रांजल कोचर
तलोदा (फलोदी)**

प्रेषक

नाम .....

पता .....

.....

पोस्ट ..... पिन | | | | | | | जिला .....

राज्य ..... फोन नम्बर | | | | | | | | | | | |

जहाज मंदिर पहेली - 110 का सही उत्तर

1. जिनदर्शन	2. प्रभपूजा	3. आत्मचिन्तन	4. तत्त्वचर्चा
5. स्वाध्याय	6. पौषध	7. सुपात्रदान	8. सेवा
9. तपस्या	10. संयम	11. ब्रह्मचर्य	12. प्रवचन श्रवण
13. साधर्मिक वात्सल्य	14. सत्संग	15. सामायिक	16. धर्मकथा
17. प्रतिक्रमण	8. त्याग	19. जयणा	20 जाप
21. कायोत्सर्ग			

पुरस्कार विजेता

प्रथम बधाई पुरस्कार-गौतमचंद वैद-कुरिंजीपाडी

छह प्रेरणा पुरस्कार-साक्षी धारीवाल-कोटूर, भाग्यवंती तातेड-नंदुरबार, मोहिनी पारख-धमतरी, ग्रीष्मा संकलेचा- रायपुर, कामिनी मेहता-जोधपुर, दीप डोसी-मंदसौर

चार प्रोत्साहन पुरस्कार-दिव्यांशी जैन-जयपुर,

मोना मेहता- इन्दौर, कृति बैंगानी- भाईंदर, नरेश सिंघी- मालपुरा

इनके उत्तर पत्र सही थे-मुनि श्रेयांसप्रभसागरजी-मुनि मलयप्रभसागरजी-रायपुर, साध्वी सुयशाश्रीजी-मालपुरा, साध्वी प्रज्ञांजनाश्रीजी-रायपुर, साध्वी निष्ठांजनाश्रीजी-रायपुर, साध्वी स्थितप्रज्ञाश्रीजी-बालोतरा, साध्वी नीतिप्रज्ञाश्रीजी-धमतरी, साध्वी गुणोदयाश्रीजी-मोकलसर, साध्वी अमीवर्षाश्रीजी-सांचोर, साध्वी भव्योदयाश्रीजी- मोकलसर, लक्ष बाफना-कोट्टूर, कनक गालेच्छा-धमतरी, शांता बैद-जोधपुर, सूरज देवी मालू-रायपुर, चंद्रप्रकाश सिसोदिया-उदयपुर, तेजस बाफना-कोट्टूर सीमा भण्डारी-ब्यावर, नेहा बाफना-नंदुरबार, हिरेन बाफना-नंदुरबार, चंदनबाला बाफना-नंदुरबार, आशिष जैन-अकलकुआ, मेघा कोचर-अकलकुआ, कुशल संकलेचा-अकलकुआ, भंवरलाल संकलेचा-अकलकुआ, श्वेता भण्डारी-बुंदी, मनोहरलाल झाबक-कोटा, ईशिका सिंघी-मालपुरा, पायल बालिया-धुलिया, अनुभा बैंगानी-जयपुर, अवधेश शर्मा-मालपुरा, दीपक कोचर, नंदुरबार, कमला भंसाली-जोधपुर, शांता चोपड़ा-रतलाम, मनीषा राखेचा-त्रिची, किरन लुणिया-धमतरी, हर्षल जैन-धुलिया, मधु गूगलिया-पाली, केसर धारीवाल-कोट्टूर, ममता गुलेच्छा-धुले, मांगीलाल बोहरा-तलोदा, मनीषा कवाड-अहमदाबाद, ममता बाफना-नंदुरबार, खुशी जैन-तलोदा, पवन बेन तातेड़-अहमदाबाद, प्रिती लोढा-नंदुरबार, अंजु छाजेड़-धमतरी, प्रमिला बैंगानी-बिकानेर, सिम्पल बाबेल-बिजयनगर, सपना चोपड़ा-नंदुरबार, विदित बलाई-पाली, पारसमल घीया-बैंगलोर, शुभम सेठिया-बालोतरा, कविता जैन-बामनिया, दिनेश चपलोत-भीलवाड़ा, पारस कुमार-अजमेर, मीनाक्षी संखलेचा-अक्कलकुआ, महावीर बोथरा-बल्लारी, भंवरीदेवी गोलेच्छा-उंटी, हर्षित ललवानी-तिरूपातूर, रक्षा बच्छावत-जोधपुर, पदम चौधरी-जयपुर मधु जैन-उंटी, राजरानी मेहता-जयपुर, विजया नाहटा-हैदराबाद, लता कोचर-दुर्ग, संगीता गोलेच्छा-कोण्डागांव, चेतना बच्छावत-अजमेर, सुंदरी राखेचा-त्रिची, नरेन्द्र कोचर-भाईन्दर, चंद्रा कोचर-भाईन्दर, जयश्री कोठारी-भाईन्दर, तारा कोठारी-भाईन्दर, दिनेश बैद-पनरूटी, मनीला पारख-जयपुर, महावीर

बोथरा-चैन्नई, देवांश जिन्दानी-औरंगाबाद, सुनीता जैन-जयपुर, कंचन बैद-जयपुर, कंचनमालू-भाईंदर, भावना गोलेच्छा-नंदुरबार, सोनाक्षी सुराणा-जहाजपुर, अक्षिता सुराणा-जहाजपुर, सेमाली जैन-बुंदी, हेमराज चौधरी-मालपुरा, दीपक जैन-जयपुर, राजेन्द्र सुराणा-जहाजपुर, इंदु सुराणा-जहाजपुर, देशना टाटीया-जगदलपुर, नेहा गोलच्छा-अक्कलकुवा, नरेशचंद्र गोलेच्छा-अक्कलकुवा, सुशीला कवाड-तिरूतात्तूर, शोभा बैद-पनरूटी, राज भण्डारी-बुंदी, आरती लसोड-इंदौर, नमीता जैन-उदयपुर, नीरज जैन-उदयपुर, निर्मला जैन-उदयपुर, जयंतीबाई कोठारी-चेन्नई, मोनिका चतुरमुथा-सारंगखेड़ा, भूमिका जैन-जगदलपुर, सरला जैन-कडलूर, सुशिला कोचर-अक्कलकुवा, जसराज कोचर-अक्कलकुवा, जयश्री कोठारी-ऊटी, निशा संचेती-बालाघाट, एकता गोलेच्छा-तिरूपात्तुर, सुचित्रा भंसाली-नोएडा पदमा बैद-चैन्नई, फीनी बेन बाफना-कोट्टूर, चंद्रसिंह जैन-उदयपुर, कमलेश भण्डारी-जयपुर, दर्शन बोथरा-विजयनगरम, शोभा बोथरा-विजयनगरम, शांता गोलेच्छा-टिण्डीवनम, प्रेमलता भण्डारी-बैंगलोर, योगेश बोहरा- बालोतरा, कोमल मेहता-बालोतरा, प्रमिला जैन- सेलम, नव्या जैन-जयपुर, किरण बैदमुथा-रायपुर, चंद्रप्रकाश जैन-जयपुर, अर्चिता जैन-मुंबई, निशी बोथरा-इंदौर, ज्ञानचंद लोढ़ा-सूरत, शांती पारख-धमतरी, किरण सेठिया-धमतरी, पूजा लूणिया-धमतरी, मंजू डागा-धमतरी, राजकुमारी पारख-धमतरी, श्रद्धा छाजेड़-धमतरी, नेहा पारख-धमतरी, शारदा गोलेच्छा-धमतरी, अनिता लोढ़ा-धमतरी, पूजा ललवानी-धमतरी, सगुन देवी सराफ-धमतरी, प्रतिभा गोलछा-धमतरी, सरोज देवी बेंगानी-धमतरी, विमला पारख-धमतरी, शकुंतला कोठारी-त्रिची, सरला गोलेछा-लालबर्रा, शुभी गोलेछा-लालबर्रा, रिद्धी गोलेछा-लालबर्रा, राजकुमारी श्रीश्रीमाल-दिल्ली, खुशी जैन-नंदुरबार, मीना बैद-इंदौर, मंजू जैन-बेल्लारी, प्रकाश चोपड़ा-कोट्टूर, पांचीबाई गोलेछा-सेलम, मगनलाल गांधी-अहमदाबाद, ज्योति पारख-ग्वालियर, रीता पारख-तलोदा, इंद्रादेवी संकलेचा-हैदराबाद, भंवरलाल गोलेच्छा-अक्कलकुवा, सीमा जैन-जयपुर, पुष्पलता नाहटा-जयपुर, मीठालाल तातेड़-हुंबली, तेजराज भण्डारी-मैसूर, दर्शन कोठारी-जलगांव, अमित मूणोत-रायपुर, मीतू भण्डारी-जयपुर, किरण ललवानी-बैंगलोर, मनीषा लूणावत-ऊटी, शोभा कोठारी-ब्यावर, टीना कोचर-अक्कलकुवा, सूशीला भण्डारी-कोटा, सुरेन्द्र लोढ़ा-अजमेर, शकुंतला कांकरिया-हैदराबाद, मदनलाल कोचर-अक्कलकुवा, विमला गोखरू-अजमेर, महाबल गोलेच्छा-बैंगलोर, सुशीला लुंकड-तिरूपातूर, निर्मला सिसोदिया-जयपुर, मंजू बंब-जयपुर, संतोष भण्डारी-कोटा, नेहा जैन-जयपुर, किरण गोगड़-दुर्ग, तारा रूमिवाल-जयपुर, शशि पींचा-धमतरी, सुमन पारख-धमतरी, ऊषा सेठिया-धमतरी, अनुभा गोलेच्छा-धमतरी, विनोद धारीवाल-कोट्टूर, निर्मला पीचां-रायपुर, शशि पामेचा-जोधपुर, डॉ. राजेन्द्र पामेचा-जोधपुर, निध्यान गुलेच्छा-जोधपुर, शांतिदेवी गांधी-जोधपुर, तिलोकचंद श्रीमाल-बिहाड़ा, भारती गोलेछा-राजनांदगांव, रोहित छाजेड़-बालोतरा, प्रियांशी खटोड-पुष्पा खटोड-ब्यावर, शकुंतला सुराणा-जयपुर, कोमल गोलेछा-महासमुंद, कृष्णा कोचर-भानपुरा, सविता जैन-मुम्बई, विमल लोढा-जयपुर, निर्मला मेहता-जोधपुर, चंद्रकांता संचेती-जयपुर, किरण जैन-पालीताणा, सुशीला संकलेचा-गांधीधाम, राजेश खवाड-मदनगंज-किशनगढ, हर्षिता शर्मा-उदयपुर, सरोजा पारख-तलोदा, चंदनबाला चण्डालिया-कोटा, रतनलाल भण्डारी-ब्यावर, चित्रा झाबक-बडौदा, सुशीला भण्डारी-कोटा, गुलाबकंवर नाहटा-दिल्ली, दर्शन शाह-बडौदा, सुरेश गुलेच्छा-बडौदा, खुशबु खवाड़-आशीष खवाड़-जयपुर, विमला संकलेचा-हैदराबाद, सीमा छाजेड़-उज्जैन, जितेश भंसाली-तिरुपात्तुर, स्नेहलता चौरड़िया-जयपुर, स्वरुपचंद जैन-जयपुर, प्रमिला मेहता-जयपुर, कंचन डागा-भोपाल, रश्मि कोचर-तलोदा, पिस्ता गोलेच्छा-जयपुर, सुषमा धारीवाल-जयपुर।

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में

प.पू. गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक आचार्य
श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्यरत्न

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को गणाधीश पद से विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...

आपके कुशल नेतृत्व में खरतरगच्छ संघ प्रगति करते रहे...

आपकी कृपादृष्टि गच्छ एवं श्रीसंघ पर सदा बनी रहे...

वंदनकर्त्ता

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ

36/40, हिंगलाज भवन, दुसरी मंजिल, गुलाल वाडी, मुंबई – 04

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2015-2017 Date of Posting 7th

शासनपति परमात्मा महावीर स्वामी को नमन
लाखों परिवारों को जैन बनाने वाले पूज्य उपकारी चारों दादा गुरुदेवों को नमन

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. के समुदाय में
परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष युगप्रभावक
आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा.
के शिष्यरत्न पूज्य गुरुदेव उपाध्याय

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

को
गणाधीश पद से
विभूषित करने पर

हार्दिक वंदन...

वंदनकर्त्ता

श्री ऋषभदेव मंदिर ट्रस्ट
तिलोकचंद बरडिया - अध्यक्ष
मोतीलाल झाबक, तिलोकचंद भंसाली
प्रकाशचंद सुराणा, जयकुमार बैद ट्रस्टी

श्री जैन श्वे. चातुर्मास समिति
राजेश मूणोत - मुख्य संरक्षक
सुरेश कांकरिया - अध्यक्ष
संतोष गोलेछा - महासचिव
सुरेश बरडिया - महासचिव
महेन्द्र कोचर - महासचिव
श्यामसुंदर बैद मुथा - कोषाध्यक्ष

श्री जिनकुशल सूरि जैन दादाबाड़ी, एम.जी.रोड़, रायपुर

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, मांडवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408